हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 8, अंकः 35, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 2 अगस्त, 2023 दिन बुधवार | गाजीपुर/वाराणसी

यूपी वाटर टूरिज्म एंड एडवेंचर स्पोर्ट्स पॉलिसी 2023 को मंजूरी

लखनऊ। योगी सरकार ने मंगलवार को लोकभवन में आयोजित कैबिनेट बैठक में उत्तर प्रदेश जल आधारित पर्यटन एवं साहसिक क्रीड़ा नीति (यूपी वाटर टूरिज्म एंड एडवेंचर स्पोर्ट्स पॉलिसी 2023) को मंजूरी दे दी है। यह नीति उत्तर प्रदेश में अंतदेर्शीय समस्त भू-आधारित, वायु आधारित एवं जल मार्गों, बांधों, जलाशयों, झीलों, नदियों, तालाबों एवं राज्य के अधिकार क्षेत्र के अंदर विभिन्न जल निकायों एवं भूमि खंडों पर की जाने वाली सभी साहसिक गतिविधियों पर लागू होगी। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने कैबिनेट से स्वीकृत हुए पर्यटन से संबंधित प्रस्तावों के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में विंध्य व बुंदेलखंड क्षेत्रों में पहाड़ियां, हिमालय के तराई क्षेत्र में लगभग 16,620 वर्ग किमी. के वन क्षेत्र के साथ अनेक सुंदर परिदृश्य, वन विस्तार, बहती नदियों और लुभावने सुंदर झरने, बांध, जलाशय एवं झीलें होने के चलते प्रदेश में जल आधारित पर्यटन एवं साहसिक क्रीड़ा एवं जल क्रीड़ा की काफी संभावनाएं हैं। इसी को देखते हुए प्रदेश में हम इसकी नीति को लेकर आए हैं, जिसे मंत्रिपरिषद से स्वीकृति मिल

गई है। यह नीति राज्य सरकार द्वारा अधिसूचित तिथि से 10 वर्षों के लिए वैध होगी।

एडवेंचर स्पोर्ट्स यूनिट से जोड़े जाएंगे पूर्व सैनिक- इस नीति के अंतर्गत कार्यवाही के लिए नोडल एजेंसी मंडल स्तर पर एडवेंचर स्पोर्ट यूनिट का सृजन करेगी। एडवेंचर स्पोर्ट्स यूनिट में पूर्व सैनिकों को सम्मिलित करने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम, उत्तर प्रदेश पूर्व सैनिक कल्याण निगम के साथ एमओयू हस्ताक्षरित करेगा। नोडल एजेंसी द्वारा अधिसूचित भूखंड क्षेत्रों एवं जल स्त्रोतों पर जल आधारित पर्यटन एवं साहसिक क्रीड़ा के लिए क्षमता का अध्ययन कराया जाएगा तथा प्रत्येक भूखंड क्षेत्रों एवं जल स्त्रोतों पर जल आधारित पर्यटन एवं साहसिक क्रीड़ा के लिए लाइसेंस जारी किए जाएंगे। नीति के जारी होने के 60 दिनों के अंदर नोडल एजेंसी एक विस्तृत एसओपी तैयार करेगी।

पीपीपी मोड पर विकसित होंगे राही पर्यटक आवास गृह- इसके अलावा पर्यटन के क्षेत्र में योगी कैबिनेट ने कुछ और बड़े कदम उठाए हैं। इसके अंतर्गत पर्यटन विभाग के बंद पड़े, घाटे में चल रहे या फिर असंचालित पर्यटक आवास गृहों को पीपीपी मोड पर विकसित व संचालित किए जाने को भी मंजूरी प्रदान की गई। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि प्रदेश में पर्यटन विभाग द्वारा लगभग 86 राही पर्यटक आवास गृह संचालित थे। इनमें से 31 को पीपीपी मोड पर विकसित करने के लिए अनुमोदन प्रदान किया गया था। इनमें से 10 को ई टेंडरिंग के आधार पर बेस प्राइज से भी अच्छी बिड प्राप्त हुई है, जिसे कैबिनेट से मंजूरी मिल गई। इनमें सोनौली महाराजगंज, बटेश्वर आगरा, गोकुलधाम मथुरा, कालिंजर बांदा, राधाकुंज मथुरा, सांडी हरदोई, नीमसार सीतापुर, देवगढ़ ललितपुर एवं भदोही में राही पर्यटक आवास गृह सम्मिलित हैं। इन्हें पहली बार 30 साल के लिए और फिर 30 साल रिन्यूअल और 2 साल कंस्ट्रक्शन के लिए यानी कुल 62 वर्षों के लिए लीज पर दिया जाएगा।

हेरिटेज बिल्डिंग्स का भी होगा कायाकल्प- इसके अलावा प्रदेश की हेरिटेज बिल्डिंग्स को पीपीपी मॉडल पर हेरिटेज टूरिज्म यूनिट्स के रूप में विकसित किया जाएगा। इन्हें हेरिटेज होटल, हेरिटेज म्यूजियम, हेरिटेज रेस्टोरेंट, होम स्टे, थीमैटिक पार्क, मॉल एक्टिविटी सेंटर,वेलनेस सेंटर समेत अन्य टूरिज्म एवं हॉस्पिटैलिटी के रूप में विकसित किए जाने के प्रस्ताव को भी मंजूरी मिल गई। इसमें 9 हेरिटेज बिल्डिंग्स को चिन्हित किया गया है।

हीरो मोटोकॉर्प के कार्यकारी चेयरमैन पवन मुंजाल के ठिकानों पर ईडी का छापा

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मंगलवार को हीरो मोटोकॉर्प के कार्यकारी चेयरमैन पवन मुंजाल और अन्य के खिलाफ छापेमारी की। धन शोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के प्रावधानों के अनुसार दिल्ली और पड़ोसी गुरुग्राम में स्थित परिसरों की तलाशी ली गई। यह जांच राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) की मुंजाल के कथित करीबी एक व्यक्ति के खिलाफ शिकायत से उपजी है, जिसके खिलाफ अघोषित विदेशी मुद्रा रखने के आरोप में जांच की गई थी। आयकर विभाग ने कर चोरी की जांच के सिलसिले में पिछले साल मार्च में मुंजाल और उनकी कंपनी हीरो मोटरकॉर्प पर छापा मारा था। हीरो मोटोकॉर्प 2001 में एक कैलेंडर वर्ष में यूनिट वॉल्यूम बिक्री के मामले में दुनिया की सबसे बड़ी दोपहिया निमार्ता बन गई, और पिछले लगातार 20 वर्षों से इस खिताब को बनाए रखा है। कंपनी की एशिया, अफ्रीका और दक्षिण और मध्य अमेरिका के 40 देशों में उपस्थिति है।

लोगों ने भारत को दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाया : मोदी

पुणे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार को पुणे में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किए गए। इस कार्यक्रम में एनसीपी प्रमुख शरद पवार भी मौजूद रहे, जिनसे पीएम मोदी गर्मजोशी के साथ मिले। इस दौरान पीएम मोदी ने वहां भारी संख्या में आए लोगों को भी संबोधित किया। पीएम मोदी ने कहा कि वह लोकमान्य तिलक के नाम पर पुरस्कार पाकर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि तिलक के जीवन से हम कई चीजें सीख सकते हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि आज देश में ट्रस्ट सरप्लस नीतियों और लोगों की मेहनत दोनों में दिख रहा है, अविश्वास का माहौल रहेगा तो विकास असंभव है। उन्होंने कहा कि पिछले नौ वर्षों में भारत के लोगों ने बड़े बदलाव संभव किए हैं। भारत के लोगों ने देश को दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाया है। आगे उन्होंने लोकमान्य तिलक को याद करते हुए कहा कि वह स्वतंत्र प्रेस के महत्व को समझते थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की दिशा बदल दी। उन्होंने यह भी कहा कि आज अगर किसी विदेशी आक्रमणकारी के नाम पर बनी सड़क का नाम बदल दिया जाता है तो कुछ लोग असहज हो जाते हैं। पीएम मोदी ने कहा कि तिलक की भगवद्गीता में बहुत आस्था थी। अंग्रेजों ने उन्हें मांडले जेल भेज दिया था, लेकिन वहां भी उन्होंने भगवद गीता पर अपना शोध जारी रखा और गीता रहस्य लिखा और लोगों को कर्म की शक्ति से परिचित कराया। उन्होंने कहा कि तिलक ने इस बात पर जोर दिया कि लोग खुद पर विश्वास करें। पीए मोदी ने कहा कि लोकमान्य तिलक में युवा प्रतिभा को पहचानने की अद्वितीय क्षमता थी और वीर सावरकर इसका एक उदाहरण थे। लोकमान्य तिलक को वीर सावरकर की क्षमता का एहसास हुआ और उन्होंने विदेश में उनकी शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब किसी पुरस्कार का नाम लोकमान्य तिलक के नाम पर रखा जाता है, तो जिम्मेदारी बढ़ जाती है। पीएम ने यह भी कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल पर लोकमान्य तिलक के एक भाषण का गहरा प्रभाव पड़ा था। एक किस्से का जिक्र करते हुए पीएम ने कहा कि तिलक लोगों को संबोधित करने के लिए अहमदाबाद गए थे। उन्होंने कहा, 40000 से ज्यादा लोग उन्हें सुनने आए थे।

प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा कि तिलक जी ने आजादी की आवाज को बुलंद करने के लिए पत्रकारिता और अखबार की अहमियत को भी समझा। लोकमान्य तिलक ने परंपराओं को भी पोषित किया था। उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज के साहस और आदर्शों की ऊर्जा से समाज को भरने के लिए शिव जयंती आयोजन शुरू किया। उन्होंने समाज को जोड़ने के लिए सार्वजनिक गणपति महोत्सव की नींव डाली। पीएम मोदी ने कहा कि उन्होंने लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार से मिले एक लाख रुपये नमामि गंगे परियोजना को समर्पित कर दिए हैं।

सपा का बौद्ध मठ, भाजपा का ज्ञानवापी पर बयान दोनों पार्टियों की सोची-समझी राजनीतिक साजिश : मायावती

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो मायावती ने कहा है कि सपा के बौद्ध मठ को तोड़कर बद्रीनाथ मंदिर बनाने संबंधी बयान के बाद अब भाजपा का ज्ञानवापी प्रकरण

पर बयान आया है। यह सपा और भाजपा की सोची समझी राजनीतिक साजिश है जो बेहद गंभीर व चिंतनीय है। मायावती ने पहले सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य के बयान पर भी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त थी। मौर्य ने कहा था कि बद्रीनाथ सहित अनेक मंदिर बौद्ध मठों को तोड़कर बनाए गए हैं। आधुनिक सर्वे अकेले ज्ञानवापी मस्जिद का ही क्यों अन्य प्रमुख मंदिरों का भी होना चाहिए। मायावती ने कहा था कि इस बयान से न तो बौद्ध और न ही मुस्लिम मौर्य के बहकावे में आने वाले हैं। उधर सोमवार को योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ज्ञानवापी को यदि मस्जिद कहेंगे तो विवाद होगा। वहां हमने तो त्रिशूल रखा नहीं। वहां शिवलिंग और देव प्रतिमाएं हैं। ऐसे में मुस्लिम समाज को खुद इसके समाधान की पहल करनी चाहिए। इन दोनों ही बयानों पर बिना नाम लिए मायावती ने निशाना साधा है।

कहा है कि पहले बौद्ध मठ वाला बयान और अब कोर्ट में लंबित ज्ञानवापी प्रकरण को लेकर विवाद को बढ़ाने वाला यह बयान कहीं इन दोनों पार्टियों की सोची-समझी राजनीतिक साजिश का परिणाम तो नहीं। यह गंभीर व चिंतनीय है। ज्ञानवापी मामले में एएसआई से सर्वे कराने के विवाद को लेकर मामला सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर हाईकोर्ट में अभी लंबित है । ऐसे में इस विवाद के संबंध में कोई भी टीका टिप्पणी करना अनावश्यक ही नहीं बल्कि अनुचित है। कोर्ट के फैसले का सम्मान एवं इंतजार करना जरूरी है।

नूंह हिंसा में अब तक 5 की मौत, सीएम मनोहर लाल बोले- ये सुनियोजित साजिश, किसी को नहीं बख्शेंगे

चंडीगढ़। नूंह हिंसा में दो पुलिसकर्मियों समेत कुल 5 लोगों की मौत हो गई है। अभी तक इस मामले में कई एफआईआर दर्ज की गई हैं, कुल 70 लोगों को अभी तक हिरासत में लिया गया है। ये जानकारी मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने मंगलवार को नूंह में उत्पन्न हुई स्थिति पर बैठक के बाद दी। उन्होंने कहा कि नूंह में जो कुछ हुआ, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। घटना का पता लगते ही वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और प्रशासन को तुरंत भेजा गया। सीएम ने कहा कि एक सामाजिक यात्रा, जो हर वर्ष निकलती है, पर कुछ लोगों ने आक्रमण किया, पुलिस को भी निशाना बनाया गया। सुनियोजित और षडयंत्रपूर्ण तरीके से यात्रा को भंग किया गया, जो बड़ी साजिश की तरफ इशारा करती है। पुलिस पर भी आक्रमण किया गया और यात्रा को भंग करने का प्रयास किया गया। सीएम ने कहा कि गाड़ियों को आग लगाई गई और कुछ स्थानों पर आगजनी की घटना भी सामने आई। हालांकि नूंह समेत सभी जगह स्थिति सामान्य है। सीएम ने कहा कि नूंह से बाहर के लोग जो इस घटना में शामिल थे उनकी पहचान की जा रही है। किसी भी उपद्रवी को बख्शा नहीं जाएगा। सीएम ने सभी नागरिकों से अपील की है कि शांति बहाली के लिए आगे आएं।

'21वीं सदी के भारत में धर्म के नाम पर हिंसा नहीं होगी बर्दाश्त', नूंह हिंसा पर कांग्रेस अध्यक्ष खरगे का बयान

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मंगलवार को कहा कि 21वीं सदी के भारत में धर्म के नाम पर हिंसा बर्दाश्त नहीं की जा सकती है। साथ ही, उन्होंने कहा कि अगर लोग ऐसे विभाजनकारी तत्वों के खिलाफ एकजुट नहीं हुए, तो आने वाली पीढ़ियों को इसके परिणाम भुगतने होंगे। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने कहा, "हरियाणा के कुछ हिस्सों में जो हो रहा है या आरपीएफ कांस्टेबल ने जो किया, वह भारत माता के दिल पर गहरा घाव देने जैसा है।" खरगे ने कहा कि ऐसी घटनाएं कमजोर कानून-व्यवस्था की स्थिति और हमारी कमजोर संवैधानिक संस्थाओं पर गंभीर सवाल उठाती हैं। खरगे ने शांति की अपील की और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग की। उन्होंने कहा, "21वीं सदी में भारत में धर्म के नाम पर फैलाई जा रही हिंसा हमारी सभ्यता की नींव और सर्वधर्म समभाव पर आघात है। इसे किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।" कांग्रेस प्रमुख ने कहा, "इन दिनों समाज के ताने-बाने में जो विघटन की प्रवृत्ति दिख रही है, वह सत्ता के लालच में समाज में नफरत फैलाने का नतीजा है।" उन्होंने कहा, "जनता में वैमनस्य का जहर घोलना और उन्हें आपस में लड़ाना हमारे संविधान का मजाक उड़ाने जैसा है।" खरगे ने एक ट्वीट में कहा, "अगर आज हम एकजुट होकर इन विभाजनकारी तत्वों के खिलाफ आवाज नहीं उठाएंगे तो, आने वाली पीढ़ियों को इसके परिणाम भुगतने होंगे।

पत्नी को कुल्हाड़ी से काटा, खुद भी जहर खा कर दी जान

प्रखर मिजार्पुर। थाना कछवां क्षेत्रान्तर्गत ग्राम बाजरडीहा निवासी राजेश पटेल पुत्र देवनाथ पटेल उम्र करीब-40 वर्ष द्वारा अपनी पत्नी नीतू पटेल उम्र करीब-36 वर्ष की कुल्हाड़ी से प्रहार कर हत्या कर दी और स्वयं विषाक्त पदार्थ खा लिया। परिजनों द्वारा राजेश पटेल उपरोक्त को उपचार हेतु हास्पिटल ले जाया गया। जहां से चिकित्सकों द्वारा बेहतर इलाज हेतु वाराणसी रेफर किया गया। उपचार हेतु ले जाते समय रास्ते में मृत्यु हो गयी। सूचना पर पुलिस उच्चाधिकारीगण व थाना कछवां पुलिस बल द्वारा मौके पर पहुंचकर दोनो के शवों को कब्जे में लेकर नियमानुसार अग्रिम वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। अपर पुलिस अधीक्षक नगर द्वारा क्षेत्राधिकार सदर के साथ घटनास्थल का निरीक्षण किया। परिजनों से प्राप्त जानकारी के अनुसार मृत उपरोक्त दम्पत्ति की 02 सन्ताने(पुत्री पलक उम्र करीब-14 वर्ष व पुत्र प्रतीक पटेल उम्र करीब-10 वर्ष) है तथा मृतक राजेश पटेल की मानसिक स्थित ठीक नही थी जिसका इलाज चल रहा था ।

मैनपुरी में दर्दनाक सड़क हादसा, ट्रक की टक्कर से बुलेट सवार तीन युवकों की मौत; चालक फरार

मैनपुरी। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में मंगलवार सुबह नाश्ता खरीदने के लिए गांव दिहुली से कस्बा बरनाहल जा रहे बुलेट सवार तीन युवकों को ट्रक ने टक्कर मार दी। जिससे तीनों की मृत्यु हो गई। मरने वालों में दो युवक फिरोजाबाद के रहने वाले हैं और चचेरे भाई हैं। थाना बरनाहल के गांव दिहुली निवासी मुहम्मद कैफ के ममेरे भाई मुहम्मद आमिर निवासी हाजीपुरा थाना रसूलाबाद फिरोजाबाद और मुहम्मद सैफ निवासी मुहम्मदगंज थाना रसूलाबाद फिरोजाबाद दो दिन पहले मुहम्मद कैफ के घर आए थे। मंगलवार सुबह करीब नौ बजे तीनों युवक नाश्ता खरीदने के लिए कस्बा बरनाहल जा रहे थे। रास्ते में सामने से आए मक्का से लदे ट्रक ने बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में तीनों की मौके पर ही मृत्यु हो गई। बाइक में टक्कर मारने के बाद ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। चालक ट्रक छोड़कर भाग गया। बाइक सवार युवक हेलमेट नहीं लगाए थे। जिसके चलते उनके सिर में गंभीर चोट आई। पुलिस ने ट्रक चालक की तलाश कर रही है।

सीमा ने योगी से भारत में ही रहने देने की लगाई थी गुहार, अब मुख्यमंत्री का सामने आया जवाब

नोएडा। उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा के सचिन और पाकिस्तानी से भारत आई सीमा हैदर की प्रेम कहानी की इन दिनों हर जगह चर्चा हो रही है। सीमा जब से भारत आई है तब से वह वापस पाकिस्तान न भेजने की अपील कर रही है। तमाम वीडियो में भी सीमा बार-बार प्रधानमंत्री मोदी और यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का नाम लेकर भारत में ही रहने देने की गुहार लगा रही है। इसी क्रम में सीमा को भारत की नागरिकता दिलाने के लिए उनके वकील एपी सिंह ने राष्ट्रपति के समक्ष दया याचिका भी दाखिल की है। इस मामले पर सोमवार को समाचार एजेंसी एएनआई के पॉडकास्ट में बातचीत के दौरान सीएम योगी आदित्यनाथ का बयान सामने आया है। उन्होंने चर्चित सीमा-सचिन मामले को लेकर किए गए सवाल के जवाब में कहा, यह दो देशों से जुड़ा मामला है। संबंधित जांच एजेंसियां इस पर गहनता से अपना काम कर रही हैं और उनकी ओर से जो रिपोर्ट मिलेगी उसी के आधार पर आगे विचार होगा। 21 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट के वकील एपी सिंह ने सीमा की ओर से राष्ट्रपति के नाम दया याचिका दी थी। इसमें भी सीमा के सचिन के प्यार व

भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर हिंदू धर्म अपनाने का हवाला दिया गया है। याचिका में उसे पाकिस्तान नहीं भेजने और सचिन की पत्नी बताकर भारतीय नागरिकता की मांग की गई है। एपी सिंह का कहना है कि सीमा का अपने पूर्व पति गुलाम हैदर से तलाक हो चुका है। उसने सचिन मीणा संग प्रेम विवाह किया है। सीमा भारतीय संस्कृति से प्यार करती है। अगर उसे पाकिस्तान भेजा गया तो उसकी वहां उसकी जान को खतरा हो सकता है। अगर कोई शंका है तो एजेंसियों को जांच कर लेनी चाहिए। एजेंसियां चाहें तो पॉलीग्राफ और ब्रेन मैपिंग जैसे टेस्ट भी करा सकती हैं। लोग उसके बच्चों पर शक कर रहे हैं, तो उनका डीएन करा लेना चाहिए। लेकिन पूर्व में अन्य विदेशियों को जिस तरह नागरिकता दी गई है, सीमा को सचिन की पत्नी होने के नाते नागरिकता देनी चाहिए। पाकिस्तान के कराची निवासी सीमा हैदर और रबूपुरा के सचिन मीणा के बीच पबजी गेम खेलने के दौरान जान-पहचान हुई थी। वीडियो कॉलिंग के जरिये नजदीकियां बढ़ने के बाद सीमा 13 मई नेपाल के रास्ते पाकिस्तान से भारत आ गई थी। चार बच्चों संग रबूपुरा पहुंची सीमा आंबेडकर नगर में किराये पर मकान लेकर सचिन के साथ रहने लगी। मामले की भनक पुलिस को लगते ही सीमा चार बच्चों और सचिन के साथ फरार हो गई। पुलिस टीम ने सभी को हरियाणा के बल्लभगढ़ से पकड़ा था।

मुहर्रम के जुलूस के दौरान लगे देश विरोधी नारे, 40 हिरासत में, छावनी में तब्दील हुआ इलाका

जौनपुर। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में मीरगंज के गोधना बाजार में मुहर्रम पर निकाले गए ताजिए में पाकिस्तान जिंदाबाद जैसे देश विरोधी नारे लगाए गए। सोमवार रात इंटरनेट मीडिया पर इसका वीडियो प्रसारित होने के बाद हरकत में आई पुलिस ने तकरीबन 40 लोगों को हिरासत में लिया है। सभी से पूछताछ की जा रही है। प्रशासनिक अधिकारियों संग गांव में कई थानों की फोर्स भी तैनात रही। इससे गोधना बाजार समेत आस-पास का इलाका पुलिस छवनी में तब्दील नजर आया। वीडियो में शामिल अन्य की भी तलाश जारी है।

प्रशासन की ओर से की गई कार्रवाई- बीते शनिवार को मुहर्रम पर जगह-जगह से ताजिया के साथ जुलूस निकाला गया। इसी क्रम में किशुनदासपुर से एक ताजिया निकला, जिसे अगहुआ चौक पर ले जाकर दफन किया गया। इसी दौरान रास्ते में शिव मंदिर के समीप प्राथमिक विद्यालय के पास पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाए गए, जो वीडियो में साफ- साफ सुनाई दे रहा है। इसमे एक युवक माइक पर तरह-तरह के नारे लगवा रहा था। परशुराम सेवा संस्थान

चौकिखुर्द के पदाधिकारियों ने उच्चाधिकारियों को मामले से अवगत कराया। हालांकि इसके पहले ही प्रशासन की ओर से इसका संज्ञान ले लिया गया था। सीओ अतर सिंह ने कहा कि मामले की जांच की जा रही गई। कई को हिरासत में लिया गया है। ऐसा करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

संपादकीय

लोगों में संविधान के प्रति भरोसा पैदा करना बहुत जरूरी

मणिपुर मामले में एक बार फिर सर्वोच्च न्यायालय ने सख्त रुख अपनाते हुए केंद्र और राज्य सरकार से स्थिति रिपोर्ट मांगी है। उसने कुछ कड़े सवाल किए हैं, जिनका जवाब देना राज्य प्रशासन के लिए आसान नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि जो खो गया, वह खो गया, मगर अभी सवाल लोगों में विश्वास बहाली का है। इसके लिए सरकार क्या कर रही है, उसका ब्योरा दे। मामला केवल दो महिलाओं का नहीं है, ऐसी अनेक महिलाओं का वहां उत्पीड़न हुआ है, उनका क्या विवरण है। उन दो महिलाओं की प्राथमिकी दर्ज करने में चौदह दिन क्यों लग गए, जिन्हें निर्वस्त्र करके घुमाने का वीडियो प्रसारित हुआ और प्रशासन तभी हरकत में क्यों आया, जब वह वीडियो प्रसारित हो गया। सरकार की तरफ से पेश वकील ने कहा कि छह हजार प्राथमिकियां दर्ज की गई हैं, तब अदालत ने पूछा कि उनमें से कितनी प्राथमिकियां महिलाओं के साथ हुए अत्याचारों से जुड़ी हैं। इसका कोई स्पष्ट उत्तर सरकार के पास नहीं था। हालांकि दोनों महिलाओं से जुड़े मामले की जांच सीबीआइ ने अपने हाथ में ले ली है, मगर सर्वोच्च न्यायालय मणिपुर में हुई ऐसी तमाम घटनाओं की जांच के पक्ष में है और वह इसके लिए उच्चाधिकार प्राप्त समिति गठित करने पर विचार कर रहा है। केंद्र सरकार ने कहा है कि अगर सर्वोच्च न्यायालय अपनी निगरानी में जांच कराना चाहता है, तो उसे कोई आपत्ति नहीं है। मणिपुर का मामला दरअसल, राज्य सरकार की लापरवाही और फिर केंद्र सरकार की शिथिलता का नतीजा है। अगर सरकारों ने इस मामले पर काबू पाने की कोशिश की होती, तो कोई कारण नहीं कि यह इतने लंबे समय तक चलता रहता और वहां करीब दो सौ लोगों की जान चली जाती, हजारों लोगों को बेघर जिंदगी गुजारने पर मजबूर होना पड़ता। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि यह मत कहिए कि वहां एक समुदाय के खिलाफ हिंसा हुई, संदेश यह जाना चाहिए कि वहां एक भी समुदाय के खिलाफ हिंसा से कड़ाई से निपटा जाएगा। लोगों में संविधान के प्रति भरोसा पैदा करना बहुत जरूरी है। दरअसल, मणिपुर में पिछले करीब तीन महीने से हिंसा और आगजनी की घटनाएं हो रही हैं, मगर इस पर पूरी दुनिया में कठोर निंदा का सिलसिला तब शुरू हुआ, जब दो महिलाओं को निर्वस्त्र करके घुमाने का वीडियो प्रसारित हुआ। इस तरह मणिपुर में चल रही सामुदायिक हिंसा को कई लोगों ने उस वीडियो तक सीमित कर दिया है, जबकि पूरी हिंसा को लेकर ढेर सारे सवाल हैं। अब अनेक तथ्य प्रकट हैं, जिनसे राज्य सरकार की शह और केंद्र सरकार की उदासीनता उजागर होती है। शस्त्रागार से भारी मात्रा में हथियार और कारतूस आदि लूट लिया जाना और सरकारों का इस पर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना कई सवाल खड़े करता है। विपक्षी दलों ने इन तमाम सवालों को लेकर संसद में जवाब मांगा है, उनके प्रतिनिधि मणिपुर हो आए हैं। अब सर्वोच्च न्यायालय ने जो सवाल पूछे हैं और उच्चाधिकार प्राप्त समिति से इन घटनाओं से संबंधित जांचों पर निगरानी रखने की बात कही है, उससे राज्य सरकार की लापरवाहियों, पक्षपात और हिंसा को नजरअंदाज करने के तथ्य और स्पष्ट हो सकेंगे। मणिपुर की घटना ने केंद्र सरकार को भी सांसत में डाल दिया है, पूर्वोत्तर के लोगों का भरोसा डिगा है। वहां के दूसरे राज्यों में भी तनाव की आशंका है। ऐसे में वहां तुरंत शांति बहाली के लिए व्यावहारिक कदम उठाने की उम्मीद की जाती है।

शुरू हुआ गुणगान!

आया समय चुनाव का ।
शुरू हुआ गुणगान ।।
है गिनाते जाना ।
किया क्या महान ।।
जाकर जनदरबार में ।
शीश है नवाना ।।
यही हमारा काम है ।
आप ने भी माना ।।
आगे थोड़ा कर लेंगे ।
और भी सुधार ।।
काम की गुणवत्ता ।
बची कई प्रकार ।।
होगा देना मौका ।
इस पर करें विचार ।।
कर रहे विरोधी पर ।
पहले से प्रहार ।।

–कृष्णोन्द्र राय

क्या न्यूजीलैंड की पूर्व मंत्री के आचरण से कोई सबक सीखेंगे भारत के नेता ?

योगेन्द्र योगी

वैश्विक राजनीति में शुचिता और नैतिकता के उच्च मानदंड स्थापित करते हुए न्यूजीलैंड की न्याय मंत्री किरी एलन ने एक कार को टक्कर मारने के आरोप में अपने पद से इस्तीफा दे दिया। यह हादसा वेलिंग्टन में हुआ। इतना ही नहीं घटना के बाद पुलिस ने मंत्री को हिरासत में ले लिया। स्वच्छता की राजनीति की सिक्के का एक उज्जवल पहलू न्यूजीलैंड में देखने को मिला। इस सिक्के का दूसरा काला पहलू भारत की राजनीति में देखा जा सकता है, जहां जनप्रतिनिधियों पर हत्या, बलात्कार, लूट, डकैती और अपहरण जैसे संगीन मामले होने के बावजूद वह संसद और विधानसभाओं में जमे हुए हैं।

देश में वर्तमान में कुल 4001 विधायक हैं। जिसमें से 1,777 यानी 44 फीसदी नेता हत्या, बलात्कार, अपहरण जैसे अपराधों में लिप्त रहे हैं। वहीं वर्तमान लोकसभा में भी 43 फीसदी सांसद आपराधिक मामलों में घिरे हैं। देशभर में माननीयों के खिलाफ कुल 5097 मुकदमे लंबित हैं। इनमें 40 फीसद पांच साल से ज्यादा पुराने हैं। नौ साल पहले सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि सांसदों-विधायकों के खिलाफ मामलों का निपटारा त्वरित गति से कर एक साल के अंदर निपटाया जाना है। यहां तक कहा गया था कि अगर निचली अदालतें ऐसा करने में असफल रहती हैं तो हाईकोर्ट के समक्ष स्पष्टीकरण देना होगा। इसके लिए विशेष अदालतों का भी प्रावधान हो गया। लेकिन स्थिति यह है कि वर्तमान में पांच हजार से ज्यादा ऐसे केस लंबित हैं और 40 फीसद केस पांच से ज्यादा वक्त से लटके हैं। सुप्रीम कोर्ट ने 10 अगस्त 2021 को सांसदों विधायकों के खिलाफ लंबित आपराधिक मुकदमों की जल्द सुनवाई सुनिश्चित करने के लिए निर्देश दिया था कि इन विशेष अदालतों के जजों का ट्रांसफर सुप्रीम कोर्ट की इजाजत के बगैर नहीं किया जाएगा। इसके बाद से हाई कोर्ट समय-समय पर अर्जी दाखिल करते हैं और प्रशासनिक आवश्यकता या अन्य आधार पर जज को ट्रांसफर करने की इजाजत मांगते हैं। इसे देखते हुए

न्यायमित्र हंसारिया ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल 18वीं रिपोर्ट में 10 अगस्त 2021 के आदेश में संशोधन का सुझाव दिया था। न्यायमित्र की रिपोर्ट में एडीआर की जुलाई 2022 की रिपोर्ट के हवाले से कहा गया है कि लोकसभा के 44 फीसद सांसद और राज्यसभा के 31 फीसद सांसदों के खिलाफ आपराधिक मुकदमे लंबित हैं। अपराधों के मामलों में सांसदों के साथ राज्यों के विधायक भी पीछे नहीं हैं। सुप्रीम कोर्ट की एक शर्त के मुताबिक किसी भी नेता को विधायक बनने से पहले एक स्वघोषित हलफनामा फाइल करना होता है, जिसमें उस पर कितने आपराधिक मामले दर्ज हो चुके हैं इसकी विस्तृत जानकारी दी जाती है। इसी हलफनामे के अनुसार भारत के कुल विधायकों में से 44 प्रतिशत विधायकों के खिलाफ आपराधिक मामले लंबित हैं। देश में वर्तमान में कुल 4001 सिटिंग विधायक हैं। जिसमें से 1,777 यानी 44 फीसदी नेता हत्या, बलात्कार, अपहरण जैसे मामलों के आरोपों का सामना करना रहे हैं। नेताओं पर लगे कुछ आरोप तो मामूली या राजनीतिक हैं, लेकिन ज्यादातर विधायकों के खिलाफ हत्या की कोशिश, सरकारी अधिकारियों पर हमला और चोरी जैसे गंभीर आरोप हैं। सन 2004 में जनप्रतिनिधियों पर आपराधिक मामलों की संख्या 22 फीसदी थी, जोकि अब दोगुनी हो गई है। ये आंकड़े बताते हैं कि राजनीति को अपराध मुक्त बनाने की लाखों कोशिशों के बावजूद ऐसे विधायकों, सांसदों की संख्या बढ़ती ही जा रही है, जिनके खिलाफ आपराधिक मुकदमे चल रहे हैं। आपराधिक मामलों का सामना कर रहे इन 1,777 नेताओं पर कोई छोटे-मोटे आरोप नही हैं। ये ऐसे मामले हैं जिनकी जांच पूरी हो चुकी है और पुलिस कोर्ट में चार्जशीट भी दायर कर चुकी है, लेकिन बावजूद इसके इन मामलों पर अब तक कोई फैसला नहीं सुनाया गया है।

नेताओं के आपराधिक मामले निपटाने के मामले में मध्य प्रदेश के साथ तेलंगाना और आंध्र प्रदेश ऐसे तीन राज्य हैं, जिनमें पिछले 5 सालों में एक भी मामले का निपटारा नहीं किया गया है। विधायकों के ऊपर लगे गंभीर आपराधिक मामलों को देखें तो कुल आपराधिक मामले वाले विधायकों में से 1,136 या 28 प्रतिशत मामले ऐसे हैं जिनमें दोषी पाए जाने पर आरोपी को पांच साल या उससे ज्यादा की जेल की सजा हो सकती है। भाजपा शासित राज्यों में भाजपा के विधायकों पर सर्वाधिक आपराधिक मुकदमें दर्ज हैं। भारतीय जनता पार्टी की भारत के 15 राज्यों में बीजेपी की सरकार है। इनमें बीजेपी बहुमत के साथ 6 राज्यों में और सहयोगी पार्टियों के साथ 9 राज्यों में सरकार चला रही है। इन राज्यों में बीजेपी में कुल 479 विधायक हैं, जिनमें से 337 विधायकों पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। आपराधिक मामले वाले विधायकों की सूची में दूसरा स्थान कांग्रेस का है। कांग्रेस के 334 विधायकों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं जिनमें से 194 विधायकों पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। अन्य पार्टियों में द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके), तृणमूल कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, वाईएसआर कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, भारत राष्ट्र समिति (पूर्व में तेलंगाना राष्ट्र समिति), राष्ट्रीय जनता दल, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) और बीजू जनता शामिल हैं। इन दलों में ऐसे तो विधायकों की संख्या कम है, लेकिन अपराध का प्रतिशत ज्यादा है। आपराधिक मामले वाले ज्यादातर नेताओं को न्यायालयों के फैसलों की चिंता इसलिए भी नहीं है, क्योंकि जब तक कोर्ट दोषी पाए जाने का फैसला नहीं सुनाता है तब तक इन नेताओं को चुनाव लड़ने से कोई नहीं रोक सकता है, यहां तक की जेल में रहते हुए भी चुनाव लड़ा जा सकता है। राजनीतिक दलों के लिए जनप्रतिनिधियों का दागदार होना चिंता का विषय नहीं हैं। इस मुद्दे पर सभी राजनीतिक दल एक जैसे नजर आते हैं। सिर्फ अपनी पार्टी को दूसरी से स्वच्छ दिखाने मात्र को एक-दूसरे पर अपराधों का बढ़ावा देने के आरोप लगाते हैं। जब सवाल राजनीति से अपराध की गंदगी साफ करने का आता है तो सभी एक-दूसरे की संख्या गिनाने लगते हैं। ऐसे में देश में स्वच्छ और समृद्ध लोकतंत्र की कल्पना भी अभी कोसों दूर है।

बिना चर्चा सदन से पारित कानून अवैध?

सनत जैन

पिछले कई सत्रों मे लोकसभा, राज्यसभा एवं विधानसभाओं में बिना चर्चा के बिल पास किए जा रहे हैं। वह कानून बन रहे हैं। केंद्र सरकार और राज्य सरकारें जो कानून बनाती हैं। उसका असर नागरिकों पर पड़ता है। नागरिक अधिकार के तहत मतदाता, मतदान के माध्यम से अपने लिए विधायक और सांसद चुनते हैं। चुनाव के बाद यह माना जाता है, कि निर्वाचित प्रतिनिधि अपने विधानसभा क्षेत्र /लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। निर्वाचित प्रतिनिधि अपने क्षेत्र की जन भावनाओं को समझते हुए, संसद और विधानसभाओं की कार्यवाही अथवा जो कानून बनाए जाते हैं, वह सदन के अंदर अपनी राय रखते हैं,विचार विमर्श होता है। बहुमत के आधार पर संसद और विधानसभाओं में कानून बनेंगे, जो लोगों के हितों का संवर्धन करने वाले होंगे। पिछले कुछ सत्रों से यह देखा जा रहा है कि संसद और विधानसभाओं की बैठकें बहुत कम हो रही हैं। सरकार और विपक्ष के बीच में सदन की कार्यवाही को लेकर मतभेद होता है। सरकार चाहती है, कि उसे सदन के अंदर जवाब ना देना पड़े। सरकार,विपक्ष का सामना करने से बचती है। पिछले कुछ वर्षों में सैकड़ों कानून बिना किसी चर्चा के लोकसभा, राज्यसभा और विधान सभाओं से पारित किए गए हैं। बिना चर्चा के जो कानून पारित किए गए हैं। क्या उन्हें वैध माना जाना चाहिए। इसको लेकर अब बड़े पैमाने पर चर्चाएं शुरू हो गई हैं। केंद्र सरकार द्वारा जो भी विधेयक पिछले वर्षों में पेश किए गए हैं, उनमें लगभग-लगभग 90 फीसदी से ज्यादा विधेयक संसदीय समिति को भी नहीं भेजे गए हैं। विधेयक संसद और विधानसभाओं में सीधे प्रस्तुत किए जा रहे हैं। संसद अथवा विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने के कुछ घंटे पहले बिल एवं अन्य प्रस्ताव सांसदों और विधायकों के बीच में वितरित कर दिए जाते हैं। वह उनका अध्ययन भी नहीं कर पाते हैं। सरकार हो हल्ले और हंगामे के बीच सदन में प्रस्तुत करती है। आसंदी भी बिल पास करने की औपचारिकता को पूर्ण करा देता है। कुछ ही मिनटों में कई कानून पास कर दिए जाते हैं।

संविधान निमार्ताओं ने आसंदी को जो शक्तियां दी हैं। उन शक्तियों का प्रयोग करने में आसंदी विफल साबित होती नजर आ रही है। लोकसभा हो, राज्यसभा हो, अथवा विधानसभा में आसंदी, के पद पर बहुमत के आधार पर सत्तारूढ़ पक्ष की मेहरबानी से पद धारण करते हैं। यही दबाव उनके ऊपर आसंदी पर बैठने के बाद भी बना रहता है। संविधान निमार्ताओं ने यह माना था, कि अध्यक्ष के पद पर निर्वाचित हो जाने के बाद, आसंदी दलगत राजनीति से अलग होगी। निर्वाचित प्रतिनिधियों का सदन होगा। सदन के अध्यक्ष सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों के अधिकारों का संरक्षण करेंगे। चाहे वह सरकार हो, चाहे विपक्ष हो। सभी सांसदों और विधायकों को अपने अपने क्षेत्र की बात कहने का सदन में अधिकार होगा। जो भी नियम, कानून सदन में प्रस्तुत किए जाएंगे। उन पर सभी पक्षों को अपनी बात रखने का अधिकार होगा। सदन के अंदर निर्वाचित प्रतिनिधियों को उनके उठाए गए हर प्रश्न का जवाब सरकार से दिलाने की जिम्मेदारी आसंदी की ही होती है। निर्वाचित प्रतिनिधियों का संवैधानिक निजी अधिकार है, इसे बहुमत के आधार पर बाधित नहीं किया जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में स्थिति बिल्कुल उलट नजर आ रही है। चुनिंदा सांसदों अथवा विधायकों को एक या 2 मिनट में अपनी बात कहने का मौका सदन में दिया जा रहा है। सांसद और विधायक जो प्रश्न लगाते हैं। उनके उत्तर भी सरकार से नहीं मिलते है। तारांकित और अतारांकित प्रश्न लगाने में सचिवालय मनमाने तरीके से प्रश्न चयनित करते हैं। निर्वाचित प्रतिनिधियों के सामान्य अधिकार भी अब आसंदी के रहते हुए सदन में सुरक्षित नजर नहीं पा रहे हैं। पिछले एक दशक में लोकसभा, राज्यसभा एवं विधान सभाओं के सत्र अवधि कम होती जा रही है। पूरा सत्र हंगामे और हो-हल्ले मे खत्म हो जाता है। निर्धारित समय के पहले ही सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हो जाती है। सदन में प्रस्तुत विधेयक, बजट अनुपूरक बजट विधि विधाई से संबंधित संशोधन हो - हल्ले के बीच ना और हां के जरिए मतदान कराकर आसंदी द्वारा स्वीकृत किए जा रहे हैं। सरकार जो चाहती है, वह आसंदी कर देती है। इसे संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप नहीं माना जा सकता है। आसंदी की जिम्मेदारी है,कि वह सदन की कार्रवाई मे सभी पक्षों को अपनी बात रखने का अवसर दे। आसंदी को अधिकार है, कि वह सरकार और विपक्ष के बीच में समन्वय बनाए। गतिरोध को दूर कराने में आसंदी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जब दोनों पक्षों में विवाद शांत ना हो रहा हो। उस समय आसंदी निष्पक्षता के साथ पक्ष और विपक्ष के बीच आम सहमति बनाने का कार्य, हमेशा से करती आई थी। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से आसंदी सरकार के दबाव में काम करती हुई स्पष्ट रूप से नजर आ रही है। इसके कारण सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच लगातार गतिरोध बढ़ रहा है। संसद और विधानसभा की कार्यवाही सुचारू रूप से नियमों के अनुसार संचालित हो। इसका दायित्व आसंदी का होता है। आसंदी निष्पक्ष तरीके से काम करती है, तो वह सरकार और विपक्ष पर दबाव बनाती है। अब उल्टा हो रहा है। आसंदी कहती है, सदन की कार्यवाही चलाने में सरकार की भूमिका महत्वपूर्ण है। सरकार के कामकाज को निपटाने के लिए ही सत्र बुलाया जाता है। आसंदी सरकार को संरक्षण देती है। जिसके कारण आसंदी के साथ, अब विपक्ष के रिश्ते बेहतर नहीं हैं। आसंदी जब सरकार का हिस्सा बन जाती है। इसका मतलब, आसंदी की स्वतंत्रता और निष्पक्षता पर विपक्ष को विश्वास नहीं रहता। जो भी विधेयक सदन में बिना चर्चा पारित किए जा रहे हैं। वह एक तरह से अवैध माने जाने चाहिए। सदन में बिना चर्चा कराए, आसंदी ने बिना चर्चा के जो बिल पारित किए हैं। इसे अवैधानिक ही माना जाना चाहिए। संवैधानिक एवं लोकतांत्रिक व्यवस्था को बनाए रखना है। तो इस दिशा में सभी को सोचना होगा। न्यायालयों को भी यह देखना होगा कि जो कानून बनाए गए हैं वह विधिवत तरीके से पास हुए हैं या नहीं। यदि नहीं हुए हैं,तो उन कानून और नियमों को अवैध मानते हुए, न्यायालयों को अपना निर्णय देना चाहिए। यही समय की मांग है। संवैधानिक संस्थाएं धीरे-धीरे सरकार पर आश्रित होती जा रही हैं। ऐसी स्थिति हमें राजतंत्र और तानाशाही की ओर ले जा रही है। लोकतांत्रिक और संवैधानिक व्यवस्था धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है।

युवा पीढ़ी को सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का एक सार्थक प्रयास

कुमार कृष्णन

भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष का जश्न मनाने के लिए, संगीत नाटक अकादेमी ने देश की असंख्य प्रदर्शन कला शैलियों, परम्पराओं और अभिव्यक्तियों की निरंतरता को प्रदर्शित करने वाली एक उत्सव श्रृंखला की परिकल्पना की है, जिसे अमृत युवा कलोत्सव नाम दिया गया है। अमृत युवा कलोत्सव वस्तुतः देश के विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ मिलकर युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने के लिए अकादेमी द्वारा किया जा रहा एक ठोस प्रयास है। इसका उद्देश्य देश की नवोदित प्रतिभाओं को सामने लाना है।भारत अपने अमृत काल में प्रवेश कर रहा है। यही वह काल है जब देश के भविष्य को उसके गौरवशाली अतीत की नींव पर स्थापित किया जाना है। संगीत नाटक अकादेमी का यह अभिनव प्रयास इसी उद्देश्य से प्रेरित है। अकादमी चाहती है कि युवाओं में प्रदर्शन कलाओं के प्रति रुचि जगे। चेन्नई, इम्फाल, भोपाल, जम्मू, लखनऊ, मुम्बई, उडुपी, दिल्ली, वाराणसी,गंगटोक, अगरतला, रायपुर, पुदुचेरी, बोकारो, चंडीगढ़ और श्रीनगर के बाद संगीत नाटक अकादमी,पटना नगर निगम एवं कला संस्कृति एवं युवा विभाग,बिहार सरकार के संयुक्त तत्वावधान में यह आयोजन किया गया। तीन दिवसीय महोत्सव पारखी, युवा पीढ़ी, इच्छुक दर्शकों, कलाकारों, विद्वानों, कला अभ्यासियों, सांस्कृतिक मंडलियों और संस्थानों के साथ मिलकर प्रदर्शन कलाओं के प्रसार को व्यापक बनाने और इनके एकीकरण का एक अवसर बनकर उभरा।

कलोत्सव के पहले दिन से ही एक से एक बेहतरीन प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कलोत्सव में पहले दिन के पहले सत्र में कला सृजन नाट्य लेखन कार्यशाला का आयोजन किया गया। नाट्य लेखन कार्यशाला का उद्घाटन देश के प्रसिद्ध व नाट्य विशेषज्ञ देवाशीष मजूमदार, निर्देशक परवेज अख्तर,किलकारी के निदेशक ज्योति परिहार,संजय चौधरी, उपसचिव संगीत रीता स्वामी चौधरी व संगीत नाटक अकादमी के जेनेरल काउंसिल मेम्बर आशीष मिश्रा ने किया। नाट्य लेखन कार्यशाला का आयोजन किलकारी में किया गया जहाँ प्रदेश के सैकड़ों नाट्य प्रेमियों ने नाट्य लेखन के गुर सीखें। दूसरे सत्र में कार्यक्रम की शुरूआत नुक्कड़ नाटक से हुई। क्रिएशन पटना बिहार द्वारा प्रेमचंद रंगशाला परिसर में निर्देशक उत्तम कुमार द्वारा निर्देशित लवर्स रिटर्न्स नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति हुई । नुक्कड़ नाटक लवर्स रिटर्न्स ने मौजूद दर्शको को हंसा हंसा के लोट पोट कर दिया।

नुक्कड़ नाटक के बाद सैकड़ों नाट्य प्रेमी व कलाकारों संग संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के पदाधिकारियों द्वारा कला यात्रा जुलूस निकाला गया । कला यात्रा जुलूस निकाल लोगो को नाटक व साहित्य के प्रति जागरूक किया गया। मुख्य कार्यक्रम की शुरूआत प्रेमचंद रंगशाला के प्रेक्षागृह में विधिवत

दीप प्रज्वलित कर की गई। दीप प्रज्वलन कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सीता साहू, संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के उपाध्यक्ष जोराबर सिंह जाधव, संगीत नाटक अकादमी के जेनरल काउंसिल मेम्बर आशीष मिश्रा, रीता स्वामी चौधरी उपसचिव संगीत नाटक अकादमी,संजय चौधरी उपसचिव एसएनए, नंदलाल नायक संगीत नाटक अकादमी अवार्डी व जेनरल काउंसिल मेम्बर द्वारा किया गया। कार्यक्रम की पहली प्रस्तुति बिहार के राजीव रंजन और समूह द्वारा विद्यापति संगीत की प्रस्तुति की गई। विद्यापति की चर्चित रचना– जय जय भैरवी असुर भयावनी ने माहौल को पूरी तरह से भक्तिमय कर दिया। उसके बाद पश्चिम बंगाल के सरोद सिस्टर्स (ट्रोइली दत्ता व मोइसीलि दत्ता) द्वारा सरोद जुलगबन्दी ने खूब वाहवाही लूटी। ओडिसी नृत्य व अभिनय की भी खूब सराहना हुई, उदय कुमार व उनके समूह द्वारा बिहार की कजरी ने तो मानो सभी का दिल ही जीत लिया। बिहार के ही निर्देशक अभिषेक राज द्वारा निर्देशित चर्चित नाटक चरणदास चोर की प्रस्तुति तक दर्शक डंटे रहे। तमाम कार्यक्रम की दर्शकों ने खूब सराहा की।

दूसरे दिन आयोजित कला समीक्षा कार्यशाला को आशीष मिश्रा, विनोद अनुपम, संजय उपाध्याय, विनय कुमार व नंदलाल नायक ने संबोधित किया। समीक्षा कार्यशाला को संबोधित करते हुए देश के प्रसिद्ध निर्देशक संजय उपाध्याय ने कहा नाटक में संगीत,लाइट,कॉस्ट्यूम ये तमाम चीजे एक चरित्र के रूप में आते हैं। डिक्शन,बॉडी लैंग्वेज की समझ बहुत जरूरी है। बेहतर नाटक समीक्षा के लिए अधिक से अधिक नाटक देखें एक नाटक देखना 10 नाटक पढ़ने के बराबर है। उन्होंने आगे कहा आप जीवन मे कुछ भी करें लेकिन कला की समझ होनी बहुत जरूरी है क्योंकि कला की समझ रखने वाले लोग एक बेहतर इंसान बनते हैं। अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नंदलाल नायक ने अपने संघर्ष से सफलता की कहानी बताई और ये भी बताया कि कैसे हम अपनी क्षेत्रीय कलाओं का अध्ययन कर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। कला समीक्षक का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि हम टाइगर तो बचा रहे हैं लेकिन संस्कृति के टाइगर हमारे बुद्धिमान कला समीक्षक विलुप्त होते जा रहे हैं,उन्हें बचाने की खूब जरूरत है। बिहार प्रशासनिक सेवा में वरिष्ठ अधिकारी विनय कुमार ने कहा कला की दुनिया मे पिछले दो दशकों में खूब बदलाव आया है। अधिक से अधिक युवा कला समीक्षक सामने आने से हमारे समाज,कला संस्कृति का विकास होगा। एक कला समीक्षक को उनके द्वारा लिखे जाने वाले विषय की समझदारी होनी चाहिए। हमे अच्छे आर्टवर्क,नाटक व फिल्में देखनी चाहिए और कला की बारीकियों को समझने का प्रयास करनी चाहिए। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता विनोद अनुपम ने कहा एक समीक्षक जब समीक्षा करता है तो कार्यक्रम खत्म होने के बाद इसकी जिम्मेदारी शुरू होती है। कार्यक्रम के अच्छे पहलुओं को पाठकों दर्शको तक पहचान समीक्षक का कार्य होता है। कला समीक्षक को संयम के साथ कहानी से बाहर निकल पड़ता है। उन्हें लाइट,डायलॉग,वस्त्र इत्यादि का भी बखूबी ध्यान रखना होता है। फिल्म व किताब के रिव्यू में तो दोबारा देखने का विकल्प होता है लेकिन नाटक के विषय मे ये बाते लागू नही होती एक ही मौका मिलता है। एक उम्दा समीक्षक को तकनीकी समझ होनी भी आवश्यक है तभी तमाम चीजो को जस्टिफाई कर पायेंगे। संगीत नाटक अकादमी के जेनेरल काउंसलर व वरिष्ठ पत्रकार आशीष मिश्रा ने समीक्षा कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि अगर आप पत्रकार बनते हैं अगर आप कला समीक्षक बनते हैं आर्ट पे लिखते हैं तो आपको अपना नजरिया रोज लिखने का अवसर मिलेगा और ये आपको अंतराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर कर देगा। वर्तमान में डांस पर लिखने वाला इस देश मे कोई नही है जिसे डांस की समझ हो।

डीएम ने किया मनिहारी ब्लाक का औचक निरीक्षण तीन कर्मचारियों का वेतन रोकने का दिया आदेश

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने आज विकास खण्ड मनिहारी का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान साफ-सफाई का अभाव पाया गया जिस पर जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कार्यालय को साफ रखने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारी मनिहारी को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी ग्राम पंचायतों में बनाये गये सामुदायिक शौचालय को बराबर चेक किया जाय तथा यह सुनिश्चित किया जाय कि वे सभी सामुदायिक शौचालय चालू अवस्था में है अथवा नही। इस कार्य के लिए खण्ड प्रेरक को लगाया जाय। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने कहाॅ कि समूह की महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराया जाय ताथ साथ ही साथ उन्हे रोजगार योग्य प्रशिक्षण दिया जाय ताकि वे स्वंय कुछ कर सकें। जिलाधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि प्रतिदिन 10 से 12 बजे तक कार्यालय में बैठकर शिकायतकताओं की समस्याओं को सुनकर समयबद्ध गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें। जिलाधिकारी ने कहा कि मनरेगा के अन्तर्गत कराये गये कार्यो की जॉच कराते हुए कर्मचारियों को यह निर्देशित किया कि वे सुनिश्चित कर लें कि मनरेगा से सम्बन्धित कोई भी गलत भुगतान न कदापि न हो, तथा गलत भुगतान होने पर सम्बन्धित अधिकारी अथवा कर्मचारी के विरूद्ध कार्यवाही की जायेंगी। निरीक्षण के दौरान तीन कर्मचारी रामनिवास चौहान, टी0ए0, दिलिप कुमार कुशवाहा, बी0एम0एम0/ एम0आई0एस0, आदित्य कुमार, बी0एम0एम0/ एम0आई0एस0 के अनुपस्थित पाये जाने पर सम्बन्धित का वेतन रोकने का निर्देश दिया गया। मौके पर मुख्य विकास अधिकरी संतोष कुमार मौर्य, खण्ड विकास अधिकरी मनिहारी एवं अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

डीएम ने औचक निरीक्षण कर नगर की सफाई व्यवस्था का लिया जायजा

चंदौली/ स्टेट मीडिया । नगर की सफाई व्यवस्था का जायजा लेने के लिए जिलाधिकारी श्री निखिल टी.फुंडे ने पीडीडीयू नगर में सुबह 6 बजे औचक निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने आधा दर्जन सड़कों/बाजारों यथा- सर्कस रोड़, जायसवाल रोड़, काली महाल, शहजौर रोड़, रिया हॉस्पिटल, विद्या हॉस्पिटल रोड़, कैलाशपुरी, लोको कालोनी सहित अन्य रास्तों का पैदल भ्रमण कर सफाई व्यवस्था का जायजा लिया। जिलाधिकारी निखिल टी. फुंडे द्वारा कई स्थानों पर गंदगी मिलने पर कड़ी नाराजगी जाहिर करते हुए अधिशासी अधिकारी नगर पालिका को नगर में बेहतर साफ-सफाई व्यवस्था सुनिश्चित कराने हेतु कड़े दिशा निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि तत्काल अभियान चलाकर नगर में एंटी लार्वा,फॉगिंग आदि कराई जाए।इसके साथ ही गंदगी करने/सड़क पर कूड़ा फेंकने वालों के विरुद्ध जुमार्ना करने के लिए भी निर्देशित किया गया। उन्होंने कहा की जिन दुकानदारों द्वारा गंदगी फैलाई जा रही है नाले चोक कर दिए है एवं नालों के ऊपर अतिक्रमण किया गया है उन्हें चिन्हित कर उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जाए। जिलाधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि प्रतिदिन सड़को से कूड़े का समुचित जगहों पर निस्तारण सुनिश्चित कराया जाए। ठेले वालों के आगे डस्टबिन रखवाई जाए। जिलाधिकारी ने नगर पालिका क्षेत्र में गोवंश के घूमते मिलने पर नाराजगी जाहिर करते हुए उन्हें तत्काल गौशाला में संरक्षित करने के निर्देश दिए गए। साथ ही जिलाधिकारी ने स्थानीय लोगों से वार्ता कर उनकी समस्याओं को सुना और उनको वषार्काल में संचारी रोगों से बचाव हेतु विशेष सतर्कता बरतने की अपील करते हुए कहा कि घर में कूलर, टायर, नाली आदि की निरंतर साफ- सफाई व्यवस्था सुनिश्चित रखनी है।बारिस के मौसम में काफी रोगो का प्रसार होता है इससे बचाव का बेहतर उपाय रोगों के प्रति सावधानी व सतर्कता बनाये रखते हुए बचाव के उपाय करना है।

महीनों से पानी की किल्लत को झेल रहे ग्रामीण, पानी न मिलने पर किया प्रदर्शन

सिकंदरपुर। चंदौली। विकास खंड चकिया अंतर्गत ग्राम पंचायत सिकंदरपुर में विगत 25 दिनों से पेयजल की किल्लत से झेल रहे हैं । जहां पीने की पानी को लेकर लोगों बड़ी समस्या बनी हुई है । जल निगम विभाग की माने तो लो वोल्टेज की समस्या से पानी आपूर्ति नहीं हो पा रहा है। लोगों के लगातार प्रदर्शन के बावजूद न तो जल निगम विभाग पर और न ही बिजली विभाग पर कोई असर पड़ रहा है। जहां पानी आपूर्ति बाधित होने के कारण सिकंदरपुर के नागरिकों में आक्रोश भरा हुआ है । लोगों ने बाल्टी लेकर के जल निगम मुदार्बाद के नारे भी लगाए। ग्रामीण ग्राम पंचायत अध्यक्ष और विधायक कैलाश आचार्य से मांग किया कि जल्द से जल्द पानी की समस्या का समाधान किया जाए। बता दें कि विगत कई वर्षों से गर्मी के दिनों में लो वोल्टेज की समस्या से लोगों को दो-चार होना पड़ता है ।बिजली विभाग का कहना है कि पानी नहीं बरसने के कारण और क्षेत्र में ज्यादा पंप चलने लो वेटेज की समस्या खड़ी हुई है । दूसरा कारण ऊपर से वोल्टेज कम आरहा है। कस्बा के लोगों ने बताया कि सिकंदरपुर में पीने के पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है। वहीं हैंड पंपों पर महिलाएं व पुरुष लाइन में लगकर पानी भरते नजर आ रहे हैं। सिकंदरपुर उद्योग व्यापार मंडल अध्यक्ष शीतला प्रसाद केसरी ने बताया कि यह समस्या पिछले कई वर्षों से लगातार चली आ रही है लेकिन

समस्या का समाधान नहीं जा रहा है जल निगम पर तत्काल स्टेबलाइजर की व्यवस्था कर दिया जाए तो समस्या दूर हो सकती है।प्रदर्शन करने वालों में मजीद, मंसूरी, ज्योति विश्वकर्मा, जवाहिर विश्वकर्मा, निरहू विश्वकर्मा, चंद्रशेखर विश्वकर्मा, ब्रह्मा गुप्ता, सलीम, रोहित, सलामू, अजीत सहित अन्य कई लोग मौजूद रहे ।

हंगामों के बीच सप्लाई इंस्पेक्टर ने ग्रामीणों का बयान किया दर्ज

खेतासराय (जौनपुर)। क्षेत्र के सैद गोरारी में कोटेदार पर ग्रामीणों द्वारा राशन न देने, घटतौली एवं अनियमितता बरतने के मामले में जिलाधिकारी के आदेश पर आपूर्ति विभाग की टीम ने गाँव पहुँचकर ग्रामीणों का बयान दर्ज किया । इस दौरान गहमा गहमी के बीच ग्रामीणों ने कोटेदार पर आरोपों की झड़ी लगा दी । ग्राम प्रधान के समझाने बुझाने पर ग्रामीणों शांति हुए । टीम ने अनुसूचित बस्ती और मुस्लिम मुहल्लों से बयान लिया । उक्त गांव में ग्रामीण कोटेदार मो गौहर नाहिद खान पर अनियमितता करने, घटतौली समेत कई गम्भीर आरोप को लेकर मुखर है । ग्रामीणों ने जिलाधिकारी के यहाँ शिकायत की

थी । डीएम ने जिलापूर्ति अधिकारी को जाँच करने का आदेश था । उच्चाधिकरी के निर्देश पर आपूर्ति निरीक्षक शिव शंकर यादव ने अपनी टीम के साथ अनुसूचित बस्ती में ग्रामीणों का बयान कलम बद्ध किया। बयान के दौरान ग्रामीणों ने टीम के सामने ही आरोप प्रत्यारोप शुरू कर दिया । थोड़ी देर हंगामे की स्तिथि रही। प्रधान वसीम के समझाने पर लोग शांति हुए। टीम ने बारी बारी से उनकी शिकायत सुनी। इस बाबत सप्लाई इंस्पेक्टर शिव शंकर यादव ने बताया कि ग्रामीणों का बयान दर्ज किया गया है। रिपोर्ट उच्चाधिकारियों की भेजा जाएगा। दोषी मिलने पर बख़्शा नही जाएगा।

सेवानिवृत्त एसएलए मनिकचंद को दी गई भावभीनी विदाई

चंदौली। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र चकिया के सभागार में परिसर में सोमवार को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के प्रभारी डा विकास कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में विदाई समारोह का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में सेवानिवृत्त हुए एसएलए मनीकचंद जी को स्वास्थ्य कमीर्यों द्वारा उपहार देते हुए माल्यार्पण कर भावभीनी विदाई दी गयी। वहीं प्रभारी डा विकास कुमार सिन्हा ने कहा कि मनीकचंद जी एसएलए के पद पर काम करते हुए विभाग की अच्छी सेवा की । ये अपने कार्यकाल में विभाग का कोई कार्य करने से हिचकिचाते नहीं थे। अवकाश ग्रहण कर कर्मियों के बीच अपनी पहचान छोड़ गए। इसलिए सभी कर्मी उनके द्वारा किए गए कार्यो का अनुसरण करते हुए विभाग को ऊंचा उठाने का काम करेगें । हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि मनिकचंद जी का शेष जीवन सुखमय बीते। बता दें कि अक्टूबर 1988 से जुलाई 2023 तक सेवा दिया । पहली नियुक्ति वाराणसी जनपद में रामपुर कला पर

प्रयोगशाला सहायक पद 1994 तक रहे । इसके बाद स्थानांतरण मऊ जनपद में गोहना मुहम्दाबाद जहा 1994 से 1996 तक रहे । इसके रतनपुरा ब्लाक के नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हलधर पुर 1996 से 2019 तक रहे । इसके बाद चंदौली जनपद क्षेत्र अंतर्गत ब्लाक चकिया के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र चकिया पर 2019 से जुलाई 2023 तक सेवा दिया । वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक (एसएलए) मनिकचंद जी लगभग 35 साल 8 माह तक सेवा दिया । जो जुलाई 2023 को सेवानिवृत्त हो गये । जिन्हें स्वास्थ्य कमीर्यों ने उनकी लम्बी आयु और सुखमय जीवन के लिए कामना किये । मनिकचंद जी अपने गृह जनपद गाजीपुर के नद्दू डीह गांव के निवासी है । जिन्होंने में अपने जनपद में कार्य न करके अन्य जनपद में जिम्मेदारी, इमानदारी के साथ कार्य किये ।जो बधाई के पात्र है । इस दौरान डा अमृता सिंह राठौर, डा जयराम, डा विनोद गुप्ता, डा एसएन सिंह,डा वंदना सिंह, फर्माशिष्ट आंनद मिश्रा, ओमप्रकाश तिवारी, एआरओ विनोद कुमार, बीपीएम अखिलेश यादव, बीसीपीएम बृजेश कुमार, बीएएम विजय कुमार, एलटी अजीत कुमार, विजय कुमार, संदीप कुमार, गोविंद, एलए मिथलेश कुमार सिंह, एलटी अमित कुमार , आपरेटर संजय कुमार, सरवन कुमार, राघवेंद्र तिवारी, स्टाफ नर्स विभा सिंह, एएनएम सुस्मिता सिंह सहित कई स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहे ।

किशोरी को बरामद किया, अपहरणकर्ता गिरफ्तार

आजमगढ़। दीदारगंज थाना क्षेत्र की रहने वाली किशोरी को अपहत करने के मामले में पुलिस ने सक्रियता बढ़ा दिया है। अपहता को बरामद करने के साथ ही जहां अपहरणकर्ता गिरफ्तार कर लिया गया है तो वहीं किशोरी के अपहरण में सहयोगी व शरणदाता रहे माहुल चेयरमैन की तलाश में पुलिस की दो टीमें दबिश दे रही हैं। अहरौला थाने में 23 जुलाई को दीदारगंज थाना क्षेत्र की रहने वाली एक महिला ने तहरीर दी थी कि उसकी 14 वषीर्या लड़की को फूलपुर कोतवाली क्षेत्र के लाहीडीह गांव निवासी अब्दुल रहमान बहला-फुसला कर भगा ले गया। जिसे नगर पंचायत माहुल के चेयरमैन लियाकत अली ने अपने घर पर शरण दी है। जानकारी होने पर वादी मुकदमा जब अपने पति के साथ चेयरमैन के घर पहुंची तो चेयरमैन ने दरवाजा नहीं खोला और धमकाया। तहरीर पर पुलिस ने अपरहण व एससी-एसटी की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया।

तीसरी बार सपा विधान सभा अध्यक्ष बने सुभाष

चहनियां। चंदौली। समाजवादी पार्टी हाईकमान के निर्देश पर तीसरी बार सुभाष यादव को बिधान सभा अध्यक्ष बनाया गया है ।जिसे लेकर लोगो मे हर्ष ब्याप्त है । हसनपुर के रहने वाले सुभाष यादव लंबे समय से समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता है । सन 2017-18 में इन्हें पहली बार विधानसभा अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी । संगठन का इन्होंने विस्तार किया । पार्टी के हर कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया । दूसरी बार पुनः इन्हें सन 2020 में जिम्मेदारी सौंपते हुए विधानसभा अध्यक्ष बनाया गया । 2023 में पार्टी ने फिर तीसरी बार अध्यक्ष का कार्यभार सौंप दिया है । विधायक प्रभु नारायण सिंह यादव,जिलाध्यक्ष सत्य नारायण राजभर सहित जिले के वरिष्ठ नेताओं ने इन्हें बधाई व आशीर्वाद दिया ।तीसरी बार अध्यक्ष बनने पर कहा कि जिस तरह से पहले पार्टी की सेवा करते आ रहा हूं ।वैसे ही आगे ईमानदारी से करूंगा । बधाई देने वालो में पूर्व जिला पंचायत सदस्य अनिल यादव, धनंजय यादव,छात्र सभा अध्यक्ष बाबू लाल यादव, शिवानन्द शर्मा,सोनू तिवारी, धर्मेंद्र यादव, अनिल सिंह,राकेश यादव, प्रधान संघ अध्यक्ष राजेश यादव, रामनरेश, रवि पाल,सन्तोष यादव, फजल खान आदि का ताता लगा रही ।

मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम में व्यापक जनसहभागिता सुनिश्चित की जाए : जिलाधिकारी

चंदौली। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 75 सप्ताह तक चलने वाले आजादी के अमृत महोत्सव योजना के समापन कार्यक्रम के दृष्टिगत प्रदेश में मेरी माटी ,मेरा देश कार्यक्रम का आयोजन जाना है। जनपद में इस आयोजन को सफल बनाने के लिए जिलाधिकारी निखिल टी. फुंडे द्वारा वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक की गई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने कार्यक्रम की रूपरेखा पर विस्तृत चर्चा करते हुए इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी संबंधित अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। उन्होंने मुख्य विकास अधिकारी को पूरे कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु अधिकारियों की लिखित रूप से ड्यूटी लगाने के लिए निर्देशित किया। जिलाधिकारी ने डीपीआरओ को निर्देशित करते हुए कहा कि इस पूरे कार्यक्रम में ग्राम पंचायत की

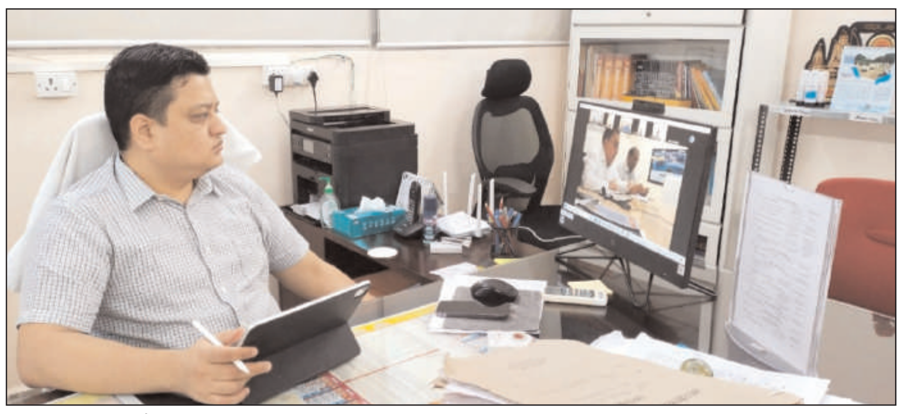

प्रमुख भूमिका है इसलिए सभी सचिव, लेखपाल, ग्राम विकास अधिकारी एवं आशा आदि की मीटिंग अवश्य करा ली जाए और सब को इस कार्यक्रम के बारे में अच्छे से ब्रीफ कर दिया जाए।जिलाधिकारी ने ग्राम प्रधानों को भी इस कार्यक्रम में जोड़ने का निर्देश दिया।

जिलाधिकारी निखिल टी फुंडे ने डीसी मनरेगा को निर्देशित करते हुए कहा कि अमृत वाटिका एवं शिलाफलकम के लिए स्थल का चयन यथाशीघ्र कर लिया जाए।इसमें किसी भी स्तर पर शिथिलता न बरती जाए। उन्होंने इस संबंध में प्रतिदिन रिपोर्ट लेने का निर्देश डीसी मनरेगा को दिया। मुख्य विकास अधिकारी एस०एन० श्रीवास्तव ने बताया कि ग्राम पंचायत स्तर पर होने वाले कार्यक्रम अमृत सरोवर के स्थल पर किए जाएंगे,इसलिए अमृत सरोवर चिन्हित कर लिए जाएं। जहां पर अमृत सरोवर नहीं हैं वहां पर अन्य प्रमुख स्थल का चयन कर लिया जाए। मुख्य विकास अधिकारी ने कल 12:00 बजे सभी ग्राम विकास अधिकारी, सचिव, रोजगार सेवक आदि की बैठक बुलाने का निर्देश दिया। जिला पंचायतराज अधिकारी ने कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में विस्तार बताते हुए कहा कि जनपद में जनपद में ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यक्रमों का आयोजन तीन चरणों में किया जाएगा इसमें ग्राम स्तरीय कार्यक्रम,पंचायत स्तरीय कार्यक्रम एवं ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम होंगे। इनमें चयनित दो श्रेष्ठ प्रतिभागियों द्वारा क्रमशः प्रदेश एवं देश की राजधानी में समापन समारोह कार्यक्रम में प्रतिभाग किया जाएगा। प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम 23 से 24 अगस्त के मध्य राजधानी लखनऊ में एवं मुख्य कार्यक्रम 27 से 29 अगस्त के मध्य नई दिल्ली में किया जाएगा।

जिला पंचायतराज अधिकारी ने बताया कि 9 अगस्त 2023 को अमृत सरोवर या अन्य चिन्हित स्थल पर बैठकों का आयोजन किया जाएगा इसमें ग्राम प्रधान,ग्राम पंचायत सदस्य,ग्राम विकास अधिकारी तथा अन्य समस्त स्थानीय जन उपस्थित रहेंगे। बैठक में भाग लेने वाले सभी लोगों के द्वारा गांव के खेत,बगीचे एवं अन्य स्थानों से मिट्टी को लाकर कलशों मे संगृहीत किया जाएगा।ग्राम पंचायतों से मिट्टी कलश अमृत यात्रा का शुभारंभ करते हुए ब्लॉक स्तर पर 16 से 20 अगस्त, 2023 तक पहुंचाए जायेंगे। एकत्रित कलश में चयनित एक एक कलश राजधानी लखनऊ तथा देश की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में पहुंचाए जायेंगे। इस कार्यक्रम की श्रृंखला में प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक स्मारक (शिलफलकम) का निर्माण कराया जाएगा।इसके साथ ही सभी ग्राम पंचायतों में एक स्थान चिन्हित कर वहां 75 पौधों का रोपण कर अमृत वाटिका विकसित की जाएगी।मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम शहरी क्षेत्रों में भी आयोजित किए जाएंगे।

संक्षिप्त खबरें

भाजपा काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष बनाए जाने के पर दिलीप सिंह पटेल का केराकत में जोरदार स्वागत

प्रखर जलालपुर जौनपुर। जनपद जौनपुर में भाजपा काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष बनाए जाने के उपरांत प्रथम आगमन पर दिलीप सिंह पटेल का केराकत विधानसभा भाजपा के पूर्व विधायक दिनेश चौधरी ने अपने सैकड़ों समर्थकों,कार्यकताओं के साथ रेहटी गांव स्थित पेट्रोल पम्प पर जोरदार स्वागत,अभिनंदन किया। उक्त अवसर पर मछलीशहर भाजपा के अध्यक्ष रामविलास पाल,थानागद्दी मंडल के अध्यक्ष रामसमुझ निषाद,किसान मोर्चा मछलीशहर के जिला महामंत्री सुदर्शन सिंह,जिला उपाध्यक्ष बृजेश सिंह,लाल प्रताप सिंह,अशोक सिंह,राजेश सोनकर आर.डी. चौधरी,गौतम मिश्र गोलू ,विशाल सिंह,फरहान खान,शक्तिमान यादव सहित सैकड़ों संख्या में उत्साही कार्यकर्ता एवं पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

डीएम ने किया मत्स्य संपदा योजना अंतर्गत जिलास्तरीय लाभार्थी चयन कमेटी की बैठक

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री मत्स्य संपदा योजनान्तर्गत लाभार्थी चयन हेतु जिलास्तरीय कमेटी की बैठक जिलाधिकारी आर्यका अखौरी की अध्यक्षता में सोमवार देर सायं रायफल क्लब सभागार में सम्पन्न हुआ। बैठक मे मुख्य विकास अधिकारी, परियोजना निदेशक एवं कमेटी के अन्य सदस्यगण उपस्थित थे। मुख्य कार्यकारी अधिकारी मत्स्य द्वारा बैठक में विभागीय पोर्टल पर प्राप्त आवेदनों के चयन की सूची कमेटी के समग्र प्रस्तुत की गयी। मुख्यमंत्री मत्स्य संपदा योजना में लाभार्थी के चयन पर सहमति प्रदान की गयी एंव प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनान्तर्गत प्राप्त आवेदनो को कमेटी के सभी सदस्यों द्वारा सत्यापन कर अनुमोदन हेतु प्रस्तुत करने के निर्देश जिलाधिकारी द्वारा दिये गये।

संकुल स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी आज

प्रखर पिंडरा वाराणसी। गजोखर स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में बुधवार को एक दिवसीय संकुल स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। जिसमे 12 नवोदय विद्यालय के छात्र छात्राये भाग लेंगी। विद्यालय के प्राचार्य नागेश मिश्रा ने बताया कि गणित, विज्ञान व कम्प्यूटर व सामाजिक विज्ञान के नवाचार पर आधारित मॉडलों का प्रदर्शन करेंगे। इसमें चयनित छात्रो को क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

समाजसेवी एवम सपा नेता लक्ष्मीकांत मिश्रा उर्फ किसमिस गुरु के नेतृत्व में कांवरियों श्रद्धालुओं को फलाहार में मालपुआ का वितरण किया गया

प्रखर वाराणसी। समाजसेवी एवम सपा नेता लक्ष्मीकांत मिश्रा उर्फ किसमिस गुरु के नेतृत्व में सावन अधिकमास में चौथे सोमवार को कांवरियों श्रद्धालुओं को फलाहार में मालपुआ का वितरण किया । लक्ष्मीकांत मिश्रा उर्फ किसमिस गुरु ने बताया मेरे तीनों बच्चे आदेश , आदित्य और अदिति मिश्रा हर साल अपने गुल्लक के जमा पैसों से जनसेवा के भाव से श्रद्धालुओं में फलाहार बांटते रहते हैं । इसी क्रम में आज हजारों कांवरियों और श्रद्धालुओं में मालपुआ का वितरण किया जा रहा है । यह सेवा कार्य निरंतर बढ़ता जायेगा और काशी के प्रबुद्ध और समाजसेवियों को भी इससे जोड़ा जाएगा। प्रसाद वितरण में प्रमुख रूप से लक्ष्मी कांत मिश्रा किसमिस गुरु, वरुण सिंह,राहुल यादव,बलवंत सिंह,कमल तिवारी,बबलू तिवारी,प्रमोद शुक्ला,बल्ली गुप्ता,मुजीब भाई, बिरजेश कपूर,खुर्सिद भाई ,गोपाल यादव,सानु मालवीय,रवि अरोड़ा ,अनुप खन्ना,राजु मेघनानी,संजय दुबे,बबलु यादव,गोविंद यादव,बोदे यादव,संजय यादव,मोदसिर भाई रहे।

एक रुपए का छोटा सिक्का न लेना आरबीआई के निर्देश का उलंघन : शाखा प्रबंधक

चकिया। चंदौली। यूनियन बैंक आफ इंडिया महम्मदाबाद शाखा के मैनेजर प्रशांत कुमार ने मीडिया से वार्ता के दौरान एक रुपए के छोटे सिक्के के लेन देन के बारे में लोगों के बीच फैली भ्रांतियों के संबंध में बताया कि एक रुपए के छोटे सिक्के चलन में है। इस सिक्के का ढलाई स्वयं RBI कराती है ।जो की सभी बैंको में है । छोटे सिक्के के संबंध फैली भ्रांतियां गलत है। उन्होंने ने यह भी बताया कि बैंको में आने वाले खाताधारक व जन प्रतिनिधि से अपील करता हूं कि आप लोग जिम्मेदार व्यक्ति है आपलोग अपने स्तर से इन फैली भ्रांतियों के संबंध में लोगो में जागरूकता लाने में फ्ड्क का सहयोग करें । जिससे लोगो में फैली भ्रांतियों को दूर किया जा सके ।

राजस्व गांव मरकनिया आज भी बिजली से वंचित

चहनियां। चंदौली। क्षेत्र के मरकनिया गांव में आज भी लोग बिजलीं से वंचित है । जनप्रतिनिधि केवल आज तक वादा करके कुछ नही किये । जिसे लेकर लोगो मे आक्रोश ब्याप्त है । ग्राम पंचायत पक्खोपुर के राजस्व गांव मरकनिया में आजतक बिजलीं की सुविधा ही नही पहुँची है । हर बार चुनाव में जनप्रतिनिधि आकर बिजलीं का कनेक्शन देने की बात करते है किंतु चुनाव बीतने के बाद सब भूल जाते है । गांव के गोबिंद शर्मा,रामकवल, प्रहलाद, घूरे अली ,राजेन्द्र प्रजापति,रंजीत कुमार,धन्नो देवी,मालती देवी,चंद्रदेव आदि का कहना है कि आज जमाना हाइटेक हो गया है । लोगो के घरों में रोशनी है और हमारा गांव आज भी अंधेरे में जी रहे है । बगल के गांवो में रोशनी देख हमलोग भी तरस जाते है । इन 75 वर्षों में कितने विधायक ,सांसद आये गये सभी ने केवल वादा किया । कोई भी बिजलीं सप्लाई नही दिलवा पाये । कई बार अधिकारीयो से भी गुहार लगाया गया किन्तु आजतक कोई पहल नही हुआ । इस संदर्भ में जेई रितेश कुमार का कहना है कि मामला संज्ञान में नही है ।

Entertainment News

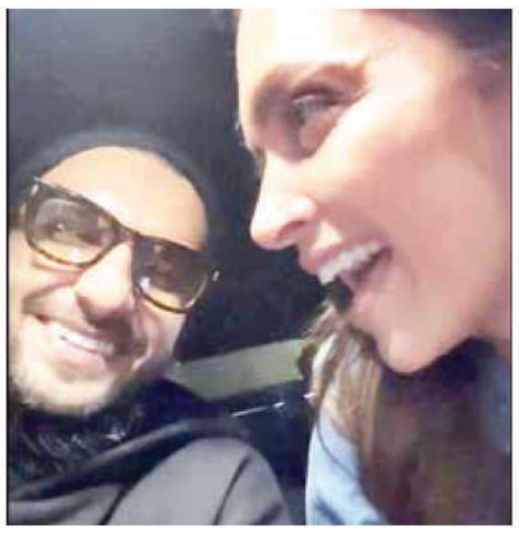

दीपिका संग रणवीर ने किया झुमका गिरा पर मजेदार डांस

बॉलीवुड फिल्मों के जाने माने मशहूर अभिनेता रणवीर सिंह इनदिनों अपनी हालिया रिलीज फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी की रिलीज को लेकर जमकर खबरों में बने हुए हैं। इस फिल्म में उनके साथ आलिया भट्ट लीड रोल में हैं। इस फिल्म की कहानी ही नहीं, बल्कि इसके गाने भी बहुत शानदार हैं, मगर हर किसी की जुबान पर झुमका गिरा चढ़ा हुआ है। इस गाने पर खूब रील्स भी बन रहे हैं। ऐसे में अब रणवीर की रियल लाइफ रानी दीपिका पादुकोण पर भी रॉकी और रानी का खुमार देखने के मिल रहा है। दीपिका पादुकोण एवं रणवीर सिंह का एक वीडियो वायरल हो रहा है। इस वीडियो को रणवीर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर साझा किया है। जिसमें कपल अपनी कार में बैठे हुए नजर आ रहे हैं। वहीं,फिल्म की सक्सेस को दोनों ने इसके गाने पर डांस कर सेलिब्रेट किया।

गोल्डन पत्तियों वाली ड्रेस में खूब चमकी अनन्या पांडे

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनन्या पांडे ने हाल ही में एक फैशन शो में अपने हुस्न का दीदार कराया है। अनन्या पांडे ने गोल्डन कलर की सेक्सी हाई स्लिट स्कर्ट पहन रैंप पर वॉक करते हुए अपनी अदाओं से लोगों को दीवाना बना लिया है। अनन्या पांडे ने एक फैशन शो के दौरान गोल्डन कलर की बोल्ड आउटफिट में स्टाइल का जलवा दिखा दिया है। अनन्या पांडे का स्टाइल और लुक देख हर कोई एक्ट्रेस की तारीफों में पुल बांधता नजर आ रहा है।

सितारों सी चमकी शोभिता

शोभिता धुलिपाला का नाम इन दिनों साउथ से निकलकर बॉलीवुड में भी खूब चमक रहा है। हाल ही में वो द नाइट मैनेजर में नजर आई थीं और अब मेड इन हेवन 2 को लेकर चर्चा में हैं। लेकिन इस बीच एक्ट्रेस नजर आई हैं दिल्ली में हुए फैशन शो में जहां उन्होंने रैंप वॉक के दौरान ऐसा जादू चलाया कि हर कोई शोभिता को देख मंत्रमुग्ध हो गया होगा। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रही है जिसमें शोभिता धुलिपाला एक्टर ईशान खट्टर के साथ रैंप वॉक पर नजर आ रही हैं। बेहद ही प्रोफेशनल अंदाज में रैंप वॉक करतीं शोभिता ने वाकई कहर ही ढा दिया। सिल्वर कलर के झिलमिलाते आउटफिट में शोभिता मानो कयामत लगीं। वहीं ईशान इस दौरान डिजाइनर ब्लैक आउटफिट में दिखे। खासतौर से शोभिता का आउटफिट का बोल्ड और ग्लैमरस था। वहीं काफी समय से इस वेब सीरीज का इंतजार हो रहा था लेकिन अब फाइनली इसके दूसरे सीजन की रिलीज डेट को अनाउंस कर दिया गया है।

Bollywood Update

सिद्धार्थ संग शादी से पहले इन एक्टर्स के साथ जुड़ा कियारा आडवाणी का नाम

बॉलीवुड एक्ट्रेस कियारा आडवाणी ने इंडस्ट्री में खूब नाम कमाया है। कियारा आडवाणी ने कई हिट फिल्मों में काम किया है और उनकी एक्टिंग को खूब पसंद किया गया है। कियारा आडवाणी 31 साल की हो गई है और 31 जुलाई को अपना जन्मदिन मना रही हैं। कियारा आडवाणी के बर्थडे पर उनके तमाम चाहने वाले विश कर रहे हैं। कियारा आडवाणी के जन्मदिन के मौके पर जानते हैं कि सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ शादी करने से उनका किन-किन सेलिब्रिटीज के साथ नाम जुड़ा है। फिलहाल, कियारा आडवाणी अपनी शादीशुदा जिंदगी को एंजॉय कर रही हैं।

कियारा और मोहित मारवाह

कियारा आडवाणी का नाम एक्टर मोहित मारवाह के साथ नाम जुड़ा था। खबरों में बताया गया कि दोनों ने एक दूसरे को 2 साल तक डेट किया था। कियारा आडवाणी और मोहत मारवाह ने फिल्म फगली में काम किया था।

कियारा और मुस्तफा बर्मावाला

कियारा आडवाणी और एक्टर मुस्तफा बर्मावाला ने फिल्म मशीन में एक साथ काम किया था। इसके बाद साथ दोनों अफेयर को खबरें आने लगी थीं। अफेयर की खबरों के 1 साल बाद दोनों अलग हो गए।

कियारा और सिद्धार्थ मल्होत्रा

कियारा आडवाणी और सिद्धार्थ मल्होत्रा ने फरवरी, 2023 में शादी कर ली थी। कियारा आडवाणी और सिद्धार्थ मल्होत्रा की शादी से उनके फैंस काफी खुश नजर आए। दोनों अपनी शादीशुदा जिंदगी को एंजॉय कर रहे हैं। कियारा और सिद्धार्थ के फोटोज और वीडियो अक्सर सामने आते रहते हैं। आपको बता दें कि कियारा आडवाणी ने साल 2014 में अपने फिल्म फगली से अपने करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद कियारा आडवाणी अपने करियर में कई फिल्मों में नजर आ चुकी हैं।

कियारा और वरुण धवन

कियारा आडवाणी और वरुण धवन के अफेयर की खबरों ने लोगों का ध्यान खींचा था। हालांकि, कियारा आडवाणी और वरुण धवन ने अफेयर की खबरों का खंडन कर दिया था।

हार्ट अटैक के बाद हैल्थ पर सुष्मिता सेन ने कहा-मैं लक्की हूं

सुष्मिता सेन के हार्ट अटैक की खबर ने सभी को चौंका कर रख दिया था। सुष्मिता मिस युनिवर्स रही हैं और उनकी फिटनेस भी कमाल की है। ऐसे में एक्ट्रेस को इस तरह से हार्ट अटैक आना सभी के लिए हैरान कर देने वाली बात थी। लेकिन सुष्मिता ने भी हिम्मत के साथ इस बुरे वक्त को बिताया और अब वे पूरी तरह से स्वस्थ हो चुकी हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपनी फिटनेस और हेल्थ के बारे में खुलकर बातें की। उन्होंने ये भी बताया कि हार्ट अटैक के बाद जीवन को लेकर उनका नजरिया अब कैसा है। सुष्मिता सेन ने कहा कि वे बच गईं क्योंकि वे लकी थीं। सेहत के भय ने उन्हें जीने का महत्व सिखा दिया है और अब उन्हें पहले से ज्यादा जीवन के महत्व का एहसास है। एक्ट्रेस के मुताबिक ये एक दौर था जो गुजर गया। एक्ट्रेस ने कहा कि अब उन्हें जीवन को लेकर कोई भय नहीं रह गया है। अब उन्होंने जीवन में और बेहतर ढंग से रहने का वादा कर लिया है और वे सकारात्मक नजरिए से जीवन को देख रही हैं। अब वे जीवन को लेकर पहले से ज्यादा सतर्क हैं और इसका सम्मान करती हैं। बता दें कि जब सुष्मिता सेन अपनी सक्सेसफुल वेब सीरीज आर्या 3 की शूटिंग कर रही थीं उस दौरान एक्ट्रेस को हार्ट अटैक आया था। इसके बाद उन्हें हॉस्पिटलाइज होना पड़ गया था। अब एक्ट्रेस पूरी तरह से ठीक हैं और अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट्स की शूटिंग कर रही हैं। हाल ही में एक्ट्रेस की अपकमिंग वेब सीरीज ताली का टीजर जारी किया। इस सीरीज में वे ट्रान्सजेंडर गौरव सावंत का रोल प्ले करती नजर आएंगी।

एक्ट्रेस से पहले सॉफ्टवेयर इंजीनियर थीं तापसी पन्नू

बॉलीवुड एक्ट्रेस तापसी पन्नू 1 अगस्त को अपना 33वां जन्मदिन मना रही हैं। उन्होंने पिंक, मुल्क, बदला, मनमर्जियां, मिशन मंगल, सांड की आंख, थप्पड़ और नाम शबाना जैसी फिल्मों में काम किया है। अपनी दमदार एक्टिंग से उन्होंने दर्शकों का दिल जीत लिया है। तापसी ने हिंदी के अलावा तेलुगू और तमिल फिल्मों में भी काम किया है। उन्होंने साल 2010 में तेलुगू मूवी से एक्टिंग की शुरुआत की थी। बता दें कि एक्टिंग से पहले तापसी बतौर सॉफ्टवेयर इंजीनियर काम कर चुकी हैं। वो मॉडलिंग भी करती थीं। वो कई विज्ञापनों में भी नजर आ चुकी हैं। एक्टिंग के साथ-साथ अपनी फिटनेस के लिए भी जानी जाती हैं। इसके लिए वो कड़ी मेहनत करती हैं। जिम में एक्सरसाइज करने के साथ तापसी डाइट भी फॉलो करती हैं। तापसी ने एक इंटरव्यू में खुलासा किया था कि वो फिटनेस को मेंटेन रखने के लिए जमकर सोती हैं। ये उनकी जीवनशैली का अहम हिस्सा है।

शादी के चार साल बाद तीसरी बीवी से तलाक ले रहे राहुल महाजन

बिग बॉस से मशहूर हुए राहुल महाजन कई बार अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में आ चुके हैं। एक बार फिर राहुल की पर्सनल लाइफ हेडलाइंस में छा गई है। एक्टर ने तीसरी बीवी से तलाक लेने का फैसला किया है। राहुल महाजन ने साल 2018 में कजाकिस्तान की रहने वाली मॉडल नताल्या इलीना से शादी रचाई थी। शादी के बाद राहुल कई बार नताल्या के लिए अपने प्यार का इजहार करते दिखाई दिये। हालांकि, अब उनके बीच का रिश्ता टूटने की कगार पर आ गया है। लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, राहुल और नताल्या ने तलाक की अर्जी दाखिल कर ली है।

एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक राहुल महाजन और नताल्या ने पिछले साल तलाक की अर्जी दायर की थी। तलाक से जुड़े पेपरवर्क उसी समय हो गए थे, लेकिन अभी तलाक हुआ है या नहीं। इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। 2022 में राहुल और नताल्या ने अपने रास्ते जुदा कर लिये थे। रिपोर्ट्स के मुताबिक, राहुल महाजन और नताल्या के तलाक लेने की वजह उनके बीच कम्पैटिबिलिटी इश्यू होना है। कहा जा रहा है कि शादी के बाद से ही दोनों के बीच कम्पैटिबिलिटी की ही दिक्कत थी।

तलाक से टूट चुके थे राहुल

राहुल महाजन ने अपने तलाक से टूट चुके हैं। लेटेस्ट इंटरव्यू में उन्होंने इस बारे में बात करने से साफ इनकार कर दिया। उन्होंने कहा- मैं अपनी पर्सनल लाइफ को प्राइवेट रखना चाहता हूं। मैं किसी चीज पर कमेंट करना नहीं चाहता हूं। मैं अपनी पर्सनल लाइफ के बारे में डिस्कस नहीं करता, यहां तक कि फ्रेंड्स के साथ भी नहीं। खैर, मैं अब ठीक हूं।

राहुल महाजन ने किस से-किस से कीं शादियां

स्मार्ट जोड़ी शो में नजर आ चुके राहुल महाजन ने अपनी जिंदगी में तीन शादियां की हैं। उनकी पहली शादी साल 2006 में श्वेता सिंह से हुई थी, जिनसे उनका रिश्ता 2 साल में ही खत्म हो गया था। साल 2010 में अपने स्वयंवर में राहुल को डिंपी गांगुली से दूसरी बार प्यार हुआ और कपल ने 2010 में शादी कर ली थी। हालांकि, पांच साल बाद ही डिंपी से भी राहुल का तलाक हो गया था।

संक्षिप्त खबरें

टैली सोल्युशन्स की पहल

लखनऊ (वि.)। टैली सोल्यूशन्स एक अगस्त से लखनऊ और कानपुर के एमएसएमई को ई-इनवॉयसिंग अडाप्शन में सहयोग प्रदान करने के लिए अपनी तैयारी पूरी कर ली है। गौरतलब है कि 5 करोड़ एवं इससे अधिक टर्नओवर वाले जीएसटी रजिस्टर्ड बिज़नेस के लिए ई-इनवॉसिंग को अपनाने की अंतिम तिथि अब करीब आ रही है, ऐसे में टैली सोल्यूशन्स, अपने व्यापक एवं इंटीग्रेटेड सोल्युशन टैलीप्राइम 3.0 के साथ उन्हें ई-इनवॉयसिंग को अपनाने एवं इसके प्रबन्धन में मदद करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। कंपनी लखनऊ और कानपुर के बिज़नसेज़ को ज़रूरी संशोधनों के बारे में जानकारी देने के लिए पूरे प्रयास कर रही है।

पावर मेक को सेल से ठेका

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की इस्पात कंपनी सेल ने 30,438 करोड़ रुपए की खान विकास व संचालन (एमडीओ) परियोजना का ठेका पावर मेक प्रोजेक्ट्स लिमिटेड को सौंपा है। कंपनी ने सोमवार को शेयर बाजार को दी जानकारी में कहा, 'झारखंड के धनबाद जिले के झरिया कोयला क्षेत्रों में स्थित तसरा ओपनकास्ट परियोजना के विकास व संचालन का ठेका पावर मेक प्रोजेक्ट्स लिमिटेड (पीएमपीएल) - पीसी पटेल इंफ्रा प्राइवेट लिमिटेड के गठजोड़ को दिया जा रहा है।' पीएमपीएल के पास इसकी 74 प्रतिशत हिस्सेदारी, जबकि पीसी पटेल इंफ्रा के पास 26 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

ICICI का नया बीमा प्लान

मुंबई। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने आईसीआईसीआई प्रू प्रोटेक्ट एन गेन प्लान लांच किया है। यह एक ऐसा अनूठा उत्पाद है जो व्यापक जीवन बीमा कवर, दुर्घटना के कारण आकस्मिक मृत्यु और स्थायी विकलांगता से सुरक्षा और दीर्घकालिक धन सृजन और वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बाजार से जुड़े रिटर्न प्रदान करता है।
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के मुख्य वितरण अधिकारी अमित पाल्टा ने कहा हमें आईसीआईसीआई प्रू प्रोटेक्ट एन गेन लांच करते हुए खुशी हो रही।

एलटीएफ की अच्छी वृद्धि

नई दिल्ली। एलएंडटी फाइनेंस (एलटीएफ) ने वित्त वर्ष 2022-23 के लिए रूरल बिजनेस फाइनेंस वर्टिकल में मजबूत व्यावसायिक प्रदर्शन किया है। एसेट्स अंडर मैनेजमेंट में 41 फीसद ग्रोथ और 70 फीसद डिस्बर्समेंट ग्रोथ के साथ कंपनी की इस वर्टिकल में ग्रोथ, इंडस्ट्री की ग्रोथ से आगे निकल गई है। ग्राहक मूल्य प्रबंधन पर लगातार फोकस करने से एलटीएफ को 50 फीसद से अधिक बार-बार होने वाले व्यापार संस्करणों द्वारा प्रदर्शित मजबूत कस्टमर प्रोफाइल का लाभ उठाने की अनुमति मिली है। कंपनी के 40 फीसद ग्राहक एलटीएफ के लिए खास हैं, जो केवल कंपनी की कस्टमर एंगेजमेंट और बेस्ट लोन आफर करने की ताकत को दिखाता है।

अडाणी ग्रीन को मुनाफा

नई दिल्ली। अडाणी ग्रीन एनर्जी का चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 51% बढ़कर 323 करोड़ हो गया। कंपनी ने सोमवार को शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि इस तिमाही में राजस्व बढ़ने से उसके लाभ में वृद्धि हुई है। पिछले साल की समान तिमाही में शुद्ध लाभ 214 करोड़ रहा था। तिमाही में कंपनी की आय बढ़कर 2,404 करोड़ हो गई जबकि पिछले साल की समान तिमाही में यह 1,701 करोड़ रुपए थी। अडाणी ग्रीन एनर्जी ने कहा कि 8,316 मेगावाट की परिचालन क्षमता के साथ वह देश की सबसे बड़ी नवीकरणीय ऊर्जा कंपनी हो गई है।(एजेंसी)

गूगल एड्स पर मिलेंगे खुद से तैयार विज्ञापन

■ जेन एआई के जरिए यह होगा संभव

नई दिल्ली (भाषा)। गूगल के वैश्विक विज्ञापनों के उपाध्यक्ष डैन टेलर ने कहा कि विज्ञापनदाता और व्यवसाय अब गूगल एड्स प्लेटफार्म पर स्वतः तैयार विज्ञापनों का लाभ उठा सकेंगे।

गूगल एड्स 'लार्ज लर्निंग मॉडल' (एलएनएम) और जेनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (जेन एआई) का उपयोग करके विज्ञापना देने के इच्छुक व्यक्ति अर्थात विपणक से मिली सूचना के आधार पर प्रचार अभियान की रूपरेखा तैयार करेगा व विज्ञापन का डिजाइन भी तैयार करके देगा। उन्होंने अपनी हालिया भारत यात्रा के दौरान कहा कि 'जेन आई' विज्ञापनदाताओं के लैंडिंग पेजों और अच्छा प्रदर्शन करने वाले लोगों के सवालों से सीखता है और अपने विज्ञापनों में और सुधार करता है।

टेलर ने इस साल 10 मई को गूगल आई/ओ के दौरान परफॉरमेंस मैक्स जैसे विपणक और विज्ञापनदाताओं के लिए पेश किए गए जेन एआई टूल का जिक्र किया था। उन्होंने बताया कि कैसे मिंत्रा, सैमसंग, एचडीएफसी और टाटा एआईजी जैसे ब्रांडों ने एआई के इस्तेमाल से 18 प्रतिशत तक अधिक नतीजा हासिल किया। कंपनी ने कहा कि उपयोगकर्ताओं की गोपनीयता पर भी उसका पूरा ध्यान है। उन्होंने कहा कि एशिया-प्रशांत के 11 बाजारों के 16,500 व्यक्तियों के सर्वेक्षण के दौरान 10 में से आठ उपभोक्ताओं ने अपनी व्यक्तिगत जानकारी की आनलाइन गोपनीयता और सुरक्षा के महत्व को स्वीकार किया।

टेलर ने कहा कि यह उपभोक्ताओं की वास्तविक चिंता है और ऐसा नहीं होने की स्थिति में 70 प्रतिशत लोग किसी ब्रांड से जुड़ना बंद कर देंगे।

■ इसके लिए अपलोड करना होगा विज्ञापन डाटा
■ डाटा भरते ही स्वतः बन जाएगा आपका विज्ञापन
■ प्राप्त हुई सूचनाओं के आधार पर तैयार करेगा प्रचार अभियान
■ विज्ञापनदाताओं के लैंडिंग पेजों व लोगों के सवालों से इस सुविधा में होता रहेगा सुधार

भारत में पहली बार आयोजित किया जाएगा विश्व काफी सम्मेलन

बेंगलुरु (भाषा)।

भारत में पहली बार विश्व काफी सम्मेलन (डब्ल्यूसीसी) आयोजित किया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय काफी संगठन (आईओसी) के सहयोग से 25 में 28 सितम्बर को इसे बेंगलुरु में आयोजित किया जाएगा। संगठन इस कार्यक्रम का आयोजन कॉफी बोर्ड आफ इंडिया के साथ मिलकर कर रहा है।

आईओसी अंतरसरकारी संगठन है जो काफी व्यापार और काफी उत्पादक तथा इसका उपभोग करने वाले देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए काम करता है। काफी बोर्ड आफ इंडिया के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एवं सचिव के. जी. जगदीश ने सोमवार को डब्ल्यूसीसी 2023 का प्रतीक चिन्ह जारी करते हुए कहा कि टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना इस आयोजन के ब्रांड एंबेसडर होंगे।

जगदीश ने कहा, 'एशिया में पहली बार डब्ल्यूसीसी (2023) का आयोजन किया जा रहा है और इससे भारत में काफी की खेती करने वालों को बहुत फायदा होने वाला है। उन्होंने कहा, 'वैश्विक मंच पर भारत की काफी को बढ़ावा देने से इस कार्यक्रम से काफी के किसानों को नए अवसर मिलेंगे और उनके लिए नया बाजार तैयार होगा।'

बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का एमकैप शिखर पर पहुंचा

■ इन कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण 306.66 लाख करोड़ के स्तर पर

■ बीएसई सेंसेक्स में दर्ज की गई 367 अंक की बढ़त ■ टीसीएस फिर दूसरी सबसे मूल्यवान कंपनी बनी

नई दिल्ली/मुंबई (भाषा)।

देश के प्रमुख शेयर बाजार बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण (एमकैप) सोमवार को 306.66 लाख करोड़ रुपए के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया।

बीएसई का मानक सूचकांक सेंसेक्स दो दिन की गिरावट के बाद सोमवार को 367.47 अंक यानी 0.56 प्रतिशत चढ़कर 66,527.67 अंक पर बंद हुआ। इस तेजी के बीच बीएसई पर सूचीबद्ध कंपनियों के पूंजीकरण में 2,50,254.54 अंक की बढ़त दर्ज की गई। इसके साथ कुल बाजार पूंजीकरण बढ़कर 306.66 लाख करोड़ रुपए हो गया जो इसका नया रिकार्ड स्तर है। इस दौरान दिग्गज सूचना प्रौद्योगिकी कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) एचडीएफसी बैंक को पीछे छोड़ते हुए एक बार फिर देश की दूसरी सबसे मूल्यवान कंपनी बन गई।

टीसीएस का पूंजीकरण 12,51,798.07 करोड़ रुपये हो गया जबकि एचडीएफसी बैंक 12,45,748.38 करोड़ रुपये मूल्यांकन के साथ तीसरे स्थान पर आ गया।

शेयर बाजारों में तेजी लौटी

मुंबई (भाषा)। मजबूत वैश्विक संकेतों के बीच रिलायंस इंडस्ट्रीज और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) में खरीदारी तेज होने से सोमवार को घरेलू शेयर बाजारों में रौनक लौट आई और दोनों प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी बढ़त में रहे। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित सेंसेक्स कारोबार के अंत में 367.47 अंक की बढ़त के साथ 66,527.67 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय सेंसेक्स 66,598.42 अंक तक पहुंच गया था। नेशनल स्टाक एक्सचेंज (एनएसई) का सूचकांक निफ्टी भी 107.75 अंक यानी 0.55 प्रतिशत चढ़कर 19,753.80 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी के 50 में से 35 शेयरों में तेजी रही।

दोनों शेयर बाजारों ने इस तेजी के साथ पिछले सप्ताह लगातार दो कारोबारी दिवसों में रही गिरावट से खुद को उबार लिया। इस तेजी में बिजली, तेल, सूचना प्रौद्योगिकी और धातु शेयरों की अहम भूमिका रही। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, 'वैश्विक रुझानों के अनुरूप भारतीय शेयर बाजारों में भी तेजी का रुख देखने को मिला। दुनिया भर में मुद्रास्फीति में नरमी आने से ब्याज दरों में तेजी का दौर थमने की उम्मीदें बढ़ी है।'

विमान यात्रियों के सामान में रोज मिलती हैं 25000 प्रतिबंधित चीजें

■ सुरक्षा जांच क्षेत्रों में लगे स्क्रीन पर वाणिज्यिक विज्ञापन दिखाने के बजाए प्रतिबंधित चीजों की दी जाए जानकारी

नई दिल्ली (भाषा)।

विमानन सुरक्षा निगरानी संस्था बीसीएएस के मुताबिक विमान यात्रियों के सामान में रोजाना करीब 25,000 प्रतिबंधित वस्तुएं मिलती हैं और इससे सुरक्षाकर्मियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

नागरिक विमानन सुरक्षा ब्यूरो (बीसीएएस) के महानिदेशक जुल्फिकार हसन ने इस बात पर भी जोर दिया गया कि देश के विमानन क्षेत्र के विकास के लिए सुरक्षा आवश्यक है। उन्होंने सोमवार को कहा, 'हम इसमें कोई चूक नहीं कर सकते।' हसन ने कहा कि यात्रियों को प्रतिबंधित वस्तुएं ले जाना बंद कर देना चाहिए, क्योंकि इससे सुरक्षाकर्मियों का काफी समय बचेगा।

बीसीएएस के निदेशक ने विमानन सुरक्षा सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में यह बात कही, यह 31 जुलाई से पांच अगस्त के बीच मनाया जा रहा है।

बीसीएएस ने हवाई अड्डों से सुरक्षा जांच क्षेत्रों में 'स्क्रीन' पर वाणिज्यिक विज्ञापन दिखाने के बजाय उन स्थानों का इस्तेमाल यात्रियों को प्रतिबंधित वस्तुओं के बारे में जानकारी देने के लिए करने की बात भी कही।

पंख फड़फड़ाने को जेट तैयार

कंपनी के परिचालन लाइसेंस का रिनीवल

नई दिल्ली (भाषा)। दिवालिया विमानन कंपनी जेट एयरवेज एक बार फिर से पंख फड़फड़ाने को तैयार है। कंपनी के लिए सफल बोली लगाने वाले जालान-कालरॉक गठजोड़ ने सोमवार को कहा कि नियामक डीजीसीए ने एयरलाइन के हवाई परिचालक प्रमाणपत्र को नवीनीकृत कर दिया है। नकदी संकट से जूझ रही जेट एयरवेज ने 17 अप्रैल, 2019 से उड़ान बंद कर दी थी। हवाई परिचालक प्रमाणपत्र (एओसी) 20 मई 2022 को फिर से जारी किया गया। इसके बाद एयरलाइन ने परिचालन शुरू नहीं किया, जिसके चलते एओसी 19 मई, 2023 को समाप्त हो गई।

पीएम स्वनिधि योजना में 51 लाख लोगों को मिला कर्ज

लखनऊ (वि.)। पीएम पथ विक्रेता आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना के तहत अब तक 69.16 लाख लोगों ने आवेदन किया है। इस योजना के तहत अब तक कुल 53.56 लाख लोगों के ऋण स्वीकृत किए जा चुके हैं जबकि 50.74 लाख लोगों को कर्ज वितरित भी कर दिया गया। कर्ज के तहत कुल 6511 करोड़ रुपए की रकम वितरित की गई।

पीएम स्वनिधि योजना को कोरोना महामारी से प्रभावित स्ट्रीट वेंडरों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए किया गया था। इस योजना के तहत एक वर्ष की अवधि के लिए 10 हजार रुपए तक के जमानत मुक्त ऋण प्रदान किया जाता है। अगर कर्जदार ऋण का भुगतान निर्धारित अवधि में सफलतापूर्वक कर देता है तो उसे दो बार में 20 हजार और 50 हजार रुपए का कर्ज और मंजूर कर लिया जाता है। योजना के तहत करीब 30.50 लाख लोगों को डिजिटल रूप से आनबोर्ड किया गया और उनको क्यूआर कोड प्रदान किया गया। इस समय डिजिटल रूप से सक्रिय स्ट्रीट वेंडरों की संख्या करीब 20.05 लाख है। यह संख्या बढ़ने से अब तक 96112 करोड़ रुपए के 80.93 करोड़ डिजिटल ट्रांजेक्शन किए गए। कैशबैक के बदले लाभार्थियों को लगभग 41 करोड़ रुपए जारी किए गए।

30 जुलाई तक 6.13 करोड़ आईटीआर दाखिल

नई दिल्ली (भाषा)।

देश में 31 मार्च को समाप्त वित्त वर्ष 2022-23 में अर्जित आय के लिए अभी तक 6.13 करोड़ से अधिक आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल किए गए है।

आयकर विभाग ने अपने आधिकारिक ट्विटर खाते पर यह जानकारी दी। उसने लिखा है, '30 जुलाई 2023 तक 6.13 करोड़ आईटीआर दाखिल किए गए। आज 31 जुलाई दोपहर 12 बजे तक 11.03 लाख और आईटीआर और दाखिल किए गए।' पिछले साल 31 जुलाई तक करीब 5.83 करोड़ आईटीआर दाखिल किए गए थे।

आईटीआर दाखिल करने में मदद के लिए आयकर विभाग की हेल्पडेसक और वेबसाइट पर चौबिसों घंटे सेवाएं उपलब्ध हैं।

भूटान को गेहूं निर्यात को मांगे गए आवेदन

■ सरकार ने भूटान के लिए 14180 टन गेहूं निर्यात की दी है मंजूरी

नई दिल्ली (भाषा)।

सरकार ने भूटान को मानवीय और खाद्य सुरक्षा के आधार पर 2023-24 के दौरान गेहूं कोटा आवंटित करने के लिए निर्यातकों से आवेदन आमंत्रित किए हैं।

विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने एक व्यापार नोटिस में कहा कि भूटान से मिले अनुरोधों को देखते हुए मानवीय और खाद्य सुरक्षा के आधार पर गेहूं, आटा और मैदा के निर्यात के लिए कोटा आवंटन की एक विस्तृत प्रक्रिया तय की गई है। इसमें कहा गया कि सरकार ने 2023-24 में भूटान को 14,184 टन गेहूं के निर्यात को मंजूरी दी है। इसके अलावा 5,326 टन आटा (गेहूं का) और 15,226 टन मैदा भी निर्यात किया जाएगा।

नोटिस के अनुसार, 'इसके तहत, कोटा आवंटन के लिए निर्यातकों से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं।' इसके तहत भूटान को भूमि परिवहन के जरिए निर्यात की न्यूनतम सीमा 100 टन है। आवेदन की अनुमति तभी दी जाएगी, जब निर्यातक न्यूनतम सीमा से अधिक मात्रा के लिए आवेदन करेगा।

डीजीएफटी ने एक अलग अधिसूचना में कहा कि उसने इस साल 30 नवम्बर तक तेल रहित चावल की भूसी के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है। तेल रहित चावल की भूसी का पशु आहार उद्योग में इस्तेमाल किया जाता है और भारत इसका प्रमुख निर्यातक है।

अनियमित बारिश से बढ़ेगी महंगाई

■ बैंक आफ बड़ौदा की तरफ से कराए गए एक शोध में जताई गई आशंका

कोलकाता (भाषा)। बैंक आफ बड़ौदा (बीओबी) के आर्थिक अनुसंधान विभाग ने कहा कि देश में अनियमित बारिश के कारण इस साल खरीफ की बुवाई कम होने का अनुमान है और इस वजह से निकट भविष्य में मुद्रास्फीति बढ़ सकती है।

विभाग की एक रिपोर्ट में कहा गया कि 30 जुलाई तक बारिश लंबी अवधि के औसत (एलपीए) से छह फीसद अधिक रही है। हालांकि, पूर्वी और उत्तर पूर्वी क्षेत्र में कम बारिश हुई, जबकि उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में अधिक बारिश दर्ज की गई। इसके चलते इस साल खरीफ की बुवाई कम हुई है और दालों की बुवाई पिछले साल की तुलना में बहुत कम है। रिपोर्ट में कहा गया है, 'निकट भविष्य में मुद्रास्फीति बढ़ सकती है, क्योंकि आईएमडी का अनुमान है कि मानसून अवधि के बीच में अल-नीनो की स्थिति विकसित होगी।' खरीफ की बुवाई जून से अक्टूबर के अंत तक चलती है। देश में खुदरा मुद्रास्फीति दर जून महीने में बढ़कर तीन महीने के उच्च स्तर 4.81 प्रतिशत पर पहुंच गई है, जबकि थोक मुद्रास्फीति 4.12 प्रतिशत है।

भारतीय रिजर्व बैंक मौद्रिक नीति समीक्षा पर विचार करते समय मुख्य रूप से खुदरा मुद्रास्फीति पर गौर करता है। द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षा के लिये आरबीआई गवर्नर की अगुवाई वाली छह सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की तीन दिवसीय बैठक आठ से 10 अगस्त को होगी।

बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही

नई दिल्ली (भाषा)।

देश में आठ प्रमुख ढांचागत उद्योगों की वृद्धि दर जून के महीने में सालाना आधार पर घटकर 8.2 प्रतिशत रही। कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस और बिजली के उत्पादन में कमी आने से यह गिरावट आई है।

वाणिज्य मंत्रालय ने सोमवार को बुनियादी उद्योगों से संबंधित आंकड़े जारी किए। जून, 2022 में प्रमुख उद्योगों की वृद्धि दर 13.1 प्रतिशत रही थी। आंकड़ों के मुताबिक, जून में प्रमुख बुनियादी क्षेत्रों की वृद्धि दर सालाना आधार पर कमजोर पड़ने के बावजूद पिछले पांच महीनों में सबसे अधिक रही। इसके पहले जनवरी, 2023 में इन आठ बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर 9.7 प्रतिशत रही थी।

एयरटेल ने चुकाया स्पेक्ट्रम का बकाया

■ दूरसंचार विभाग को किया 8024 करोड़ का भुगतान

नई दिल्ली (भाषा)।

दूरसंचार कंपनी एयरटेल ने 2015 की नीलामी में मिले स्पेक्ट्रम के लिए अपनी देनदारियों के तहत दूरसंचार विभाग (डाट) को 8,024 करोड़ रुपए का भुगतान किया है। कंपनी ने सोमवार को यह जानकारी दी।

सुनील मित्तल की अगुवाई वाली दूरसंचार कंपनी ने बताया कि उक्त किश्तों का भुगतान 10 प्रतिशत ब्याज के साथ किया गया। कंपनी ने एक बयान में कहा, 'भारती एयरटेल ने दूरसंचार विभाग (भारत सरकार) को वर्ष 2015 की नीलामी में मिले स्पेक्ट्रम से संबंधित स्थगित देनदारियों तहत 8,024 करोड़ रुपए का भुगतान किया है।'

एयरटेल ने कहा कि वह अपनी पूंजी संरचना के जरिए वित्तीय लचीलेपन पर जोर दे रही है, जिसमें वित्तपोषण की लागत को अनुकूल बनाना शामिल हैं।

मारुति का शुद्ध मुनाफा दोगुने से भी ज्यादा हुआ

नई दिल्ली (भाषा)।

वाहन बनाने वाली मारुति सुजुकी इंडिया का एकीकृत शुद्ध लाभ चालू वित्त वर्ष 2023-24 की अप्रैल-जून तिमाही में दोगुना से अधिक होकर 2,525 करोड़ रुपए रहा।

वाहन कंपनी ने सोमवार को शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि इससे पूर्व वित्त वर्ष 2022-23 की इसी तिमाही में कंपनी का शुद्ध लाभ 1,036 करोड़ रुपए था।

मारुति सुजुकी इंडिया की परिचालन आय चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में 32,338 करोड़ रुपए रही जो एक साल पहले इसी तिमाही में 26,512 करोड़ रुपए थी।

कंपनी के निदेशक मंडल की सोमवार को हुई बैठक में सुजुकी मोटर गुजरात प्राइवेट लिमिटेड (एसएमजी) के साथ विनिर्माण समझौते के अनुबंध को समाप्त करने और सुजुकी मोटर कारपोरेशन (एसएमसी) से एसएमजी के शेयर प्राप्त करने के विकल्प को मंजूरी दे दी गई।

सरकार को एनआईआईएफ ईसीजीसी से 3,400 करोड़ रुपए अधिक का लाभांश

नई दिल्ली (भाषा)।

सरकार को राष्ट्रीय निवेश और बुनियादी ढांचा कोष लि. (एनआईआईएफ) और ईसीजीसी लि. से लाभांश किस्तों के रूप में 3,400 करोड़ रुपए से अधिक प्राप्त हुए है। सरकार चालू वित्त वर्ष में अब तक सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों से लाभांश के तौर पर 5,200 करोड़ रुपय जुटा चुकी है।

निवेश और लोक परिसंपत्ति प्रबंध विभाग (दीपम) के सचिव तुहिन कांत पांडेय ने ट्विटर पर लिखा, ''सरकार को एनआईआईएफएल और ईसीजीसी से लाभांश किस्तों के रूप में क्रमशः 3,031 करोड़ व 434 करोड़ रुपए प्राप्त हुए है।'

सुस्ती से बाहर निकली यूरोप की अर्थव्यवस्था

■ चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में 0.3 फीसद की दर से बढ़ी है यूरोपीय अर्थव्यवस्था

फ्रैंकफर्ट (एपी)।

यूरोप के 20 देशों वाले समूह यूरोपीय संघ की अर्थव्यवस्था कई महीनों तक सुस्ती के दौर से गुजरने के बाद अप्रैल-जून तिमाही में 0.3 प्रतिशत की दर से बढ़ी है।

यूरोपीय संघ की सांख्यिकीय इकाई यूरोस्टैट ने सोमवार को जारी आंकड़ों में कहा कि वर्ष 2023 के पहले तीन महीनों की तुलना में जून तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर 0.3 प्रतिशत रही है। इस तरह यूरोपीय संघ की वृद्धि दर में सुधार दर्ज किया गया है।

इसके पहले जनवरी-मार्च तिमाही में वृद्धि दर शून्य रही थी जबकि अक्टूबर-दिसम्बर, 2022 की तिमाही में इसमें गिरावट दर्ज की गई थी। फ्रांस में 0.5 प्रतिशत और स्पेन में 0.4 प्रतिशत की तिमाही वृद्धि दर से यूरोजोन को थोड़ा समर्थन मिला है। इसके अलावा आयरलैंड की भी वृद्धि दर 3.3 प्रतिशत रही है।

पिछले साल रूस-यूक्रेन युद्ध छिड़ने के बाद से ऊर्जा एवं ईंधन की कीमतों में आए उछाल ने समूचे यूरोप की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। उच्च मुद्रास्फीति को काबू में करने के लिए यूरोपीय केंद्रीय बैंक ईसीबी ने लगातार नीतिगत ब्याज दरों में वृद्धि की है।

इस बीच जुलाई के महीने में मुद्रास्फीति घटकर 5.3 प्रतिशत पर आ गई जबकि जून में यह 5.5 प्रतिशत रही थी।

चीन में बढ़ा आर्थिक मंदी का दबाव

बीजिंग (एपी)। निर्यात में कमी के चलते चीन की विनिर्माण गतिविधियां जुलाई में घट गईं, जिससे सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी पर आर्थिक मंदी को दूर करने का दबाव और बढ़ गया है। सोमवार को जारी एक सर्वेक्षण से यह पता चला। राष्ट्रीय सांख्यिकी एजेंसी और एक उद्योग समूह द्वारा जारी क्रय प्रबंधक सूचकांक जून के 49 अंक से बढ़कर जुलाई में 49.3 अंक हो गया। हालांकि, इस सूचकांक में 50 से कम अंक का अर्थ है कि गतिविधियां घट रही हैं। एचएसबीसी के एरिन शिन ने एक रिपोर्ट में कहा कि चीन का विनिर्माण पीएमआई संकुचन को दर्शा रहा है, क्योंकि बाहरी क्षेत्र में दबाव बढ गया है।

भारत को निर्णायक मैच में प्रयोग सफल रहने की उम्मीद

तीसरा वनडे

■ मेजबान वेस्ट इंडीज के खिलाफ मैच शाम 7.00 बजे से

तारोबा (भाषा)। भारत को उम्मीद है कि वेस्ट इंडीज के खिलाफ मंगलवार को तीसरे और निर्णायक वनडे मैच में मध्यक्रम में संजू सैमसन और सूर्यकुमार यादव को आजमाने का उसका प्रयोग सफल साबित होगा। वेस्ट इंडीज से 2006 के बाद से एक भी वनडे सीरीज नहीं हारी भारतीय टीम ने बारबडोस में दूसरे वनडे में पराजय का सामना किया जिसमें कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली को आराम दिया गया था।

छह विकेट से मिली हार के बाद कोच राहुल द्रविड़ ने कहा था कि भारतीय टीम अगले महीने होने वाले एशिया कप और फिर विश्व कप के मद्देनजर वृहत तस्वीर देख रही है जिसमें देखना है कि अहम मुकाबलों में युवा खिलाड़ी कितना प्रभाव छोड़ पाते हैं। पचास ओवरों के प्रारूप में संघर्ष करते दिख रहे सूर्यकुमार लंबी पारी खेलकर मैच जिताने पर फोकस करेंगे। वहीं कई बार वापसी करने के बावजूद प्रभावित नहीं कर सके सैमसन के पास भी यह सुनहरा मौका है। वह दूसरे वनडे की ही तरह तीसरे नंबर पर उतर सकते हैं।

सलामी बल्लेबाज ईशान किशन ने प्रभावित किया है लेकिन शुभमन गिल अभी तक बड़ी पारी नहीं खेल पाए हैं। हार्दिक पांड्या ने पहले दो मैचों में गेंदबाजी की शुरुआत की लेकिन बल्ले से नाकाम रहे। पांच मैचों की टी-20 श्रृंखला से पहले वह उपयोगी पारी खेलना चाहेंगे। गेंदबाजी में तेज गेंदबाज उमरान मलिक अभी तक विकेट नहीं ले सके हैं। उनकी रफ्तार भारत के लिए 'एक्स फैक्टर' है लेकिन उन्हें अपनी तकनीक और सटीकता पर काम करना होगा।

चाइनामैन कुलदीप यादव ने प्रभावी प्रदर्शन किया है जिससे उनके दोस्त युजवेंद्र चहल के लिए टीम में जगह नहीं बन पा रही। अब वह टी-20 सीरीज में ही नजर आएंगे। वेस्ट इंडीज के पास खोने के लिए कुछ नहीं है और अगर वह भारत को हरा देता है तो वनडे विश्व कप के लिए क्वालीफाई नहीं कर पाने के जख्मों पर कुछ हद तक मरहम लगेगा। उसके गेंदबाजों ने भारतीय बल्लेबाजों को काफी परेशान किया है। बाएं हाथ के स्पिनर गुडाकेश मोती अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं जबकि तेज गेंदबाज रोमारियो शेफर्ड भी प्रभावी रहे हैं। कप्तान शाइ होप ने कहा, 'हम एक बार फिर उस प्रदर्शन को दोहराएंगे। हमें बल्ले और गेंद से लगातार अच्छा प्रदर्शन करना होगा।'

भारतीय क्रिकेट टीम के सदस्य।

भारतीय तीरंदाजों और निशानेबाजों ने छह पदक और जीते

नई दिल्ली (भाषा)। भारतीय निशानेबाजों और तीरंदाजों ने चीन के चेंगडू में हो रहे यूनिवर्सिटी खेलों में सोमवार को छह पदक और जीते। निशानेबाज ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर और दिव्यांश, अर्जुन बाबूता ने दस मीटर एयर राइफल पुरुष टीम वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। दोनों ने 1894.7 का स्कोर किया जबकि चीन के शिनमियाओ, सोंग बुहार और झू शियाओझोंग ने 1881.9 अंक के साथ रजत पदक जीता। कजाकिस्तान तीसरे स्थान पर रहा।

पुरुषों के व्यक्तिगत वर्ग में ऐश्वर्य ने 252.6 अंक के साथ पीला तमगा जीता जबकि दिव्यांश को रजत पदक मिला। चीन के बुहान तीसरे स्थान पर रहे। कम्पाउंड तीरंदाजी में भारत को दो स्वर्ण और एक कांस्य पदक मिला। अवनीत ने अमेरिका की एलिसा ग्रेस स्टरगिल को हराकर महिला वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। वहीं पुरुषों के व्यक्तिगत वर्ग में संग्रामप्रीत बिस्ला को स्वर्ण और अमन सैनी को कांस्य पदक मिला। भारत नौ स्वर्ण, तीन रजत और पांच कांस्य समेत 17 पदक लेकर तालिका में जापान के साथ दूसरे स्थान पर है। चीन 21 पदक लेकर शीर्ष पर है।

डेविस कप मुकाबले में दिग्विजय भारतीय टीम में

नई दिल्ली (भाषा)। दिग्विजय प्रताप सिंह को मोरक्को के खिलाफ लखनऊ में होने वाले डेविस कप टेनिस विश्व ग्रुप दो के मुकाबले के लिए भारत की छह सदस्यीय टीम में चुना गया है। लखनऊ में 16 और 17 सितम्बर को होने वाले मुकाबले के लिए भारतीय टीम में सुमित नागल, शशिकुमार मुकुंद, युकी भांबरी, रामकुमार रामनाथन और रोहन बोपन्ना को भी चुना गया है। यह बोपन्ना का आखिरी मैच होगा क्योंकि वह पिछले महीने ही डेविस कप कॅरियर पर विराम लगाने का ऐलान कर चुके हैं। रोहित राजपाल गैर खिलाड़ी कप्तान होंगे। अखिल भारतीय टेनिस संघ ने कहा कि खिलाड़ियों को उनकी रैंकिंग, उपलब्धता, प्रदर्शन और मौजूदा फॉर्म समेत कई पहलुओं पर गौर करने के बाद चुना गया। महासंघ ने कहा कि साकेत माइनेनी, मनद दहाम्ने, मनीष सुरेशकुमार, करण सिंह और युवान नंदल भी टीम के साथ अभ्यास करेंगे।

अध्यक्ष पद की दौड़ में चार दावेदार बृज भूषण गुट ने भी नामांकन भरे

डब्ल्यूएफआई चुनाव

नई दिल्ली (भाषा)। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के निवर्तमान अध्यक्ष बृज भूषण शरण सिंह के करीबी उत्तर प्रदेश के संजय सिंह सहित चार उम्मीदवारों ने सोमवार को यहां ओलंपिक भवन में डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष पद के लिए नामांकन भरे। बृज भूषण गुट से चंडीगढ़ कुश्ती इकाई के दर्शन लाल ने महासचिव पद के लिए नामांकन भरा जबकि उत्तराखंड के एसपी देसवाल कोषाध्यक्ष पद के लिए चुनौती पेश करेंगे।

बृज भूषण गुट ने 25 राज्य इकाइयों में से 22 के समर्थन का दावा किया है और नामांकन भरने के बाद 'भरोसा' जताया कि 12 अगस्त को डब्ल्यूएफआई चुनावों में वे सभी 15 पद पर जीत दर्ज करेंगे। ओलंपिक भवन में व्यस्त दिन में बृज भूषण गुट के नामितों और समर्थकों का काफिला भारतीय जनता पार्टी के इस नेता के 'आशीर्वाद' के साथ पहुंचा। इन लोगों ने डब्ल्यूएफआई चुनावों के निर्वाचन अधिकारी जम्मू-कश्मीर उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश महेश मित्तल कुमार के समक्ष नामांकन दाखिल किए।

नामांकन वापस लेने की आखिरी तारीख सात अगस्त है। न्यायमूर्ति महेश मित्तल कुमार ने कहा, 'अध्यक्ष पद के लिए चार उम्मीदवार हैं। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए तीन, उपाध्यक्ष के लिए छह, महासचिव के लिए तीन, कोषाध्यक्ष के लिए दो, संयुक्त सचिव के लिए तीन और कार्यकारी सदस्यों के लिए नौ उम्मीदवार मैदान में हैं। 15 पद के लिए 30 लोगों ने नामांकन भरा है।' उन्होंने कहा, 'कल हम उन सभी उम्मीदवारों की सूची जारी करेंगे जिनके नामांकन पत्र सही होंगे। इसे कल डब्ल्यूएफआई की वेबसाइट पर डाला जाएगा। एक महिला भी है (अध्यक्ष पद की उम्मीदवार)।'

डब्ल्यूएफआई की कार्यकारी समिति के सदस्यों की सूची में एकमात्र महिला उम्मीदवार अनीता श्योराण हैं जो ओडिशा का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। अनीता बृज भूषण के खिलाफ यौन उत्पीड़न के मामले में गवाहों में से एक हैं। बृज भूषण गुट ने डब्ल्यूएफआई के 15 पद के लिए 18 नामांकन भरे हैं। भारतीय जनता पार्टी के नेता बृज भूषण ने सोमवार को पांच सितारा होटल में एक और दौर की बैठक की जिसके बाद उनके गुट के उम्मीदवारों और समर्थकों का काफिला दोपहर बाद सबसे पहले ओलंपिक भवन पहुंचा।

नामांकन दाखिल करने का समय खत्म होने में जब 45 मिनट से भी कम का समय बचा था और बृज भूषण गुट अपनी औपचारिकताएं पूरी कर चुका था तब अनीता, रेलवे खेल संवर्धन बोर्ड (आरएसपीबी) के सचिव प्रेम चंद लोचब (गुजरात के प्रतिनिधि), दुष्यंत शर्मा (जम्मू-कश्मीर इकाई) और कुछ अन्य पहुंचे और नामांकन दाखिल करने के बाद मीडिया से बात किए बगैर वापस लौट गए।

इंग्लैंड ने आस्ट्रेलिया को 49 रन से हराकर सीरीज 2-2 से बराबर की

पांचवां एशेज टेस्ट

लंदन (एपी)। क्रिस वोक्स (50 रन पर चार विकेट) और मोईन अली (76 रन पर तीन विकेट) की धारदार गेंदबाजी से इंग्लैंड ने पांचवें और अंतिम क्रिकेट टेस्ट के वर्षा से प्रभावित अंतिम दिन आस्ट्रेलिया को 49 रन से हराकर पांच मैचों की एशेज सीरीज 2-2 से बराबर कर दी। आस्ट्रेलिया ने हालांकि एशेज सीरीज अपने पास बरकरार रखी। इंग्लैंड के 384 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए आस्ट्रेलिया की टीम 334 रन पर सिमट गई।

उस्मान ख्वाजा (72) और डेविड वार्नर (60) ने पहले विकेट के लिए 140 रन जोड़कर आस्ट्रेलिया को शानदार शुरुआत दिलाई थी लेकिन सुबह के सत्र में वोक्स ने इन दोनों को आउट करके इंग्लैंड को वापसी दिलाई। मोईन ने उनका अच्छा साथ दिया जबकि स्टुअर्ट ब्रॉड (62 रन पर दो विकेट) ने अंतिम दो विकेट चटकाकर इंग्लैंड की जीत सुनिश्चित की।

वोक्स ने सुबह के सत्र में आस्ट्रेलिया का स्कोर तीन विकेट पर 169 रन किया जिसके बाद स्टीव स्मिथ (54) ने मैच का अपना दूसरा अर्धशतक जड़ने के अलावा ट्रेविस हेड (43) के साथ चौथे विकेट के लिए 95 रन जोड़कर आस्ट्रेलिया को मैच में वापसी कराई। बारिश के कारण लंच और चाय के बीच का खेल नहीं हो सका। अंतिम सत्र में खेल शुरू होने पर मोईन ने हेड को स्लिप में जो रूट के हाथों कैच कराके इस साझेदारी को तोड़ा। अगले ओवर में वोक्स ने स्मिथ को भी दूसरी स्लिप में जैक क्राउली के हाथों कैच करा दिया।

मोईन ने अगले ओवर में मिशेल मार्श (06) को विकेटकीपर जॉनी बेयरस्टो के हाथों कैच कराया जबकि वोक्स ने मिशेल स्टार्क (09) की पारी का अंत किया। कप्तान पैट कमिंस (09) मोईन का तीसरा शिकार बने जिससे आस्ट्रेलिया का स्कोर तीन विकेट पर 264 रन से आठ विकेट पर 294 रन हो गया।

लंदन : स्टीव स्मिथ को आउट करने पर खुशी मनाते क्रिस वोक्स।

स्वियातेक ने जीता पोलैंड ओपन खिताब

वारसॉ (एपी)। शीर्ष वरीयता प्राप्त इगा स्वियातेक ने पोलैंड ओपन के फाइनल में लौरा सीजमंड को 6-0, 6-1 से हराकर इस साल का अपना चौथा खिताब जीत लिया। फ्रेंच ओपन चैंपियन स्वियातेक ने टूर्नामेंट में एक भी सेट नहीं गंवाया। वह इस साल दोहा और स्टटगार्ट में भी खिताब जीत चुकी है। पोलैंड की इस खिलाड़ी ने कहा, 'मैं अपनी टीम और परिवार को धन्यवाद देना चाहती हूं। यहां खेलना आसान नहीं था लेकिन मुझे खुशी है कि मैं जीत सकी।' उन्होंने सेमीफाइनल में बेल्जियम की यानिना विकमायेर को 6-1, 7-6 से मात दी थी।

ज्वेरेव ने जेरे को हराकर हैम्बर्ग ओपन जीता

हैम्बर्ग (एपी)। अलेक्जेंडर ज्वेरेव ने लाज्लो जेरे को 7-5, 6-3 से हराकर पहली बार हैम्बर्ग यूरोपियन ओपन टेनिस खिताब जीत लिया। इटली के जूरिन में नवम्बर 2021 में जीतने के बाद यह ज्वेरेव का पहला खिताब है। उसने एक भी सेट गंवाए बिना हैम्बर्ग ओपन में खिताबी जीत दर्ज की। उन्होंने जीत के बाद कहा, 'मैं यहां पैदा हुआ हूं और इन्ही कोर्ट पर टेनिस सीखा है। यहां जीतना दूसरे टूर्नामेंटों की तुलना में अलग है।' महिला वर्ग में नीदरलैंड की अरांतजा रूस ने खिताब जीता।

संक्षिप्त खबरें

भराली ने एशियाई युवा एवं जूनियर भारोत्तोलन में दूसरा स्वर्ण जीता

ग्रेटर नोएडा। भारत के बेदब्रत भराली ने सोमवार को यहां एशियाई युवा एवं जूनियर भारोत्तोलन चैंपियनशिप के चौथे दिन पुरुष 67 किग्रा वर्ग का खिताब जीता जो प्रतियोगिता में देश का दूसरा स्वर्ण पदक है। भराली ने स्नैच में 124 किग्रा और क्लीन एवं जर्क में 149 किग्रा से कुल 273 किग्रा वजन उठाकर युवा पुरुष वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। उज्बेकिस्तान के नुरिलो दवलातोव ने कुल 272 किग्रा (123 किग्रा और 149 किग्रा) वजन उठाकर रजत पदक जीता। कांस्य पदक वियतनाम के ए टेन के नाम रहा जिन्होंने कुल 257 किग्रा (117 किग्रा और 140 किग्रा) वजन उठाया।

बांदा ने किया महिला विश्व कप का 1000वां गोल

वेलिंग्टन। जाम्बिया की बारबरा बांदा ने सोमवार को कोस्टा रिका के खिलाफ ग्रुप सी मुकाबले के 31वें मिनट में पेनल्टी किक से महिला विश्व कप इतिहास का 1,000वां गोल किया। जाम्बिया की 23 वर्षीय कप्तान ने अपने चतुर रनअप से गोलकीपर डेनिएला सोलेरा को छकाया और आसानी से गेंद को गोलपोस्ट में पहुंचा दिया। इसके तुरंत बाद, फीफा ने सोशल मीडिया पर बांदा के लिए बधाई पोस्ट की। जाम्बिया पहली बार महिला विश्व कप में हिस्सा ले रहा था। यह महिला विश्व कप में इस टीम का दूसरा गोल था। जाम्बिया का पहला गोल मैच के तीसरे मिनट में लुशोमो म्वेम्बा ने किया था।

टेलर फ्रिट्ज ने जीता खिताब

अटलांटा। अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज ने आस्ट्रेलिया के अलेक्जेंडर वुकिच को 7-5, 6-7, 6-4 से हराकर अटलांटा ओपन टेनिस खिताब जीत लिया जो उनके कॅरियर का छठा खिताब है। उन्होंने फाइनल तक एक भी सेट नहीं गंवाया था लेकिन फाइनल में वुकिच ने दूसरा सेट जीतकर मैच को टाइब्रेकर में खींचा।

जीव 14वें स्थान पर

पोर्थकॉल (वेल्स)। भारतीय गोल्फर जीव मिल्खा सिंह अंतिम दौर में आठ ओवर 79 का टूर्नामेंट का अपना सबसे खराब प्रदर्शन करने के बावजूद सीनियर ओपन में संयुक्त रूप से 14वें स्थान पर रहे जो उनके सीनियर कॅरियर का सर्वश्रेष्ठ नतीजा है। जीव ने अंतिम दौर में दो बर्डी की लेकिन वह 10 बोगी कर गए जिससे संयुक्त रूप से 11वें स्थान से संयुक्त रूप से 14वें स्थान पर खिसक गए। जर्मन के एलेक्स सेज्का ने प्ले ऑफ में पीड्रेग हेरिंगटन को पछाड़कर खिताब जीता। सेज्का ने दूसरे अतिरिक्त होल में जीत दर्ज की।

भारतीय टीम की अगुआई करेंगे बुमराह, प्रसिद्ध की भी वापसी

आयरलैंड दौरा

नई दिल्ली (भाषा)। चोटिल होने के कारण पिछले लंबे समय से बाहर चल रहे तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने आयरलैंड के खिलाफ तीन टी-20 मैचों की सीरीज के लिए सोमवार को कप्तान के रूप में भारतीय टीम में वापसी की जो आईसीसी वनडे विश्व कप से पहले भारतीय तेज गेंदबाजी आक्रमण के लिए अच्छी खबर है। भारत डबलिन के मालहाइड में 18, 20 और 23 अगस्त को तीन टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलेगा। रुतुराज गायकवाड को टीम का उप कप्तान नियुक्त किया गया है।

बुमराह का पीठ की चोट के लिए न्यूजीलैंड में ऑपरेशन किया गया था और वह पिछले कुछ समय से राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में रिहैबिलिटेशन पर थे। भारतीय तेज गेंदबाजी के अगुआ बुमराह ने भारत की तरफ से अपना आखिरी मैच पिछले साल सितंबर में आस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 के रूप में खेला था। बुमराह की कप्तान और तेज गेंदबाजी के अगुआ के रूप में दोहरी भूमिका को लेकर चर्चा हुई। पता चला है कि यह 29 वर्षीय क्रिकेटर आयरलैंड दौरे के दौरान दोहरी भूमिका निभाने को लेकर उत्साहित था। बुमराह को भारत की अगुआई करने का अनुभव है। उन्होंने पिछले साल इंग्लैंड के खिलाफ बर्मिंघम टेस्ट मैच में भारत की कप्तानी की थी।

भारतीय टी-20 टीम - जसप्रीत बुमरा (कप्तान), रुतुराज गायकवाड़ (उप कप्तान), यशस्वी जायसवाल, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह, संजू सैमसन (विकेटकीपर), जितेश शर्मा (विकेटकीपर), शिवम दुबे, वाशिंगटन सुंदर, शाहबाज अहमद, रवि बिश्नोई, प्रसिद्ध कृष्णा, अर्शदीप सिंह, मुकेश कुमार, आवेश खान।

स्पेन को 4-0 से हराकर जापान ग्रुप सी में शीर्ष पर

महिला फुटबाल विश्व कप

वेलिंगटन (एपी)। जापान पहले हाफ में दागे तीन गोल की बदौलत महिला फुटबॉल विश्व कप के ग्रुप सी मैच में सोमवार को यहां स्पेन को 4-0 से हराकर ग्रुप में शीर्ष पर रहा। जापान के लिए हिनाता मियाजावा (12वें और 40वें मिनट) ने दो गोल दागे जबकि रिको उकी (29वें मिनट) और मिना तनाका (82वें मिनट) ने एक-एक गोल किया।

पूरे मैच में गेंद स्पेन के कब्जे में अधिक रही। जापान की टीम हालांकि 22 प्रतिशत समय गेंद को अपने पास रखने के बावजूद मैच में दबदबा बनाने में सफल रही। दोनों टीम पहले ही अंतिम 16 में जगह सुनिश्चित कर चुकी है। जापान ने लगातार चौथी जबकि स्पेन ने लगातार दूसरी बार यह उपलब्धि हासिल की। दोनों टीम ने इससे पहले जाम्बिया को 5-0 के समान अंतर से हराया था। कोस्टा रिका के खिलाफ 3-0 की जीत से स्पेन बेहतर गोल अंतर के कारण शीर्ष पर था।

सोमवार को जापान के खिलाफ ड्रा भी उसे इतिहास में पहली बार ग्रुप में शीर्ष पर जगह दिला देता लेकिन जापान ने उसके इरादों पर पानी फेर दिया। जापान अब प्री क्वार्टर फाइनल में शनिवार को ग्रुप ए के उप विजेता नॉर्वे से भिड़ेगा जबकि स्पेन को इसी ग्रुप के विजेता स्विट्जरलैंड से खेलना है।

आस्ट्रेलिया ने कनाडा को किया बाहर नाइजीरिया अंतिम 16 में

मेलबर्न (एपी)। चोटिल स्ट्राइकर सैम केर खेलने के लिए तैयार थी लेकिन आस्ट्रेलिया ने उनके बिना भी सोमवार को कनाडा पर 4-0 से जीत दर्ज करके ग्रुप बी में शीर्ष स्थान हासिल किया। विश्व कप का सह मेजबान आस्ट्रेलिया पिछले मैच में नाइजीरिया से हारने के कारण दबाव में था तथा उसे अंतिम 16 में जगह बनाने के लिए इस मैच में हर हाल में जीत की दरकार थी। दूसरी तरफ कनाडा हार से बचने पर नॉकआउट चरण में पहुंच जाता लेकिन आखिर में उसे बाहर का रास्ता देखना पड़ा।

आस्ट्रेलिया की तरफ से हेली रासो ने पहले हाफ में दो गोल किए। उनके अलावा मैरी फाउलर और स्टीफ कैटली ने भी गोल किए, जिससे आस्ट्रेलिया शान के साथ नॉकआउट चरण में जगह बनाने में सफल रहा। आस्ट्रेलिया ने छह अंकों के साथ ग्रुप बी में शीर्ष स्थान हासिल किया। वह नाइजीरिया से एक और कनाडा से दो अंक आगे रहा। नाइजीरिया ने एक अन्य मैच में आयरलैंड के खिलाफ गोल रहित ड्रा खेला जिससे उसकी टीम ग्रुप बी में दूसरे स्थान पर रहकर अंतिम 16 में जगह बनाने में सफल रही।

जाम्बिया ने कोस्टा रिका को हराकर पहली जीत दर्ज की

हैमिल्टन (एपी)। लुशोमो एमवीम्बा ने इस साल महिला विश्व कप फुटबॉल का सबसे तेज गोल दागा और बारबरा बांडा ने टूर्नामेंट का 1000वां गोल दागा जिसकी बदौलत टूर्नामेंट में पहली बार खेल रही जाम्बिया ने सोमवार को कोस्टा रिका को 3-1 से हराकर पहली जीत दर्ज की। इस जीत से जाम्बिया की टीम सिर ऊंचा करके स्वदेश लौटेगी। दोनों टीमें नॉकआउट की दौड़ से पहले ही बाहर हो चुकी हैं। जाम्बिया के लिये पहला गोल दो मिनट 11वें सेकेंड में एमवीम्बा ने किया जो टूर्नामेंट का सबसे तेज गोल है। वहीं बांडा ने 31वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर गोल दागा। कोस्टा रिका के लिये एकमात्र गोल 47वें मिनट में मेलिसा हेरेरा ने किया। इंजुरी टाइम के तीसरे मिनट में रशेल के ने जाम्बिया के लिए तीसरा गोल किया।

हैदराबाद ने की वापसी, कोच्चि केडीज का जीत से अभियान शुरू

नई दिल्ली। किराक हैदराबाद और कोच्चि केडीज टीमों ने आईजीआई स्टेडियम में चल रही प्रो पंजा लीग 2023 के पहले सत्र में शानदार जीत हासिल दर्ज की। किराक हैदराबाद ने बड़ौदा बादशाह्स को 12-5 से हराया जबकि कोच्चि केडीज ने रोहतक राउडीज को 15-13 से हराया।

दिन के पहले मैच में हैदराबाद ने नाटकीय वापसी की। अंडरकार्ड मुकाबलों के बाद हैदराबाद की टीम 1-2 से पीछे चल रही थी। इस मैच में एमडी हाशिम और आशा कुमार ने बड़ौदा बादशाह्स के लिए दो अंक जीते। उज्जवल अग्रवाल ने किराक के लिए एकमात्र अंक अर्जित किया। मेन कार्ड में किराक के धीरज सिंह ने 80 किग्रा मुकाबले में बड़ौदा के अफसल टीपी पर बोनस अंक के साथ जीत दर्ज की।

60 किग्रा भार वर्ग में मुकाबले में हैदराबाद के नवीन ने बड़ौदा के मोनू थॉमस को पराजित कर दो और बोनस अंक अर्जित किए। किराक हैदराबाद के अहमद फैजान अली ने 100 किग्रा वर्ग में बड़ौदा बादशाह्स के शमीर खान पर 3-1 जीत हासिल की। इस तरह किराक हैदराबाद ने 12-5 से मैच जीत लिया।

दूसरे मैच में, कोच्चि केडीज के स्वेता राजावत और प्रसेनजीत पात्रा ने 2 अंक जीते। अमल दास ने रोहतक के लिए एक अंक जीता। मेन कार्ड में कोच्चि के सिद्धांत कथूरिया ने 90 किग्रा में रोहतक के कारज सिंह को हराकर बढ़त बनाई। कोच्चि की चेतना शर्मा ने 65 किग्रा मुकाबले में रोहतक की आकृति कंडारी की 10 सेकेंड की चुनौती को सफलतापूर्वक जारी करते हुए 10 अंक जीते। अंतिम मुकाबले में रोहतक के श्रीनिवास बीवी ने सफल चैलेंज राउंड के माध्यम से विशेष रूप से दिव्यांग वर्ग में कोच्चि के आसिफ अहमद पर क्लीन स्वीप जीत हासिल की और 10 अंक अर्जित किए। इस तरह कोच्चि केडी ने यह मैच 15-13 से जीत लिया।

मानव चोपड़ा मेमोरियल में टीएनएम की आसान जीत

नई दिल्ली। गेंदबाजों के दमदार प्रदर्शन की बदौलत टीएनएम क्रिकेट अकादमी ने 24वें मानव चोपड़ा क्रिकेट टूर्नामेंट के लीग मैच में दिल्ली क्रिकेट हब पर आठ विकेट से आसान जीत हासिल की। दिल्ली क्रिकेट हब की टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 37.5 ओवर में 130 रन पर सिमट गई। स्वर्णिम बंसल ने 43 रन व कृष्णा अग्रवाल ने 29 रन ना. की पारी खेली। कार्तिक यादव ने तीन, तन्य सिंह, देवांस चतुर्वेदी व निखिल यादव ने दो-दो

विकेट लिए। जवाब में टीएनएम क्रिकेट अकादमी ने दो विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। शांतनू सिंह ने 44 रन पीयूष ने 31 रन ना. व रौनक मुंडे ने 28 रन ना. की पारी खेली। शौर्य पांडे ने दो विकेट लिए। शांतनू सिंह को स्पोर्ट्स सन मैन ऑफ द मैच पुरस्कार दिया गया। **संक्षिप्त स्कोर** - दिल्ली क्रिकेट हब : 37.5 ओवर में 130/10 (स्वर्णिम बंसल 43 रन, कृष्णा अग्रवाल 29 रन ना., कार्तिक यादव यादव 3/10, तन्य सिंह 2/24, देवांस चतुर्वेदी 2/24, निखिल यादव 2/30)। टीएनएम क्रिकेट अकादमी : 21.5 ओवर में 131/2 (शांतनू सिंह 44 रन, पीयुष कुमार 31 रन ना., रौनक मुंडे 28 रन ना., शौर्य पांडे 2/17)।

शाइनिंग राजस्थान की जीत

प्रांजल यादव की बेहतरीन पारी 57 रन, अर्जुन त्यागी 2/01 और राजपाल 1/11 की मदद से शाइनिंग राजस्थान ने प्रथम वेंकटेश्वर प्रीमियर लीग अंडर-13 क्रिकेट में बंगाल टाइगर्स को आठ विकेट से हराया। **संक्षिप्त स्कोर** - बंगाल टाइगर्स : 28 ओवर में 140/10 (खुशाल राज 48 रन, अर्जुन त्यागी 2/01, राजपाल 1/11)। शाइनिंग राजस्थान : 16.2 में 141/2 (प्रांजल यादव 57 रन, अक्षित खोला 1/34)।

विहान व श्रेयस चमके

विहान बंसल के ऑलराउंडर प्रदर्शन (35 रन, 2/14), श्रेयस गर्ग 2/21 और राघव शर्मा 23 की मदद से चेन्नई किंग्स ने पहले वेंकटेश्वर प्रीमियर लीग अंडर-13 में लखनऊ थंडर्स को तीन विकेट से हराया। **संक्षिप्त स्कोर** - लखनऊ थंडर : 30 ओवर में 158/10 (अर्नव 30 रन, वंश वोहरा 23 रन, विहान बंसल 2/14, श्रेयस गर्ग 2/21)। चेन्नई किंग्स : 21 ओवर में 161/7 (विहान बंसल 35 रन, राघव शर्मा 23 रन, साई कौस्तुभ 3/21, आदि जोंसन 2/25)।

सरसिज और तनीश चमके

मैन ऑफ द मैच सरसिज श्रीवास्तव (75 रन और दो विकेट) के हरफनमौला प्रदर्शन और तनीश असौदिया (दो विकेट) की अच्छी गेंदबाजी के दम पर राइजिंग स्टार क्रिकेट अकादमी ने अकादमी क्रिकेट टूर्नामेंट के लीग मैच में एसएससीए को चार रनों से हराया। **संक्षिप्त स्कोर** - राइजिंग स्टार क्रिकेट अकादमी : 34.4 ओवर में 140/10 (सरसिज श्रीवास्तव 75 रन, जिशनु बंसल 30 रन, पीयूष न्यूपाने 3/22, वंश शाह 2/18)। एसएससीए : 34.1 ओवर में 136/10 (प्रदीप कोहली 27 रन, देकु नौटियाल 20 रन, तनिष असौदिया 2/15, सरसिज श्रीवास्तव 2/24)।

रौनक की गेंदबाजी से गोल्डन ईगल जीता

मैन ऑफ द मैच दिल्ली अंडर-19 प्लेयर रौनक वाघेला की घातक गेंदबाजी 4/18, सुभाष 3/19, चिराग राणा 2/19 और धन्य नाकारा 49 रन ना. व कुश वाघेला 33 रन के शानदार खेल की बदौलत गोल्डन ईगल क्रिकेट क्लब ने तीसरे श्रीमती विद्या देवी मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट में यंग दिल्ली स्पोर्ट्स को नौ विकेट से हार दिया। संक्षिप्त स्कोर - यंग दिल्ली स्पोर्ट्स : 31 ओवर में 96/10 (व्योम अरोरा 27 रन, रौनक वाघेला 4/18, सुभाष 3/19, चिराग राणा 2/19)। गोल्डन ईगल क्लब : 11 ओवर में 99/1 (धन्य नाकारा 49 रन ना., कुश वाघेला 33 रन)।

हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के तीन न्यायाधीशों ने ली शपथ

शिमला, (एजेंसी) न्यायमूर्ति रंजन शर्मा, न्यायमूर्ति बिपिन चंद्र नेगी और न्यायमूर्ति राकेश कैंथला ने सोमवार को यहां हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के रूप में शपथ ग्रहण की। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने राजभवन में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में उन्हें पद की शपथ दिलाई। इस समारोह में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू और हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति ममीदन्ना सत्य रत्न श्री रामचन्द्र राव भी उपस्थित थे। मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना ने शपथ समारोह की कार्यवाही का संचालन किया और भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा जारी नियुक्ति पत्र पढ़े।

बारामूला हाईवे पर बरामद संदिग्ध वस्तु निष्क्रिय की

श्रीनगर, (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में सोमवार को श्रीनगर-बारामूला राष्ट्रीय राजमार्ग पर बरामद संदिग्ध उपकरण को बम निरोधक दस्ते (बीडीएस) ने निष्क्रिय कर दिया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। यह संदिग्ध उपकरण उत्तरी कश्मीर के बारामूला जिले के जंगम पट्टन इलाके में एक फ्लाईओवर के पास मिला था। सुरक्षा बलों ने उपकरण मिलने के तुरंत बाद, सड़क पर यातायात को रोक दिया और संदिग्ध वस्तु के चारों ओर घेराबंदी कर दी एवं इसकी जांच के लिए बीडीएस को भी बुलाया गया।

ब्रिटेन में निजी जेट इस्तेमाल करने पर घिरे ऋषि सुनक

लंदन, (एजेंसी)। देश में भी सफर के लिए प्राइवेट जेट का इस्तेमाल करने वाले ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक इस बारे में पूछे गए सवाल पर बिफर गए। उन्होंने इंटरव्यू बीच में ही छोड़ दिया। अपोजिशन लीडर्स भी सुनक के इस रवैये को गैर जिम्मेदाराना बता रहे हैं। भारतीय मूल के सुनक ब्रिटेन में जिस यात्रा को ट्रेन से करीब एक घंटे में पूरा कर सकते थे, उसके लिए भी उन्होंने प्लेन का इस्तेमाल किया। दूसरी तरफ, सुनक का दावा है कि वो वक्त का सबसे सही इस्तेमाल करना चाहते हैं, इसलिए प्राइवेट जेट यूज करते हैं।प्राइवेट जेट के इस्तेमाल को लेकर सुनक कई महीनों से अपोजिशन और मीडिया के निशाने पर हैं।

डिप्टी सीएम शिवकुमार को राहत, याचिका खारिज

नई दिल्ली, (एजेंसी)। उच्चतम न्यायालय ने कर्नाटक उच्च न्यायालय के उस आदेश के खिलाफ केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की याचिका सोमवार को खारिज कर दी, जिसमें कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार के कथित तौर पर अर्जित आय से अधिक संपत्ति की जांच पर अंतरिम रोक लगा दी गई थी। न्यायमूर्ति बी आर गवई, न्यायमूर्ति सी टी रविकुमार और न्यायमूर्ति संजय कुमार की पीठ ने संबंधित पक्षों की दलीलें सुनने के बाद याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया। कर्नाटक कांग्रेस अध्यक्ष शिवकुमार की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता ए एम सिंघवी ने दलील देते हुए कहा कि मामला उच्च न्यायालय की खंडपीठ के समक्ष लंबित है।

आज का इतिहास

- 1914: जर्मनी द्वारा प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत।
- 1995: हब्बल दूरबीन ने शनि के एक और चन्द्रमा की खोज की।
- 2000: ईरान में महिलाएं भी इमाम बनीं।
- 2004: श्रीलंका ने प्रेमदासा स्टेडियम में आयोजित फ़ाइनल मैच में भारत को 25 रनों से हराकर एशिया कप जीत लिया। सनत जयसूर्या 'मैन आफ़ द सिरीज' बने।
- 2005: सऊदी अरब के बादशाह फहद बिन अब्दुल अजीज का निधन, दिवंगत बादशाह के भाई शाहजादा अब्दुल्ला बिन अब्दुल अजीज को देश का नया शासक नियुक्त किया गया।
- 2006: जापान ने दुनिया की पहली भूकम्प पूर्व चेतावनी सेवा शुरू की।
- 2007: वियतनाम के हनोई शहर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड में भारतीय दल के छः सदस्यों ने तीन रजत पदक जीते।

प्रयागराज में हेलीकॉप्टर से कांवड़ियों पर फूलों की वर्षा

प्रयागराज, (ब्यूरो)। सोमवार को प्रयागराज जिला प्रशासन ने जिले के विभिन मंदिरों और घाटों पर कावड़ियों के ऊपर हेलिकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गई। मुख्यमंत्री योगी के निर्देश पर सोमवार को सावन मास के अवसर पर जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री, डीसीपी गंगापार अभिषेक भारती, डीसीपी अभिनव त्यागी ने दशाश्वमेध घाट सहित अन्य घाटों, कांवड़ यात्रा मार्गों, मनकामेश्वर मंदिर, पड़िला महादेव मंदिर पर कावड़ियों/श्रद्धालुओं पर हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा की।

किन्नर संत और महात्माओं ने की पूजा-अर्चना

किन्नर संत-महात्माओं ने सावन के चौथे सोमवार को सोमवार को नागवासुकी मंदिर दारागंज पर विधि विधान से पूजन-अर्चन किया। उप्र किन्नर वेलफेयर बोर्ड की वरिष्ठ सदस्य एवं किन्नर अखाड़ा उप्र की प्रदेश अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी कौशल्यानंद गिरी (टीना मां) महराज के नेतृत्व में दशाश्वेध-घाट से गंगाजल लेकर नागवासुकी मंदिर पहुंचे। विधि विधान से भगवान नागवासुकी का पूजन गंगा जल, दूध, दही, शहद और घी से किया। इसके बाद बेलपत्र, मदार, शमी, बेल, सफेद फूल सहित अन्य से श्रृंगार किया गया। महामंडलेश्वर स्वामी कौशल्यानंद गिरी ने कहा कि भगवान शिव सभी लोगों का कल्याण करते हैं, सभी की बाधाओं को दूर करते हैं ऐसे में सभी लोग भगवान शिव का विधि विधान से पूजन कर मनोवांछित फल प्राप्त कर सकते हैं।

रामनवमी हिंसा जांच को रोकने के प्रयास से कलकत्ता हाईकोर्ट असंतुष्ट

नई याचिका पर सुनवाई जारी

कोलकाता, (एजेंसी)। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने रामनवमी के अवसर पर पश्चिम बंगाल के विभिन्न हिस्सों में हुई हिंसा मामले पर सोमवार को एक नई याचिका की सुनवाई करते हुए मामले की केंद्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) से करायी जा रही जांच को कथित रूप से रोके जाने के राज्य सरकार के प्रयासों पर असंतुष्टि जतायी।

न्यायालय से जुड़े सूत्रों ने यह जानकारी दी। कलकत्ता उच्च न्यायालय के एकल पीठ के न्यायाधीश न्यायमूर्ति जय सेनगुप्ता ने राज्य सरकार के वकीलों द्वारा एनआईए जांच को रद्द करने की मांग को लेकर एक नई याचिका दायर करने के बाद अपना असंतोष और पीड़ा व्यक्त की। एक जनहित याचिका के बाद कलकत्ता उच्च न्यायालय द्वारा इस आशय का आदेश दिए जाने के बाद इस साल कथित रामनवमी हिंसा की एनआईए जांच शुरू हुई। न्यायमूर्ति सेनगुप्ता ने कहा, कि इस कोर्ट द्वारा मामले की एनआईए जांच कराये जाने के आदेश को रूकवाने के लिए उच्चतम न्यायालय में जाकर आप पहले ही लाखों रुपये खर्च कर चुके हैं और जब आपको वहां से कोई राहत नहीं मिली तो अब आपने एक नयी याचिका दायर कर दी है। यह सब लगातार नहीं चल सकता है।

न्यायाधीश ने कहा, आप अदालत के आदेशों का पालन न करके मामले को और अधिक जटिल बना रहे हैं। न्यायाधीश ने राज्य सरकार को यह भी आदेश दिया कि वह मंगलवार दोपहर 12 बजे तक सीसीटीवी फुटेज, वीडियो फुटेज समेत सभी प्रासंगिक दस्तावेज एनआईए को सौंप दें।

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने आदेश बरकरार रखा

राज्य सरकार हालांकि, इस आदेश को चुनौती देने के लिए शीर्ष अदालत गई थी। गत 24 जुलाई को शीर्ष अदालत ने कलकत्ता उच्च न्यायालय की खंडपीठ के आदेश को बरकरार रखा और सरकार को केंद्रीय जांच एजेंसी के साथ सहयोग करने का निर्देश दिया। अदालत के सूत्रों ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा कथित तौर पर 2023 में हावड़ा सहित रामनवमी हिंसा के मामलों में आवश्यक दस्तावेजों को स्थानांतरित नहीं करके जांच एजेंसी के साथ सहयोग नहीं करने के बाद एनआईए ने कलकत्ता उच्च न्यायालय से हस्तक्षेप की मांग की थी।

ज्ञानवापी: मुस्लिम समाज को दुरुस्त करना चाहिए ऐतिहासिक गलती-योगी

ज्ञानवापी में ज्योर्तिलिंग हैं... देव प्रतिमाएं हैं, पूरी दीवारें चिल्ला-चिल्लाकर क्या कह रही हैं

लखनऊ, (ब्यूरो)। सूबे के मुखिया योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा कि अगर ज्ञानवापी को हम मस्जिद कहेंगे तो विवाद होगा। भगवान ने जिसको दृष्टि दी है, वो देखे न। त्रिशूल मस्जिद के अंदर क्या कर रहा है? हमने तो नहीं रखे हैं न। ज्योर्तिलिंग हैं... देव प्रतिमाएं हैं। पूरी दीवारें चिल्ला-चिल्लाकर क्या कह रही हैं। उन्होंने कहा- मुस्लिम समाज को ऐतिहासिक गलती दुरुस्त करनी चाहिए। मुझे लगता है कि ये प्रस्ताव मुस्लिम समाज की तरफ से आना चाहिए कि साहब... ऐतिहासिक गलती हुई है। उस गलती के लिए हम चाहते हैं कि समाधान हो।

उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थित ज्ञानवापी मस्जिद सुर्खियों में आते ही विवादों के घेरे में आ गई थी। जिसके बाद इस पर अपना दावा करने वाले दोनों पक्षों ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। उसके बाद राजनीति भी अपने स्तर पर गरमाई हुई है। इस बीच उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री के बयान ने मामले को तूल दे दिया है।

देश संविधान से चलेगा, मत और मजहब से नहीं

देखिए मैं ईश व का भक्त हूं, लेकिन किसी पाखंड में विश्वास नहीं करता। आपका मत, आपका मजहब, अपने तरीके से होगा, अपने घर में होगा। अपनी मस्जिद, अपने इबादतगाह तक होगा। सड़क पर प्रदर्शन करने के लिए नहीं और इसको आप जो हैं किसी भी अन्य तरीके से दूसरे पर थोप नहीं सकते। नेशन फर्स्ट (देश पहले है)। अगर देश में किसी को रहना है तो राष्ट्र को सर्वोपरि मानना है, अपने मत और मजहब को नहीं।

इंडिया गठबंधन को इंडिया नहीं बोलना चाहिए

इंडिया गठबंधन को इंडिया नहीं बोलना चाहिए। यह तो डॉट कॉम ग्रुप है। चोला बदलने से उन्हें पिछले कर्मों से मुक्ति नहीं मिल जाएगी। मैं पिछले सवा 6 साल से मुख्यमंत्री हूं। 2017 से उत्तर प्रदेश में कोई दंगा तो नहीं हुआ। बड़ी-बड़ी बातें करने वाले लोग देखें कि चुनाव कैसे होते हैं। पंचायत चुनाव, नगर निकाय चुनाव, विधानसभा चुनाव हुए, वेस्ट बंगाल में भी चुनाव हुए, वहां क्या हाल हुए। देखा तो है ही न। क्या वेस्ट बंगाल बनाना चाहते हैं देश को। कुछ लोग सत्ता में आकर जबरन पूरी व्यवस्था को कैद कर देना चाहते हैं। जो हमें वेस्ट बंगाल में देखने को मिला। कैसे वहां विरोधी दलों के लोगों को मारा गया। ये चीजें आंखों को खोलने वाली हैं। उस पर कोई बोलता नहीं। 1990 में जो कुछ कश्मीर में हुआ, उस पर सब मौन हैं। आखिर ये दोहरा दृष्टिकोण क्यों?

निरहुआ ने किया समर्थन

आजमगढ़ से बीजेपी सांसद दिनेश लाल यादव निरहुआ ने सीएम योगी के बयान का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि अभी भी समय है विपक्ष प्रायश्चित करें और अयोध्या में बन रहे श्री राम मदिर में जाकर हनुमान चालीसा का पाठ करें। उन्होंने कहा कि बिल्कुल सही कहा है जो गलती बाप ने की वह आप न करें। अयोध्या में राम मंदिर बन रहा है वहां जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

प्रेमचन्द्र जयन्ती राज्य स्तरीय समारोह आयोजित

जयपुर, (ब्यूरो)। जवाहर कला केन्द्र और राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ के तत्वावधान में सोमवार को जवाहर कला केन्द्र के रंगायन सभागार में राज्य स्तरीय प्रेमचन्द जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। वैचारिक सत्र में प्रतिष्ठित कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ ने 'प्रेमचन्द की विरासत के मायने' विषय पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा कि बीसवीं शताब्दी में भारत की स्थितियों पर प्रेमचन्द ने समाज की जिन विद्रूपताओं, विसंगतियों, नारी, दलित, वंचित वर्ग की चिंताओं को अपनी कलम से रेखांकित किया वह आज भी प्रासंगिक है। उनमें समष्टि से जुड़ने की चेतना थी। वे भारतीय मनोविज्ञान के माहिर थे।

कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ ने दिया अपना व्याख्यान

सामाजिक सरोकारों के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता थी। प्रेमचन्द समय और समाज के प्रखर आलोचक रहे। वे कहानी जीवन का अंग मानते थे। आज उनकी समावेशी और साझा संस्कृति की विरासत को समृद्ध करने की आवश्यकता है।

प्रतिष्ठित साहित्य आलोचक डॉ. राजाराम भादू ने विषय का परावर्तन करते हुए कहा कि 20वीं सदी सबसे ज्यादा परिवर्तनों की शताब्दी रही है।

बांग्लादेश से पानी के साथ बंगाल आई हिलसा मछलियां

कोलकाता (एजेंसी)। पिछले कुछ साल से हिलसा मछली का अकाल झेल रहे पश्चिम बंगाल में इस बार काफी अनुकूल माहौल है और बांग्लादेश से पानी के बहाव के साथ बड़ी संख्या में ये मछलियां इधर आ रही है जो मछुआरों के लिए शुभ संकेत है।

गत 15 जून को हालांकि पश्चिम बंगाल सरकार का समुद्र में हिलसा पकड़ने पर लगा दो महीने का प्रतिबंध खत्म हो गया। प्रतिबंध खत्म होने के बाद मछुआरे करीब ढाई हजार ट्रॉलर लेकर हिल्सा पकड़ने के लिए समुद्र पार कर गए थे। भले ही हिलसा एक महीने तक जाल में फंसी रहे लेकिन मछुआरों के चेहरे पर तीन से चार दिन तक मुस्कान रहती है। तब से हिलसा के झुंड उनके जाल में फंसते जा रहे हैं।

हिलसा के झुंड आने से मछुआरे खुश, कीमत अच्छी मिली

काकद्वीप मछुआरा विकास संघ के सचिव बिजन मैती ने 29 जुलाई को कोलकाता के एंटाली मार्केट में मछली बाजार में मछुआरों से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि अब पानी का प्रवाह बंगलादेश से भारत की ओर हो रहा है जिससे हिलसा के झुंड यहां आ रहे हैं। शनिवार को दक्षिण 24 परगना के नामखाना स्थित नागेंद्र थोक बाजार में दो सौ से अधिक मछली पकड़ने वाले ट्रॉलर हिल्सा लेकर वापस लौट आए। हिलसा की मात्रा दो हजार टन थी। हिल्सा का साइज 500 से 800 ग्राम था। रविवार को थोक बाजार में यह हिल्सा 530 रुपए प्रति किलो की दर से बिकी। अंटाली मार्केट के खुदरा बाजार में 500 से 800 ग्राम वजन की मछली 700 से 900 रुपए की कीमत पर बेची गई।

1550 अमरनाथ तीर्थ यात्रियों का जत्था रवाना

जम्मू, (एजेंसी)। 'बम बम भोले' के जयकारों के बीच 1550 तीर्थयात्रियों का एक नया जत्था सोमवार को यहां भगवती नगर आधार शिविर से दक्षिण कश्मीर हिमालय में स्थित अमरनाथ गुफा के लिए रवाना हुआ। 66 वाहनों के काफिले में 1550 तीर्थयात्री आधार शिविर से रवाना हुए । इस जत्थे में 1068 तीर्थयात्रियों का एक समूह 43 वाहनों के काफिले में पहलगाम के लिए रवाना हुआ।

अनाज सौदे शुरू करने और निर्यात गारंटी के लिए प्रयासरत है तुर्की

अंकारा, (एजेंसी)। तुर्की काला सागर अनाज पहल को फिर से शुरू करने एवं रूसी खाद्य निर्यात के लिए गारंटी प्राप्त करने के लिए पश्चिमी देशों के साथ बातचीत कर रहा है। अंकारा में बातचीत में शामिल एक सूत्र ने सोमवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जहाँ तक मुझे पता है, निकट भविष्य में रूस और तुर्की के राष्ट्रपतियों के बीच एक उच्च-स्तरीय टेलीफोन वार्तालाप की तैयारी की जा रही है। अन्य विषयों के अलावा, हम रूसी भोजन को संसाधित करने और वितरित करने में कैसे मदद कर सकते हैं, इस पर विशिष्ट विकल्प जरूरतमंद देशों पर चर्चा की जाएगी। प्रतिनिधिमंडलों ने कुछ सुझाव प्रस्तुत किए और उस पर निर्णय उच्चतम स्तर पर किया जाएगा।

लोकसभा में सिनेमेटोग्राफ संशोधन विधेयक पारित

नई दिल्ली, (ब्यूरो) मणिपुर मुद्दे को लेकर विपक्ष के भारी हंगामे एवं नारेबाज़ी के बीच लोकसभा ने सिनेमेटोग्राफ संशोधन विधेयक 2023 को संक्षिप्त चर्चा के बाद सोमवार को ध्वनिमत से पारित कर दिया जिसमें सिनेमा पायरेसी को रोकने के लिए तीन साल तक के कारावास एवं तीन लाख रुपए के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। आपको बता दें कि यह विधेयक पहले ही राज्यसभा से पास किया हो चुका है। एक बार के स्थगन के बाद अपराह्न दो बजे सदन के समवेत होने पर पीठासीन अधिकारी किरीट सोलंकी ने जैसे ही आवश्यक दस्तावेज सदन के पटल पर रखवाना शुरू किया, वैसे ही तख्तियां उठाये विपक्षी सदस्यों ने सदन के बीचोंबीच आकर नारेबाजी शुरू कर दी।

पायरेसी को रोकने तीन साल तक के कारावास एवं तीन लाख रुपए के जुर्माने का प्रावधान

श्री सोलंकी ने आवश्यक दस्तावेज सदन के पटल पर रखवाये और तत्पश्चात वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने द्रवीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी), प्रोपेन एवं ब्यूटेन के आयात शुल्क बढ़ाने के संवैधानिक प्रस्ताव को ध्वनिमत से पारित कराया।

इसके बाद जनजातीय कार्य मंत्री अर्जुन मुंडा ने दिसंबर 2022 में लोकसभा से पारित संविधान (अनुसूचित जनजाति आदेश पांचवा संशोधन) विधेयक 2022 और संविधान (अनुसूचित जनजाति आदेश तीसरा संशोधन) विधेयक 2022 में राज्यसभा द्वारा किये गये संशोधन को स्वीकार करने के दो प्रस्ताव किये जिसे सदन ने ध्वनिमत से स्वीकृति प्रदान की। इसके पश्चात सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने सिनेमेटोग्राफ संशोधन विधेयक 2023 पेश किया और कहा कि भारत का सिनेमा उद्योग विश्व का सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है।

'जवान' से पहला सॉन्ग 'जिंदा बंदा' हुआ रिलीज

मुंबई। शाहरुख की फिल्म 'जवान' का फैंस दिल थामकर इंतजार कर रहे हैं। हाल ही में फिल्म का प्रीव्यू रिलीज हुआ था जिसे फैंस ने खूब पसंद किया। प्रीव्यू में किंग खान के अलग-अलग लुक देख फैंस ने दातों तले अंगुली दबा ली थी। वहीं फैंस की एक्साइटमेंट को और बढ़ाते हुए इस फिल्म के पहले सॉन्ग 'जिंदा बंदा' को भी सोमवार को रिलीज कर दिया गया है। फिल्म का पहला सॉन्ग काफी धांसू और जबरदस्त है। इस गाने का नाम हिंदी में जिंदा बंदा, तमिल में वंधा एडम और तेलुगु में धुम्मे धुलिपेला है। गाने में किंग खान काफी यंग और हैंडसम लग रहे हैं।

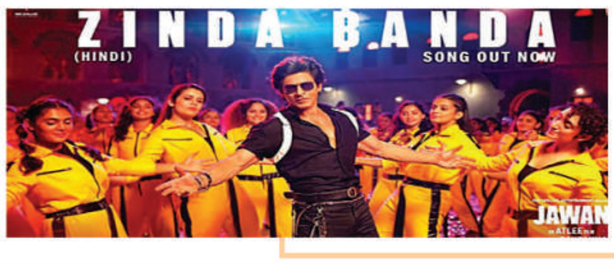

Filmi तड़का

ओएमजी-2 में अक्षय का कैरेक्टर बदला जा सकता है,भगवान शिव का रोल कर रहे हैं

मुंबई। सेंसर बोर्ड ने ओएमजी-2 के ट्रेलर को यूए सर्टिफिकेट दे दिया है। अब ट्रेलर रिलीज का रास्ता साफ हो गया है। हालांकि फिल्म को कौन सा सर्टिफिकेट देना है, इस पर सेंसर बोर्ड की एक राय नहीं बनी है। बोर्ड ने मेकर्स को फिल्म में 20 कट और 15 बदलाव करने के सुझाव दिए हैं। सबसे बड़ी बात ये है कि फिल्म में अक्षय कुमार के कैरेक्टर को लेकर भी बदलाव किया जा सकता है। पहले फिल्म में अक्षय कुमार को भगवान शिव का अवतार बताया जा रहा था, लेकिन अब शिव का दूत बताया जा सकता है।

मोदी के साथ कार्यक्रम में शिरकत करने के फैसले पर पुनर्विचार करें शरद पवार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। शिवसेना (यूटीबी) के सांसद अरविंद सावंत ने सोमवार को कहा कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के नेता शरद पवार को उस कार्यक्रम में शिरकत करने के अपने फैसले पर पुनः विचार करना चाहिए जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। पवार का एक अगस्त को पुणे में लोकमान्य तिलक स्मारक मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने का कार्यक्रम है, जहां वह प्रधानमंत्री मोदी के साथ मंच साझा करेंगे। विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' में शामिल विभिन्न दलों के नेताओं ने इस मुद्दे को उठाते हुए कहा है कि यह गठबंधन के लिए ठीक नहीं होगा।

कांग्रेस ने पांच चुनावी राज्यों के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किए

नई दिल्ली, (ब्यूरो)। कांग्रेस ने आगामी महीनों में पांच राज्यों मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम में होने वाले विधानसभा चुनावों की तैयारियों के मद्देनजर सोमवार को पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की।

अभा कांग्रेस समिति के संगठन महासचिव के सी वेणुगोपाल ने सोमवार को यहां बताया कि पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पर्यवेक्षकों की नियुक्ति को मंजूरी दी है। वरिष्ठ पार्टी नेता रणदीप सिंह सुरजेवाला मध्यप्रदेश के लिए वरिष्ठ पर्यवेक्षक और चंद्रकांत हांडोरे पर्यवेक्षक नियुक्त किए गए हैं। इसी प्रकार छग के लिए प्रीतम सिंह वरिष्ठ पर्यवेक्षकऔर मीनाक्षी नटराजन पर्यवेक्षक नियुक्त की गयी है। उन्होंने बताया कि वरिष्ठ नेता मधुसूदन मिस्त्री को राजस्थान के लिए वरिष्ठ पर्यवेक्षक की जिम्मेदारी दी गयी है जबकि शशिकांत सेंथिल पर्यवेक्षक का दायित्व संभालेंगे। पश्चिम बंगाल की कांग्रेस नेता दीपा दासमुंशी तेलंगाना के लिए वरिष्ठ पर्यवेक्षक और डॉ सिरिवेल्ला प्रसाद पर्यवेक्षक होंगे। वहीं सचिन राव को मिजोरम का पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है।

डकैती की योजना बना रहे 7 अभियुक्त हथियार व स्कार्पियो सहित गिरफ्तार, दो फरार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक गाजीपुर ओमवीर सिंह द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक नगर के कुशल मार्गदर्शन में क्षेत्राधिकारी नगर के निकट पर्यवेक्षण में सोमवार की रात को गाजीपुर में हत्या व डकैती सहित कई गम्भीर अपराध को अंजाम देने वाले गिरोह के कुल 07 अभियुक्तो को स्वाट तथा सर्विलांस टीम व थाना कोतवाली गाजीपुर पुलिस द्वारा न्यू प्रोफेसर कालोनी गोराबाजार मे मुख्तार अंसारी का गुर्गा भीम सिंह के मकान से किया गिरफ्तार किया गया। मौके से अंधेरे का लाभ लेकर मुख्तार अंसारी के गुर्गें भीम सिंह का लड़का अमन सिंह व करण्डा थाने का हीस्ट्रीशीटर सुन्दरम सिंह उर्फ धनजी फरार हो गया, उल्लेखनीय है कि भीम सिंह आईइस-191 गैंग का सक्रिय एवं महत्वपूर्ण सदस्य है जिसको गैगेस्टर एक्ट में आजीवन कारावस की सजा भी हो चुकी है जो वर्तमान में जिला कारागार में निरुद्ध हैं। गिरफ्तारशुदा अभियुक्तगण गौरव सिंह उर्फ सनी सिंह, राकेश

सिंह उर्फ गुड्डू व अमन पाण्डेय द्वारा पूर्व में गिरोह बनाकर थाना सैदपुर क्षेत्रान्तर्गत देवचन्दपुर पेट्रोल पम्प पर डकैती व हत्या की घटना कारित की गयी थी, जिसमें गैंगेस्टर व रा0सु0का0 की कार्यवाही की गयी थी, जिनके कुछ साथी वर्तमान में कारागार में निरुद्ध हैं। मुकदमें के खर्चे व अन्य अपराधिक गतिविधियों में होने वाले खर्चों के लिए पुनः अपने साथियों के साथ डकैती की योजना भीम सिंह उपरोक्त के घर पर उसके लड़के अमन सिंह के साथ बना रहे थे। गिरफ्तार अभियुक्तगणो के कब्जे से 02 अदद चार पहिया वाहन स्कार्पियो, 01 अदद पिस्टल .32 बोर नाजायज मय 05 अदद जिन्दा कारतूस, 01 अदद रिवाल्वर .32 बोर नाजायज मय 02 अदद जिन्दा कारतूस व 01 अदद देशी तमचा नाजायज .315 बोर व 04 अदद जिन्दा कारतूस की बरामदगी करते हुए अन्तर्गत धारा 399/402 भादवि व 3/25 आर्स एक्ट थाना कोतवाली गाजीपुर में गिफ्तार किया गया, तथा फरार व गिरफ्तार शुदा अभियुक्तगण के विरुद्ध विधिक कार्यवाही की जा रही है। फरार अभियुक्तगण के विरुद्ध गिरफ्तारी हेतु प्रयास जारी हैं।

ट्रैक्टर के धक्के से बाइक सवार ग्रामीण बैंक के एकाउंटेंट की मौत

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। वाराणसी फोरलेन पर नंदगंज थाना क्षेत्र के अतरसुआ गांव के पास सोमवार की देर रात ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवार बैंक अकाउंटेंट की मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। परिजनों के रोने- बिलखने से पूरे मुहल्ले में चीख-पुकार मच गई। जानकारी के अनुसार शहर कोतवाली के रजदेपुर देहाती रौजा निवासी सुजीत कुमार यादव उर्फ मोनू उम्र 38 वर्ष पुत्र राजाराम राम यादव वाराणसी में मकान के चल रहे निर्माण कार्य को देखने के लिए बाइक से गए थे। वहां से देर शाम घर वापस लौट रहे थे। तभी अतरसुआ गांव के पास गलत दिशा में आ रही तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने सामने से टक्कर मार दी। आवाज सुनकर जब- तक आस-पास के लोग घटना स्थल पहुंचते चालक ट्रैक्टर लेकर फरार हो गया। ग्रामीणों ने घायल को उपचार के लिए जिला अस्पताल लाया। जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने हादसे की सूचना परिजनों को दी। परिवार के लोग शव देखकर रोने- बिलखने लगे। पुलिस ने देर रात शव को मर्चरी हाउस में रखवा दिया। दूसरे दिन थाना पहुंचकर परिजनों ने कागजी कार्रवाई पूर्ण किया। इसके बाद पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया जहा दोपहर लगभग 3 बजे पोस्टमॉर्टम के पश्चात शव परिजनों को सौंप दिया गया। मृतक फत्तेहपुर अटवा मोड़ स्थित काशी गोमती ग्रामीण बैंक में एकाउंटेंट के पद पर तैनात थे। मृतक सुजीत के पिता सब इंस्पेक्टर से रिटायर्ड है तथा एक बड़ा भाई व मां है। मृतक अपने पीछे पत्नी प्रियंका तथा एक लड़का जिसकी उम्र लगभग 120साल है को छोड़ गया। इस संबंध में थानाध्यक्ष कमलेश पाल ने बताया कि मृतक के भाई की तहरीर पर अज्ञात ट्रैक्टर चालक के खिलाफ मुकदमा दर्जकर आगे करवाही किया जा रहा है।

संक्षिप्त खबरें

बाएफ संस्था द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

प्रखर गोसाई की बाजार /आजमगढ़। बाएफ संस्था व एचडीएफसी के वित्तीय सहयोग से विकासखंड लालगंज के बायफ केंद्र कालीचबाद के ग्राम नई कोट में पशुपालकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें डॉक्टर वी के सिंह द्वारा पशुपालकों को मिनरल संतुलित आहार जिसमें विशेष रूप से हरे चारे व नैपियर घास के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। वहीं डॉक्टर ए के मिश्र द्वारा अच्छे वाला सर्टेड सीमेन के उपयोग करने की विस्तृत जानकारी दी गई बाएफ के टेक्निकल ऑफीसर डॉक्टर अशोक मिश्र द्वारा दिए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद प्रभारी हरिशंकर पांडेय ,केंद्र प्रभारी संतोष यादव,ग्राम प्रधान विशाल यादव सहित महिला और पुरुष दोनों पशुपालक दर्जनों की संख्या में उपस्थित रहे।

श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना वाराणसी टीम द्वारा वाराणसी एडीएम को दिया गया पत्रक

प्रखर वाराणसी। राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना ने पत्र देते हुए कहा है कि ईडब्ल्यूएस में मकान जमीन प्लाट की शर्तों को हटाया जाए और आयु में 5 वर्ष की छूट दी मनजाए, कोरना की वजह से जिन अभ्यर्थियों का उम्र की

सीमा बढ़ गई है। उन्हें भी उम्र में छूट दिया जाए। सरकार सामान्य वर्ग के अभ्यर्थियों के साथ भेदभाव करना बंद करें और राजस्थान सरकार की तरह ही छूट दिया जाए। पत्रक देते समय सैकड़ो करणी सैनिक उपस्थित रहे थे। साथ ही जिला अध्यक्ष वाराणसी आलोक कुमार सिंह ने कहा कि अगर सरकार हमारी बातो नहीं मानती है, तो प्रदेश अध्यक्ष राकेश सिंह रघुवंशी के नेतृत्व मे पुरे प्रदेश सवर्ण समाज द्वारा व्यापक आंदोलन किया जाएगा।

जौनपुर एसपी का एक्शन प्लान, आधा दर्जन से अधिक थानेदार का तबादला

प्रखर जौनपुर। पुलिस अधीक्षक डॉ. अजय पाल शर्मा ने जनपद में आधा दर्जन से अधिक थाना प्रभारीयो का स्थानांतरण करते हुए कार्य क्षेत्र में बड़ा बदलाव किया है। इस क्रम में थाना कोतवाली सदर प्रभारी रहे सतीश सिंह को थाना सरायख्वाजा का प्रभारी बना दिया है। सरायख्वाजा प्रभारी

अखिलेश मिश्रा नगर कोतवाली का प्रभार दिया गया है। जफराबाद के थानाध्यक्ष राजाराम द्विवेदी अब थानाध्यक्ष मुंगराबादशाहपुर होंगे जबकि विवेक तिवारी को थानाध्यक्ष बक्शा बनाये गये। उदय प्रताप सिंह को पुलिस लाइन से मीरगंज का थानाध्यक्ष बनाया गया है। दीनानाथ पान्डेय को महाराजगज का नया थानाध्यक्ष बनाया गया वहां थानाध्यक्ष रहे शैलेन्द पांडेय को स्वाट टीम में भेजा गया। मछलीशहर से केके चौफे अब थानाध्यक्ष जफराबाद होगे।यजुर्वेन्द सिंह को बक्शा से थाना मछलीशहर का प्रभारी बनाया गया है।

ऑपरेशन दृष्टि के अंतर्गत रामनगर में कैमरे के लिए सहयोग करने वाले व्यापारियों का थाना प्रभारी ने किया सम्मान

प्रखर रामनगर वाराणसी। ऑपरेशन दृष्टि के अंतर्गत रामनगर पुलिस द्वारा जन सहयोग से सीसीटीवी कैमरे नगर के विभिन्न स्थलों पर लगवाए जाने की शुरूआत आज रामनगर थाना प्रभारी भरत उपाध्याय ने कर दिया। इसके लिए उन्होंने उन सभी व्यापारियों का धन्यवाद किया, और उनका माल्यार्पण कर अंगवस्त्रम प्रदान कर आभार व्यक्त किया , जिन्होंने इस संदर्भ में नगर और प्रशासन के सहयोग के लिए अपनी तरफ से कैमरे का सहयोग प्रदान किया। ऑपरेशन दृष्टि के अंतर्गत नगर में अपराध रोकथाम एवम अपराधियों पर अंकुश के लिए नगर के जिन सम्मानित व्यापारियों द्वारा रामनगर पुलिस को सीसीटीवी कैमरा हार्ड डिस्क डीवीआर वायर संपूर्ण सेट प्रदान किया गया जिसमें साहनी लस्सी भंडार के अधिष्ठाता प्रमुख समाजसेवी बबलू साहनी और व्यापारी नेता अनिल गुप्ता थे। इस क्रम में आज मुंशी खाना चौराहे से कैमरे लगाने की शुरूआत कर दी गई ,थाना प्रभारी भरत उपाध्याय ने बताया कि अभी नगर के कई अन्य व्यापारीगण भी सहयोग के लिए आगे आए हैं ,और आगे कई जगहों पर कैमरे लगाए जाएंगे।

सेवा निर्मित शिक्षक एहसान अहमद एवं सेवानिवृत्त कर्मचारी अनवार का विदाई समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया

प्रखर गंभीरपुर /आजमगढ़। शिबली नेशनल कालेज में शिक्षक एवं कर्मचारी का विदाई समारोह मनाया गया जिसमें प्रबंधक मिर्जा महफूज रहमान ने अंग वस्त्र पहना कर स्वागत किया, उन्होंने बताया कि एक शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को दिए गए ज्ञान से केवल विद्यार्थी ही नहीं प्रकाशित होता अपितु पूरा देश प्रकाशित होता है शिक्षक एक अच्छे समाज का निर्माण करता है शिक्षक के महत्व को हमारा समाज कभी नकार नहीं सकता और ना ही उस पर अविश्वास कर सकता है शिक्षक अपने ज्ञान के प्रकाश से समस्त सृष्टि को प्रकाशित करता है तथा प्रधानाचार्य जैद नुरुल्ला द्वारा उपहार भेंट किया , संगठन मंत्री रियाज अहमद ने माल्यार्पण करते हुए

स्वागत किया ,अबरार अहमद सेवानिवृत्त अध्यापक ने इस अवसर पर बोलते हुए पेशन की उपयोगिता पर प्रकाश डाला एवं एनपीसी से आच्छादित शिक्षक एवं कर्मचारी को पुरानी पेंशन की लड़ाई में शामिल होने का आह्वान किया इस मौके पर प्रबंधक महोदय द्वारा उक्त शिक्षक एवं कर्मचारी के सेवाकाल का विशेष उल्लेख किया ,कार्यक्रम का संचालन तारीख एजाज सहायक अध्यापक ने किया तथा सेवानिवृत्त शिक्षक एवं कर्मचारी के अच्छे स्वास्थ्य की कामना की इस अवसर पर परवेज अहमद ,वसीम अख्तर ,अशोक कुमार गौड़, रिहाना यासमीन ,मोहम्मद खालिद ,रुखसार अहमद ,उपस्थित रहे।

स्वच्छ पर्यावरण के लिए पेड़ जरूरी : प्रो. निर्मला एस. मौर्य

प्रखर जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय परिसर की हरियाली के लिए कुलपति प्रो. निर्मला एस. मौर्य संकल्पित हैं। अक्सर वह समारोह में सरकार के पौधरोपण अभियान की प्रशंसा करतीं हैं। साथ में खुद भी इसके लिए प्रयासरत रहती हैं। उन्होंने पौध भिक्षा अभियान के तहत नगर पालिका अध्यक्ष मनोरमा मौर्या से सावन महोत्सव में चर्चा की थी। नपा अध्यक्ष के निर्देश पर समाजसेवी विवेक मौर्य ने मंगलवार को विश्वविद्यालय को 150 पौधे भेंट किए। इस अवसर पर कुलपति ने नपा अध्यक्ष के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पेड़-पौधे लगाना अपने अच्छे भविष्य के निर्माण की नींव रखने के बराबर है, इसीलिए कहा जाता है वृक्ष है तो जीवन है। पेड़ पौधे हमारे जीवन को स्वच्छ तथा सुरक्षित बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। पेड़- पौधे के माध्यम से ही हमारा पर्यावरण साफ व स्वच्छ दिखाई देता है। इतना ही नहीं पौधों

के माध्यम से हमे कई आयुर्वेदिक औषधियां प्राप्त होती है, जिनका प्रयोग आप अपने इस्तेमाल के लिए कर सकते हैं। पौधारोपण पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन में सहायक साबित होता है। उन्होंने कहा कि पेड़ पौधे लगाने से हमारा वातावरण संतुलित होता है तथा जलवायु परिवर्तन भी ठीक होता है। गांव का जीवन पेड़-पौधे पर ही आश्रित है। यहां के लोग शहरी लोग की तुलना में काफी स्वस्थ पाए जाते हैं। समाजसेवी विवेक मौर्या द्वारा भेंट किए गए पौधों में जामुन, सागौन, नीम, आम, फॉक्सटेल पाम, बोतल पाम, बौगैनविलिया कामिनी, पीपल शामिल है ' इस अवसर पर कुलसचिव महेंद्र कुमार, वित्त अधिकारी संजय कुमार राय, प्रो. मानस पांडेय. प्रो. प्रदीप कुमार, सहायक कुलसचिव दीपक सिंह, डा. धर्मेंद्र सिंह, डा. विनय वर्मा, डॉ. राजीव कुमार, डा आलोक दास, डॉ झांसी मिश्रा समेत विभाग के शिक्षक मौजूद थे।

विकास भवन में कटे हुए पेड़ मामले में सत्याग्रह डीडीओ, एसडीएम तथा बीएसए के हस्तक्षेप पर टला

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मगंलवार को विकास भवन मे राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के जिलाध्यक्ष दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा सुबह 10 बजे से सत्याग्रह आंदोलन का शुभारंभ किया गया जो विकास भवन के प्रांगण में स्थित हरा पेड़ को कांटे जाने को लेकर के मुख्य विकास अधिकारी को दिनांक 31 जुलाई 23 को 24 घंटे अल्टीमेटम दिया गया था कि हरा पेड़ काटने में जो भी जिम्मेदार व्यक्ति है उसके ऊपर विधिक कार्यवाही की जाए। जबकि एक तरफ माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्य द्वारा 22 जुलाई से वन महोत्सव मनाया जा रहा है और दूसरी तरफ जनपद गाजीपुर के प्रभारी मुख्य विकास अधिकारी हैं और उनके प्रांगण से हरा पेड़ का काटा जाना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है जिसको राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के जिलाध्यक्ष द्वारा मुख्य विकास अधिकारी सहित जिला प्रशासन से मांग किया जा रहा था कि दोषी के ऊपर कारवाई किया जाए। धरना स्थल पर रेंजर नम्रता सिंह द्वारा पहुंच करके एफआईआर की कॉपी दिया गया और सत्याग्रह कर रहे पदाधिकारियों को आश्वस्त किया गया कि 23 पेड़ काटे गए हैं उससे अधिक 46 पेड़ ट्री गार्ड सहित विकास भवन में 15 अगस्त तक लगाया जाएगा। वार्ता के दौरान दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा कहा गया कि किसी भी अधिकारी के खिलाफ व्यक्तिगत आंदोलन नहीं होता है। उनकी नीतियों का विरोध किया

जाता है। सत्याग्रह में आए सभी सम्मानित अधिकारी और कर्मचारी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सत्याग्रह को स्थगित किया गया सत्याग्रह में ओंकार नाथ पांडे, आलोक राय, विजय सिंह, शम्मी, अभय सिंह, नागेश सिंह, धर्मेंद्र सिंह, मांधाता, मनोज सिंह, मनोज यादव, प्रशांत कुमार, अमित कुमार, रवि सिंह, अजमत, कुंदन सिन्हा, हरिशंकर, राजेश कुमार, रोशन लाल, जयप्रकाश, रफीउल्लाह, हनुमान, राम अवतार, गोविंद, गोपाल खरवार, आशुतोष सहित कई लोग मौजूद रहे।

जन सुनवाई हेतु ग्राम चौपाल का आयोजन 04 अगस्त को

प्रखर मिजार्पुर। आयुक्त ग्राम्य विकास ने ग्राम चौपाल का आयोजन किये जाने का निर्देश दिया गया। उक्त के तहत दिनांक 04 अगस्त 2023 को विधानसभा मझवा के विकास खण्ड पहाड़ी में ग्राम पंचायत अकसौली, रामनगर सिकरी, विकास खण्ड मझवा में रामापुर, लरवक, विधानसभा मझवा विकास खण्ड सिटी के ग्राम पंचायत लेड़ू, मसारी, विधानसभा नगर के विकास खण्ड कोन में गहिया, करेरूआ, विधानसभा छानबे विकास खण्ड छानबे के ग्राम पंचायत गोड़सर पाण्डेय, गैपुरा, विधानसभा छानबे विकास खण्ड लालगंज में लालगंज कटाई, नरैना, विकास खण्ड हलिया में तेन्दुई, खुटहा, विधानसभा मड़िहान विकास खण्ड पटेहरा कला में गढ़वा, बसही, विधानसभा मड़िहान विकास खण्ड राजगढ़ में रामपुर-38, चैखड़ा, विधानसभा चुनार विकास खण्ड नरायनपुर में जलालपुर माफी, बरेवां, विकास खण्ड जमालपुर में कुंडा डीह, मिजार्पुर खुर्द, विकास सीखड़ में कुशहा एवं मंगहरा में चैपाल का आयोजन किया जायेगा।

एक शाम मोहम्मद रफी व मुंशी प्रेमचंद के नाम पर मुशायरा व कवि सम्मेलन हुआ आयोजित

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। यूसुफपुर-मोहम्मदाबाद (गाजीपुर) नगर की प्रतिष्ठित समाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था खाक फाउंडेशन के तत्वाधान में नगर यूसुफपुर मुहम्मदाबाद के मुहल्ला जमालपुर स्थित नौशाद अंसारी के आवास पर महान गायक मोहम्मद रफी साहब की 42वीं पुण्यतिथि एवं मुंशी प्रेमचंद जी के जन्मदिवस के अवसर पर सोमवार को गायन एवम मुशायरे का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें नगर के वरिष्ठ शायरों कवियों और गायकों ने सुर सम्राट मोहम्मद रफी एवं साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचंद को अपनी शायरी, कविताओं, गीतों एवं कहानियों के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का शुभारंभ मोहम्मद रफी के प्रसिद्ध हम्द ओ मेरे खुदा ओ मेरे खुदा से हुआ। तत्पश्चात फैयाज अंसारी ने रफी साहब की प्रसिद्ध नातपाक 'बसी है दिल में नबी की याद' प्रस्तुत की। इरशाद जनाब खलीली ने रफी साहब की मशहूर कव्वाली 'ये तो अल्लाह को खबर' गाकर माहौल को रफीमय कर दिया। प्रसिद्ध भोजपुरी गायक आरजू अंचल ने 'ना फनकार तुझसा तेरे बाद आया' सुनाकर रफी साहब को याद किया। इस अवसर पर आयोजित मुशायरा एवं कवि सम्मेलन में आसी यूसुफपुरी ने 'यूँ तो हजार होंगे गुलूकार

बेमिसाल /आएगा नाम कोई भी नामे रफी के बाद। चंचल यूसुफपुरी ने वक़्त ऐसा गुजर भी सकता है मारने वाला मर भी सकता है। वकील अरकम ने तेरी आवाज में है वो जादू रफी तेरे जैसा जहाँ में हुआ ही नहीं। सुमन यूसुफपुरी, सरवर मोहम्मदाबादी, उगहन बावरा, अहकम गाजीपुरी ने भी अपनी अपनी रचनाओं से रफी साहब को खिराजे अकीदत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिलानी भाई ने मोहम्मद रफी को भारतीय एकता का प्रतीक बताते हुए कहा कि संत प्रवृत्ति के रफी साहब जितने बड़े गायक थे उससे बड़े इन्सान थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एम0डी0 भाई ने बताया कि रफी साहब ने ताउम्र खुले दिल से गरीबों नादारों की मदद की। डॉ सैयद जफर असलम ने एक कहानी प्रस्तुत करके प्रेमचंद को श्रद्धांजलि दी इस अवसर पर उपस्थित सम्मानित श्रोताओं में गुरु प्रजापति, इजहार अंसारी, आलमगीर अंसारी, अनीस अंसारी, माज अकरम मोईन, शमशाद, सुजीत सूरज, राजू प्रजापति, कालिका प्रजापति, इसराइल, इसरार, गुड्डू, अख़्तर, परवेज, जाहिद, आदिल, बबलू, यूसुफ यावर फैसल इत्यादि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन इरशाद जनाब खलीली ने किया। अंत में सभासद कैफ अंसारी ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित दिया।

मन की बात करने वाली सरकार जनता की मन की बात कब सुनेगी

प्रखर मिजार्पुर। मिजार्पुर जनपद के चील्ह थाना क्षेत्र के दलापट्टी गांव के निवासी संदीप शर्मा जो कि प्लम्बर का कार्य करके अपना तथा अपने परिवार का भरण पोषण कर रहे थे एक यादव परिवार में प्लम्बरिंग का काम करते हुए संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो जाती है। परिजनों ने आरोप लगाया कि यादव परिवार के लोगों ने संदीप की हत्या की है।यह घटना 18-7-2023 की है 12 दिन बीत जाने के बाद भी जब जिला प्रशासन द्वारा मामले का सफल अनावरण नहीं किए जाने पर मिजार्पुर तथा आसपास के जनपदों जौनपुर, इलाहाबाद, भदोही, अमेठी से सैकड़ों की संख्या में नाई समाज के लोगों ने मिजार्पुर स्थित कलेक्ट्रेट परिसर में एक विशाल धरना प्रदर्शन किया तथा संबंधित अधिकारियों से वार्ता कर पीड़ित परिवार की पीड़ा से उच्च अधिकारियों को अवगत कराया. धरना प्रदर्शन स्थल पर पहुंचे पत्रकार एकता संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश

कुमार शर्मा, वाराणसी मंडल अध्यक्ष राजेश कुमार गौतम, वाराणसी मंडल मीडिया प्रभारी राकेश शर्मा, वाराणसी मंडल संगठन मंत्री प्रकाश शर्मा ने तथा कुछ अन्य लोगों ने नगर मजिस्ट्रेट तथा सीओ सिटी से मुलाकात कर पीड़ित परिवार की पीड़ा से अवगत कराया अधिकारियों द्वारा यह आश्वासन दिया गया कि मृतक की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मृत्यु का कारण स्पष्ट नहीं होने के कारण आरोपी बनाए गए लोगों के विरुद्ध कोई विधिक कार्यवाही नहीं हो पा रही है इसलिए सुरक्षित रखे गए विसरा की जांच के आधार पर ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास होगा धरना स्थल पर उपस्थित अनेक वक्ताओं ने संदीप शर्मा के संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत का सफल अनावरण करने तथा दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए मुकदमा पंजीकृत करने के संबंध में अपना अपना विचार व्यक्त किया. प्रशासन द्वारा आश्वासन दिए जाने पर इस घटना में यदि किसी की संलिप्तता पाई जाती है तो उसके विरुद्ध अवश्य कार्यवाही की जाएगी प्रशासन के इस आश्वासन पर धरनारत लोगों ने अपना धरना प्रदर्शन समाप्त किया इस धरना प्रदर्शन में अमेठी जनपद से घनश्याम शर्मा अध्यक्ष एमडब्ल्यूओ, शिवदयाल शर्माउपाध्यक्ष, दिनेश शर्मा,लछन धारी शर्मा पूर्व प्रधान, मनोज कुमार शर्मा,प्रकाश शर्मा,सुरेश शर्मा, संजय शर्मा,राकेश शर्मा, सुरेश सेन,सागर शर्मा, संजय शर्मा सिंगर, के अतिरिक्त सैकड़ों की संख्या में स्वजातीय समाज के लोगों ने धरना स्थल पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराया और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए आक्रोश व्यक्त किया कि यदि संदीप शर्मा के हत्या या मृत्यु का सफल अनावरण कर दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही नहीं की जाती है तथा पीड़ित पक्ष को राज्य सरकार की तरफ से उचित आर्थिक मदद नहीं की जाती है तो अगले चरण में इससे भी तीव्र आंदोलन किया जाएगा।

काशी में संगीत वादन की प्रतिष्ठित परंपरा शहनाई की तीन दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। वाराणसी की शाह-ए-नय अर्थात प्रसिद्ध शहनाई एवं संगीत की विलुप्त होती परम्परा को पुनर्जीवित करने के हेतु सिडबी एवं स्पीक मैके के संयुक्त तत्वाधान में संत अतुलांनद कॉन्वेंट स्कूल कोइराजपुर में शहनाई की तीन दिवसीय कार्यशाला का एक अगस्त 2023 को शुभारंभ हुआ` आज की इस कार्यशाला में बनारस घराने के प्रसिद्ध शहनाई वादक पंडित

संजीव शंकर जी ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई` आज कार्यशाला के प्रथम दिन मंगल ध्वनि प्रसारक शहनाई वादन की प्रारंभिक बारीकियों एवं इतिहास से अवगत कराते हुए गुरू पंडित संजीव शंकर जी ने शहनाई के छिद्रों पर अंगुली रखने की कला एवं रीड फूँकने की बुनियादी बातें सिखायी एवं उन्हे शहनाई वादन के अनेक गुर समझाए संस्था की प्रधानाचार्या डॉ. नीलम सिंह ने बताया कि यह कार्यशाला आगामी दो दिनों तक चलेगी जिसमें विद्यार्थी इस अनमोल सांस्कृतिक सुषिर वाद्य की विधा से न केवल जुड़ेगे अपितु इसे अपनी परम्परा का अंग मानकर आगामी पीढ़ी तक आगे ले जाने का कार्य भी करेंगे` संस्था की निदेशिका डॉ. वन्दना सिंह ने कहा कि संगीत साहित्य एवं अनुशासन की परंपरा संगीत की विभिन्न विधाओं में साक्षात अनुभव की जा सकती है हमें गर्व है कि हमारे विद्यार्थी इन मूल्यों को अपने भीतर आत्मसात कर रहें है।

प्रखर पूर्वांचल
RNIUPHIN/2016/68754
मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित
सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001
सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802
सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।
ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com
सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वाचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं